

प्राचीन-गुर्जर-काव्यसंग्रहः



PRĀCHĪNA

GURJARA-KĀVYASANGRAHA

---

PART I

---

EDITED

BY

THE LATE MR. C. D. DALAL, M. A.,

SANSKRIT LIBRARIAN, CENTRAL LIBRARY,

BARODA.

PUBLISHED UNDER THE AUTHORITY OF THE GOVERNMENT OF  
HIS HIGHNESS THE MAHARAJA GAEKWAD OF BARODA.

---

CENTRAL LIBRARY  
BARODA.

1920.

Published by Janardan Saktharam Kudalkar, M. A . LL. B , Curator of State Libraries,  
Baroda, for the Baroda Government, and Printed by Manilal Itcharam Desai, at  
**The Gujarati Printing Press, No. 8, Sassoon Buildings,  
Circle, Fort, Bombay.**

*Price Rs 2-4-0*

## FOREWORD.

Owing to the untimely death of Mr C D Dalal, M.A , the editor, this work is published for the present without its Introduction and Notes. We are also aware that owing to the great pressure of other work that Mr Dalal had on his hands at the time he was editing this work, he could not correct the several mistakes that have crept in the text.

Scholars of old Gujarati are only a few in number and those few are not free or prepared to undertake to complete this work just at present. Hence this First Part of the work containing only the Text is sent out to the public with a promise that it will be followed soon with a Second Part which will contain a critical Introduction and Notes written by the veteran old Gujarati scholar Mr Keshav Harshad Dhruva, B A , of Ahmedabad.

10-4-20

J S KUDALKAR  
Curator of State Libraries.

# प्राचीनगुर्जरकाव्यसंग्रहः



## अनुक्रमणिका.

### पद्यसंग्रहः

|                      | Page. |
|----------------------|-------|
| देवतगिरिराज          | 1     |
| मेमिनाथचतुष्पदिका    | 8     |
| खण्डमालकहाण्यचतुष्पद | 11    |
| समसाराज              | 27    |
| सिद्धिभरकाण्ड        | 38    |
| ✓ जङ्गलादिचरित       | 41    |
| सप्तशेरिराज          | 47    |
| कल्लोरास             | 59    |
| साविभरकाण्ड          | 62    |
| दहामातृका            | 67    |
| चर्चरिका             | 71    |
| मातृकाचतुष्पद        | 74    |
| सम्पत्स्वमाईचतुष्पद  | 78    |
| श्रीनेमिनाथकाण्ड     | 83    |

### गद्यसंग्रहः

|                       |     |
|-----------------------|-----|
| आराधना                | 86  |
| अतिचार                | 87  |
| सर्वार्थिनमत्कारलक्षण | 88  |
| नवकारभ्याख्यानम्      | 89  |
| अतिचार                | 91  |
| पृथ्वीचन्द्रचरित      | 93  |
| विरतरपदावलीपदपदानि    | 131 |

## APPENDICES.

|      |   |     |     |     | Page. |
|------|---|-----|-----|-----|-------|
| I    | श्रीवल्लुपाळतीर्थपात्रावर्णनम्  | ... | ... | ... | 1     |
| II   | देववक्त्रसंक्षेपो   | ... | ... | ... | 8     |
| III  | उल्लसन्तस्तव  | ... | ... | ... | 10    |
| IV   | उल्लसन्तमहातीर्थेक्षणम्   | ... | ... | ... | 12    |
| V    | देवतचल्प  | ... | ... | ... | 15    |
| VI   | अम्बिकादेवीचल्प   | ... | ... | ... | 17    |
| VII  | श्रीगिरिवाचस्पत्य   | ... | ... | ... | 19    |
| VIII | Inscription of the Reign of Alapkhan in the temple of Sthambhana Pārśvanatha at Cambay        | ... | ... | ... | 22    |
| IX   | Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samarā's installation of the image of Ādiśvara | ... | ... | ... | 23    |
| X    | पेथडरात   | ... | ... | ... | 24    |



# प्राचीनगूर्जरकाव्यसङ्ग्रहः

प्रथमो भागः



## रेवंतगिरिरासु



परमेसरतित्येसरह पयपंकय पणमेवि ।  
भणिस्तु रासु रेवंतगिरे अंविक्कदिवि सुमरेवि ॥ १ ॥  
गामागरपुरवणगहणसरिसरवरि सुपणसु ।  
देवभूमि दिसि पच्छिमह मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥  
जिणु तहिं मंडलमंडणउ मरगयमउडमहंतु ।  
निम्मलसामलसिहरभरे रेहइ गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥  
तसु सिरि सामिउ सामलउ सोहगसुंदरसारु ।  
जाइवनिम्मलकुलतिलउ निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥  
तसु सुहदंसणु दसदिसि वि देसदेसंतरु संघ ।  
आवइ भावरसालमणउ हलि रंगतरंग ॥ ५ ॥  
पोरुयाडकुलमंडणउ नंदणु आसाराय ।  
वस्तुपाल धरमंति तहिं तेजपालु डुइ भाय ॥ ६ ॥  
गुरजरधरधुरि धवलकि वीरधवलदेवराजि।।.  
विहु वंधवि अवयारियउ सूसू दूसममाझि ॥ ७ ॥  
नायलगच्छह मंडणउ विजयसेणहूरिराउ ।  
उवएसिहि विहु नरपवरे धम्मि धरिउ दिहु भाउ ॥ ८ ॥  
तेजपालि गिरनारतले तेजलपुरु नियनामि ।  
कारिउ गढमढपवपवरु मणहरु धरि आरामि ॥ ९ ॥

तहि पुरि सोहिउ पासजिणु आसारायविहार ।  
 निम्मिउ नामिहि निजजणणि कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥  
 तहि नयरह पूरवदिसिहि उग्रसेणगढडुगु ।  
 आदिजिणेसरपमुहजिणमंदिरि भरिउ समगु ॥ ११ ॥  
 बाहिरिगढ दाहिणदिसिहि चउरियवेहिविसालु ।  
 लाडुकलहहियओरडीय तडि पसुठाइकरालु ॥ १२ ॥  
 तहि नयरह उत्तरदिसिहि सालथंभसंभार ।  
 मंडण महिमंडल सयल मंडप दसह उत्सार ॥ १३ ॥  
 जोइउ जोइउ भवियण पेमि गिरिहि दुयारि ।  
 दामोदरु हरि पंचमउ सुवन्नरेहनइपारि ॥ १४ ॥  
 अगुण अंजण अंविलीय अंवाडय अंकुलु ।  
 उंवरु अंवरु आमलीय अगरु असोय अहल्लु ॥ १५ ॥  
 करवर करपट करुणतर करवंदी करवीर ।  
 कुडा कडाह कयंव कड करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥  
 वेपल्लु वंजल्लु वडल वडो वेडस वरण विडंग ।  
 वासंतो वीरिणि विरह वंसियालि वण वंग ॥ १७ ॥  
 सोंसमि सिंयलि सिरसमि सिंधुवारि सिरखंड ।  
 सरल सार साहार सप सागु सिगु सिणदंड ॥ १८ ॥  
 पल्लवफुल्लफुल्लसिय रेहइ ताहि वणराइ ।  
 तहि उज्जिलतलि धम्मियह उल्लडु अंगि न माइ ॥ १९ ॥  
 बोलावो संघहतणीय कालमेघंतरपंधि ।  
 मेलहविय तहि दिढ घणीय वस्तपाल वरमंति ॥ २० ॥

(अथमं कव्यम्)

दुविहि गुज्जरदेसे रिउरायविहंडणु ।  
 कुमरपालु भूपालु जिणसासणमंडणु ।  
 तेण संठाविओ सुरठदंडाहिवो ।  
 अंवरुओ सिरे सिरिमालकुलसंभवो ।  
 पाज सुविसाल तिणि नठिय ।  
 अंतरे धवल पुणु परव भराविय ॥ १ ॥

धनु सु धवलह भाउ जिणि पाग प्यासिय ।  
 बारविसोत्तरवरसे जसु जसि दिसि वासिय ।  
 जिम जिम चडई तडि कडणि गिरनारह ।  
 तिम तिम ऊडई जण भवणसंसारह ।  
 जिम जिम सेउजलु अगिग पालाट ए ।  
 तिम तिम कलिमलु सयलु ओहट्ट प ॥ २ ॥  
 जिम जिम घायइ वाउ तहि निज्झरसीपलु ।  
 तिम तिम भवदुहदाहो तत्तणि तुट्टइ ।  
 निबलु कोइलकलयलो मोरकेकारवो ।  
 सुंमए महुयरमहुयुंजारवो ।  
 पाज चडंतह सावयालोपणी ।  
 लापारामु दिसि दीसए दाहिणी ॥ ३ ॥  
 जलदजालववाले नीझरणि रमाउलु ।  
 रेहइ उज्जिलसिहक अलिकज्जलसामलु ।  
 वहलवुहुधातुरसमेउणी ।  
 जत्थ उलदलइ सोवन्नमइ मेउणी ।  
 जत्थ दिप्पंति दिवो सही सुंदरा ।  
 गुहिर वर गरुय गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥  
 जाइ कुंदु विहसंतो जं कुसुमिहि संकुलु ।  
 दीसइ दस दिसि दिवसो किरि तारामंडलु ।  
 मिलियनवलवलदलकुसुमझलहालिया ।  
 ललिपसुरमहिवलयचलणतलतालिया ।  
 मल्लिपधलकमलमपरदजलकोमल ।  
 विउल सिलवट्ट सोहंति तहिं संमला ॥ ५ ॥  
 मणहरघणवणगहणे रसिरहसिय किनरा ।--  
 गेउ मुहुरु गायंतो सिरिनेमिजिणेसरा ।  
 जत्थ सिरिनेमिजिणु अच्छप अच्छरा ।  
 असुरसुरउरगकिनरपचिज्जाहरा ।  
 मउडमणिफिरणपिंजरियगिरिसेहरा ।  
 हरसि आवंति बहुभत्तिभरनिज्जरा ॥ ६ ॥





सामियनेमिकुमारपयपंकयलंबिउ ।  
 धरधूल वि जिण घन्न मन पूरइ वंछिउ ।  
 जो भव कोडाकोडि ..... ।  
 अञ्चु सोवञ्चु घणु दाणु जउ दिज्जए ।  
 सेयउ जडकम्मघणगंठि जउ तिज्जए ।  
 तउ उज्जितसिहरु पाविज्जए ॥ ७ ॥  
 जम्मणु जोव जीविय तसु तहिं कयत्थु ।  
 जे नर उज्जितसिहरु पेक्कइ घरतित्थु ।  
 आसि गुरजरधरय जेण अमरेसरु ।  
 सिरिजयसिंघदेउ पवरु पुहवीसरु ।  
 हणवि सोरठु तिणि राउ पंगारउ ।  
 ठविउ साजणु दंडाहिं सारउ ॥ ८ ॥  
 अहिणयु नेमिजिणिंद तिणि भवणु कराविउ ।  
 निम्मलु चंदरु बिंवे नियनाउं लिहाविउ ।  
 थोरबिक्कंभवायंभरमाउलं ।  
 ललियपुत्तलियकलसकुलसंकुलं ।  
 मंडपु दंडयणु तुंगतरतोरणं ।  
 धवलिय वज्जिरुग्गझणिरिक्किंकाणिघणं ।  
 इफारसयसहीउ पंचासीय वच्छरि ।  
 नेमिभुयणु उडरिउ साजणि नरसेहरि ॥ ९ ॥  
 मालयमंडलगुहमुहमंडणु ।  
 भायडसाहु दालिधुग्गंडणु ।  
 आमलसारसोयञ्चु तिणि कारिउ ।  
 किरि गयणंगण सुरु अवयारिउ ।  
 अवरसिहरवरकलस झलहलइ मणोहर ।  
 नेमिभुयणि तिणि दिट्ठट्ठ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥  
 ( द्वितीयं वडवम् )

दिसि उत्तर कम्मभीरदेसु नेमिट्ठि उम्माहिंय ।  
 अजिउ रतन दुह थंघ गगय संचाहिंय आविध ॥ १ ॥

हरसवसिण घणकलस भरिवि ति न्हवणु करंतह ।  
 गलिउ लेवमु नेमिबिंबु जलधार पडंतह ॥ २ ॥  
 संघाहिवु संघेण सहिउ नियमणि संतविउ ।  
 हा हा धिणु धिणु मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥  
 सामियसामलघोरचरण मह सरणि भवंतरि ।  
 इम परिहरि आहार नियमु लइउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥  
 एकवीसि उपवासि तामु अंबिकदिवि आविय ।  
 पभणइ स पसन्न देवि जय जय सदाविय ॥ ५ ॥  
 उट्टेविणु सिरिनेमिबिंबु तुलिउ तुरंतउ ।  
 पच्छलु मन जोएसि वच्छ तुं भवणि वलंतउ ॥ ६ ॥  
 णइ वि अंबि"कंचण"वलाणइ ।  
 "विंबु मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥  
 पढमभवणि देहलिहि देउ छुडि पुडि आरोविउ ।  
 संघाहिवि हरिसेण तम दिसि पच्छलु जोइउ ॥ ८ ॥  
 ठिउ निचलु देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो ।  
 कुसुमबुट्टि मिल्हेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥  
 वइसाहीपुंनिमह पुंनवतिण जिणु धप्पिउ ।  
 पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतरु कप्पिउ ॥ १० ॥  
 न्हवणविलेवतणीय वंछ भविणजण पूरिय ।  
 संघाहिवि सिरिअजितुरतनु नियदेसि पराइय ॥ ११ ॥  
 सयलवित्ति कलिकालि कालकलुसे जाणवि छाहिउ ।  
 झलहलंति मणिबिंबकंति अंबिकुरुं आइय ॥ १२ ॥  
 समुद्विजयसिवदेविपुत्तु जायवकुलमंडणु ।  
 जरासिंधदलमलणु मयणभडमाणविहंडणु ॥ १३ ॥  
 राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु ।  
 पुनवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगुसुंदरु ॥ १४ ॥  
 घस्तपालि वरमंति भूयणु कारिउ रिसहेसरु ।  
 अट्टावयसंमेयसिहरवरमंडपुमणहरु ॥ १५ ॥  
 कउडिजकु मग्गेवि दुह वि तुंगु पासाइउ ।  
 धम्मिय सिरु धूणंति देव वलिवि पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु ।  
 कल्याणउ तउ तुंगु सुयणु लंघिउगयणंगणु ॥ १७ ॥  
 दोसइ दिसि दिसि कुंडि कुंडि नोझरणउमालो ।  
 इंद्रमंडपु देपालि मंत्रि उद्धरिउ विसालो ॥ १८ ॥  
 अइरावणगयरायपायमुद्दासमठंकिउ ।  
 दिहु गयंदमु कुंड विमलुनिज्झरसमलंकिउ ॥ १९ ॥  
 गयणंगं जं सयलतिथअवयाक भणिज्झइ ।  
 पक्कालिवि तहि अंगु दुक्क जलअंजलि दिज्झइ ॥ २० ॥  
 सिंदुवारमंदारकुरवककुंदिहि सुंदर ।  
 जाइजूइसयवसिविद्धिफलेहि निरंतर ॥ २१ ॥  
 दिहु य छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसारामु ।  
 नेमिजिणेसरदिक्कनाणनिच्चाणइ ठामु ॥ २२ ॥

(तृतीयं कव्यम्)

गिरिगरुयासिहरि चहेवि अंबजंवाहिं वंबालिउं ए ।  
 संमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीठु रम्माउलं ए ॥ १ ॥  
 वज्जइ ए तालकंसाल वज्जइ मदल गुहिरसर ।  
 रंगिहिं नचइ वाल पेखिवि अंबिकमुहकमलु ॥ २ ॥  
 सुभकर ए ठविउ उच्छंगि यिभकरो नंदणु पासिक ए ।  
 सोहइ ए ऊजिलसिंगि सामिणि सोहसिंघासणी ए ॥ ३ ॥  
 दावइ ए दुक्कहं भंगु पूरइ ए वंछिउ भविजण ।  
 रक्कइ ए चउविहु संघु सामिणि सोहसिंघासणी ए ॥ ४ ॥  
 दस दिसि ए नेमिकुमारि आरोही अवलोइउं ए ।  
 दीजई ए तहि गिरनारि गयणंगणु अयलोणसिहरो ॥ ५ ॥  
 पहिलइ ए सांवकुमारु बीजइ सिहरि पज्जून पुण ।  
 पणमइं ए पामइं पारु भविजण भीसण भवभमण ॥ ६ ॥  
 ठामि ठामि रयणसोवन्न विव जिणेसर तहिं ठविय ।  
 पणमइ ए ते नर धन जे न कलिकालि मलमयलिया ए ॥ ७ ॥  
 जं फलु ए सिहरसमेयअट्टावयनंदीसरिहिं ।  
 तं फलु ए भवि पामेइ पेखेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥

गहगण ए माहि जिम भाणु पञ्चयमाहि जिम मेरुगिरि ।  
 त्रिहु भुयणे तेम पहाणु तित्थमाहि रेवंतगिरि ॥ ९ ॥  
 धवलधय चमर भिंगार आरत्ति मंगलपईव ।  
 तिलय मउड कुंडल हार मेघाडंबर जावियं ए ॥ १० ॥  
 दियहिं नर जो पवर चंद्रोय नेमिजिणेसरवरभुयणि ।  
 इह भवि ए भुंजवि भोय सो तित्थेसरसिरि लहइ ए ॥ ११ ॥  
 चउविहु ए संघु करेइ जो आयइ उज्जितगिरे ।  
 दिविस बहू रागु करेइ सो मुंचइ चउगइगमणि ॥ १२ ॥  
 अठयिह ए ज्ञय करंति अठाई जो तहिं करइ ए ।  
 अठविह ए करम हणंति सो अठभवि सिज्झइ ए ॥ १३ ॥  
 अंबिल ए जो उपवास एगासण नीयी करइ ए ।  
 तसु मणि ए अछई आस इहभव परभव विवहपरे ॥ १४ ॥  
 पेमिहि मुणिजण अन्नह दाणु धम्मियवच्छलु करइ ए ।  
 तसु कही नहीं उपमाणु परभाति सरण तिणउ ॥ १५ ॥  
 आवइ ए जे न उज्जिति घर धरइ धंधोलिया ए ।  
 आविही ए हीयह न जंति निष्फलु जीविउ सासुतणउं ॥ १६ ॥  
 जीविउ ए सो जि परि धनु तासु संमच्छर निच्छणु ए ।  
 सो परि ए भासु परि धनु बलि हीजइ नहि यासर ए ॥ १७ ॥  
 जहिं जिणु ए उज्जिलठामि सोहगसुंदरु सामलु ए ।  
 दीसइ ए तिहणसामि नयणसंलूणउं नेमिजिणु ॥ १८ ॥  
 नीझरण चमर ढलंति मेघाडंबर सिरि धरीहं ।  
 तित्थह एसउ रेवंदि सिंहासणि जयइ नेमिजिणु ॥ १९ ॥  
 रंगिहि ए रमइ जो रासु सिरिविजयसेणिस्सरि निम्मविउ ए ।  
 नेमिजिणु तूसइ तासु अंकि पूरइ मणि रली ए ॥ २० ॥

( चतुर्थ कडवम् )

॥ समस्तु रेवंतगिरिरासु ॥

## नेमिनाथचतुष्पदिका

(सोहगसुंदर घणलापनु सुमरवि सामिउ सामलवनु ।  
 सखि पति राजल चडि उत्तरिय वारमास सुणि जिम वज्जरिय ॥ १ ॥  
 नेमिकुमरु सुमरवि गिरनारि सिद्धी राजल कन्नकुमारि ॥ आंकिणी ॥  
 श्रायणि सरवणि कहुयं मेहु गज्जइ विरहिरि झिज्जइ देहु ।  
 विज्जु झवकाइ रक्खसि जेव नेमिहि विणु सहि सहियइ केम ॥ २ ॥  
 सखी भणइ सामिणि मन झूरि दुज्जणतणा म वंछित पूरि ।  
 गयउ नेमि तउ विणठउ काइ अछइ अनेरा वरह सयाइ ॥ ३ ॥  
 बोलइ राजल तउ इहु वयणु नत्थी नेमिसमं वररयणु ।  
 धरइ तेजु गहगण सवि ताव गयणि न उग्गइ दिणयरु जाव ॥ ४ ॥  
 भाद्रवि भरिया सर पिक्खेवि सकरुण रोअइ राजलदेवि ।  
 हा एकलडी भइ निरधार किम ऊवेपिसि करुणासार ॥ ५ ॥  
 भणइ सखी राजल मन रोइ नीठुरु नेमि न अप्पणु होइ ।  
 सिंचिय तरुवर परि पलवंति गिरिवर पुण कड डेरा हुंति ॥ ६ ॥  
 साचउं सखि वरि गिरि भिज्जंति किमइ न भिज्जइ सामलकंति ।  
 घण वरिसंतइ सर फुटंति सायरु पुण घणुओह दुलित्ति ॥ ७ ॥  
 आसोमासह अंसुप्रवाह राजल मिल्हइ विणु नेमिनाह ।  
 दहइ चंदु चंदणहिमसीउ विणु भत्तारह सउ वि वरीउ ॥ ८ ॥  
 सखि नवि खीना नेमिहिरेसि मन आपणपउं तउं खय नेसि ।  
 जिणि दिक्काडिउ पहिलउं छेहु न गणिउ अट्टभवंतरनेहु ॥ ९ ॥  
 नेमि दयालु सखि निरदोसु कीजइ उग्रसिणऊपरि रोसु ।  
 पसुयभराविउ भूकउ वाहु मुञ्जु प्रियसरिसउ कियउ विहाडु ॥ १० ॥  
 फसिग क्षित्तिग उग्गइ संक्ष रजमति झिझिउ हुइ अतिझंझ ।  
 राति दिवसु अछइ विलवंत बलि बलि दय करि दयकरि कंन ॥ ११ ॥  
 नेमितणी सखि भूकि न आस कायरु भग्गउ सो घरवास ।  
 इमइ इमी सनेहल नारि जाइ कोइ छंटवि गिरनारि ॥ १२ ॥  
 कायरु किम मखि नेमिजिणंदु जिणि रिणि जित्तउ ललु नरिंदु ।  
 फुरइ सासु जा अग्गलि नास ताव न मिल्हउं नेमिहि आस ॥ १३ ॥

मगसिरि मगु पलोअइ वाल इणपरि पभणइ नयणविसाल ।  
 जो मह मेलइ नेमिकुमार तसुणी वेल बहउ सचिवार ॥ १४ ॥  
 एहु कदाग्रहु तउ सखि मिलिह करिसि काइ तिणि नेमिहि हिल्लि ।  
 मंडि चडाविउ जो किर मालि हे हे कु करइ टोहणकालि ॥ १५ ॥  
 अठभव सेविउ सखि मह नेमि तसु ऊमाहउ किम न करेमि ।  
 अवगन्नेसइ जइ मह सामि लग्गी अछिसु तोइ तसु नामि ॥ १६ ॥  
 पोसि रोस सखि छंडिवि नाह राखि राखि मह भयणह पाह ।  
 पडइ सोउ नवि रयणि बिहाइ लहिय छिइ मखि दुख अमाइ ॥ १७ ॥  
 नेमि नेमि तू करती मुडि जुव्यणु जाइ न जाणिसि सुडि ।  
 पुरिसरयणभरियउ संसारु परणि अनेरउ कुइ भत्तारु ॥ १८ ॥  
 भोली तउ सखि खरी गमारि वरि अच्छंतइ नेमिकुमारि ।  
 अन्नु पुरिसु कुइ अप्पणु नटइ गइवरु लहिय कु रासभि चडइ ॥ १९ ॥  
 माहमासि माचइ हिमरासि देवि भणइ मह प्रिय लड पासि ।  
 तइ विणु सामिय दहइ तुसारु नयनवमारिहि मारइ मारु ॥ २० ॥  
 इहु सखि रोइसि सहु अरन्नि हत्थि कि जामइ धरणउ कन्नि ।  
 तउ न पती जिसि माहरी माइ सिद्धिरमणिरत्ताउ नमि जाइ ॥ २१ ॥  
 कंति वसंतइ हियडामाहि थाति पटीजउं किमह लसाइ ।  
 सिद्धि जाइ तउ काइत धीह सरसी जाउ त उग्रसेणधीय ॥ २२ ॥  
 फागुण चागुणि पन्न पडंति राजलडुकि कि तरु रोयंति ।  
 गन्धि गलिवि हउं काइ न मूय भणइ बिहंगल धारणिधूय ॥ २३ ॥  
 अजिउ भणिउ करि सखि यिम्मासि अछइ भला वर नेमिहि पास ।  
 अनु सखि मोदक जउ नवि हुंति छुहिय सुहाली कि न र्छंति ॥ २४ ॥  
 भणइ पासि जइ बहिलउ होइ नेमिहि पासि तनलउ न कोइ ।  
 जइ सखि वरउं त सामल धीरु घणविणु पियइ कि चातकु नीर ॥ २५ ॥  
 चैत्रमासि यणसइ पंगुरइ वणि वणि कोयल टहका करइ ।  
 पंचवाण करि धनुष घरेवि वेद्यइ मांडी राजलदेवि ॥ २६ ॥  
 जुइ सखि मानउ मासु वसंतु इणि गिलिजइ जइ हुइ कंतु ।  
 रमियइ नय नय करि मिणगारु लिजइ जीवियजुव्यणमारु ॥ २७ ॥  
 सुणि सखि मानिउ मुष्टु परिणयणु नवि ऊपरि थिउ बंधवयणु ।  
 जइ पडियइ सुषइ नेमि जीविय जुव्यणु जलणि जलेमि ॥ २८ ॥

वइसाहह विहसिय धणराइ मयणमित्तु मलयानिलु वाइ ।  
 फुटि रि हियडा माझि वसंतु विलवइ राजल पिक्खिउ कंतु ॥ २९ ॥  
 सन्धी दुक्क धीसरिवा भणइ संभलि भमरउ किम ग्गण्डुणइ ।  
 दीस पंच थिरु जोन्वणु दोइ खाउ पियउ विलसउ सहु कोइ ॥ ३० ॥  
 रमणि पसंसइ राजल कन्न जीह कंतु वसि ते पर धन्न ।  
 जसु प्रिउ न करइ किमइ मुहाडि सा हउं इक्क ज भुंडनिलाडि ॥ ३१ ॥  
 जिह्व विरलु जिम नप्पइ सरु घणविओगि सुसियं नइपूरु ।  
 पिक्खिउ फुल्लिउ चंपइविह्लि राजल मूछी नेहगहिह्लि ॥ ३२ ॥  
 मूछी राणी हा सखि धाउं पडियउ खंडइ जेवइ घाउ ।  
 हरिय मूछ चंदणपवणेहिं सखि आसासइ प्रियवयणेहिं ॥ ३३ ॥  
 भणइ देवि विरती संसार पडिणि पडिखि मइ जादवसार ।  
 नियपडिवन्नउं प्रभु संभारि मइ लइ सरिसी गढि गिरिनारि ॥ ३४ ॥  
 आसाहह दिहु हियउं करेवि गज्जु विज्जु सवि अचगन्नेवि ।  
 भणइ वयणु उग्रसेणह जाय करिस्तु धम्मु सेविस्तु प्रियपाय ॥ ३५ ॥  
 मिलिउ सखी राजल पभणंति चिणय जेम नमिरिय ग्वज्जंति ।  
 अउगी अच्छि सखि झखि मन आल तपु दोहिल्लउ तउं सुकुमाल ॥ ३६ ॥  
 अठ भव विलसिउ प्रियह पसाइ किमइ जीवु सखि सुग्व न ध्राइ ।  
 हिव प्रिय सरिसउं जीविय मरण इण भवि परभवि निमि जु सरणु ॥ ३७ ॥  
 अधिकु मासु सवि मासहि फिरइ छहरितुकेरा गुण अणुहरइ ।  
 मिलिवा प्रिय ऊवाहुलि इय सउ मुकलाविउ उग्रसेणधूय ॥ ३८ ॥  
 पंच सखीसइ जसु परिवारि प्रिय ऊमाही गइ गिरिनारि ।  
 सखीसहित राजल गुणरासि लेइ दिक्क परमेसरपासि ॥ ३९ ॥  
 निम्मल केवलनाणु लहेवि सिन्धी सामिणि राजलदेवि ।  
 रयणसिहसुरि पणमवि पाय वारइ मास भणिया मइ भाय ॥ ४० ॥  
 नेमिकुमरु सुमरवि गिरिनारि सिन्धी राजल कन्नकुमारि ।



# उवएसमालकहाणयछप्पय

## छप्पयछंद

विजय नरिंद जिणिंदवीरहत्थिहिं वय लेविणु ।  
 धम्मदासगणि नामि गामि नयरिहिं विहरइ पुणु ।  
 नियपुत्तह रणसीहराय पडिवोहणसारिहिं ।  
 करइ एस उवएसमालजिणवयणवियारिहिं ।  
 सयपंचन्यालगाहारयणमणिकरंड महियलि मुणउ ।  
 सुहभावि सुद्ध सिद्धंतसम सवि सुसाहु सावय सुणउ ॥ १ ॥  
 रिसहनाह निरहार वरिस विहरिउ अपमत्तउ ।  
 वद्धमाण छम्मास करइ तप गुणहि निरुत्तउ ।  
 अवर वि जिणवर दिक्क लेवि तव तवइ सुनिम्मल ।  
 तिणि कारणि उपदेशमाल धुरि तप किय बहुफल ।  
 नियसत्तिसारि अणुसारि इणि तपआदर अह्निसि करउ ।  
 भो भविय भावि जम्मणमरणदुहसमुद दुत्तर तरउ ॥ २ ॥  
 सव्व साहु तुम्हि सुणउ गणउ जग अप्पसमाणउ ।  
 कोह कह वि परिहरउ धरउ समरस संपराणउ ।  
 तिहुयणगुरु सिरिवीर धीर पण धम्मधुरंधर ।  
 दासपेसदुव्वयण सहइ घणदुसह निरंतर ।  
 नरतिरियदेवउवसग्ग वहु जह जगगुरु जिणवर खमइ ।  
 तिम खमउ खंति अग्गलि करी जेम्म रिउदलवल नमइ ॥ ३ ॥  
 सव्व सुणइ जिणवयण नयणउल्हासिहिं गोयम ।  
 जाणइ जइ वि सुयत्थ तह वि उच्छइ पहु कहु किम ।  
 भइकचित्त पवित्त पढम गणहर सुयनाणी ।  
 न करइ गव्व अपुव्व करवि मनि मन्नइ वाणी ।  
 छंडीइ मान ज्ञानहतणउ विणउ अंगि इम आणीइ ।  
 गुरुभत्ति कह वि नवि मिल्हीइ ग्रंथकोडि जइ जाणीइ ॥ ४ ॥  
 दहिवाहणनिवधूय वीरजिणपढमपवत्तणि ।  
 चंदनवाल विसाल गुणिहिं गज्जइ गुहिरप्पणि ।



अह्निसि रायकुंयारिसहस सेवहं पय भत्तिहि ।  
 जाणइ नाणनिहाण माण पुण नाणइ चित्तिहि ।  
 दिणदिक्खि देक्खि आवतु डमक साधु सा ऊठि करी ।  
 अभिगमण नमण वंदण विणय सुणइ वयण आणंदभरी ॥ ५ ॥  
 वाणारसिनयरीनरिंद नामिहि संवाहण ।  
 पुर अंतेउर पवर अवर हय गय बहु साहण ।  
 कन्नासहस सुरूव अछइ पुण पुत्त न इक्खय ।  
 राय पत्त पंचत्त लच्छि लिवइ रिउ दुक्खय ।  
 नेमिस्सिवयणि राणीउयरि कुंयर जाणि पट्ठिहि चविउ ।  
 तिणि अंगवीरि अरि त्रासुवी रज्जबंध सह राहविउ ॥ ६ ॥  
 कियसिंजारउदार अंग आरीसइ पिक्खइ ।  
 पाणी पडी मुंद्री सयल तणु तिणिपरि दिक्खइ ।  
 अंतेउरआवासि पासि भववासि विरत्तउ ।  
 भरहेसर वरझाण नण केवल संपत्तउ ।  
 णउ चक्खवट्ठि विसयारसिहि रमइ रंगि जणु इम गणइ ।  
 तसु अप्पकज्ज अप्पिहि सरिउं किं परजणजाणावणइ ॥ ७ ॥  
 सेणिय करइ पसंस दुमुहदुच्चयणि निवारइ ।  
 रायरिसि कासग्गि रहिउ रणि अरिअण मारइ ।  
 सिरककज्ज सिरि हत्थ घट्ठि संजम संभालइ ।  
 मनिहिं घट्ट बहु पाप आप आपिहि पक्कालइ ।  
 गति कहइ वीर सत्तम नरय मगहराय अचरिज भयउ ।  
 तिणि समइ देव जय जय भणइं प्रसनचंद केवलि जयउ ॥ ८ ॥  
 भरहसरिसु बल झुज्झि बुज्झ संजम अणुसरयु ।  
 कृण वंदइ लहुभाय ठाय तिणि कासग्ग करयु ।  
 इह ऊपानं नाण माण धरि चच्छर रहियु ।  
 सहइ सुख बहु दुक्ख तह वि न हु केवल लहियु ।  
 नियवहिनिवंभिसुंदरिवयणि मयमयगल जव परिहरइ ।  
 रिसहेसरनंदणवाहुबलि सयल कज्ज तक्कणि सरइ ॥ ९ ॥  
 कहिय ईदि अतिरूप सुणिय सुर वंभणवेसिहिं ।  
 पुहवि पत्त मज्जणइ रूप पेक्खइं सुविसेसिहिं ।

कियसिणमार सणकुमार नरनाह निरंतरु ।

हक्कारइ अत्थाणि जाणि आवि देसंतरु ।

खणि देहि हाणि इम वयण सुणि रज्ज छंडि संजम ग्राहिउ ।

सयसत्त वरिस चारित्तघर सहइ रोग लब्धिहिं सहिउ ॥ १० ॥

करइ रज्ज कंपिल्लनगरि छख्खंडनरेसर ।

जाइसमरणि जाणि पुच्चभवबंधव मुणिवर ।

बोहइ बहु उवएस सहसि पुण तोइ न बुज्झइ ।

भोग भवंतरि बद्ध तिण विसयारस मुज्झइ ।

सो बंधदत्त बंधणि किउ अंध अधिक पातग करी ।

संपत्तउ सत्तउ सत्तमनरणि सु जि साधु पत्त सिद्धहं पुरी ॥ ११ ॥

सेणियकुलि कोणियनरिंदसुय निवइ उदाइय ।

पाडलिपुरि गुरुभत्त रत्त पोसहसामाइय ।

खत्तिपपुत्त जाणि तिणि देसह कट्टिउ ।

उज्जेणि पज्जोयराय ओलगइ अणिट्टिउ ।

इणि वयरि अवर अलहंत छल वरिस वार व्रत धारयुं ।

तिणि दुट्ठि तह वि अवसर लहवि निव उदाइ निसि मारयु ॥ १२ ॥

चंपापुरि सुंनार नारिसपपंचह सामी ।

सासिमत्त अहरत्ति गेह नवि छंडइ कामी ।

तिणि मारी इक नारि अवरनारिहिं सो मारीउ ।

पद्म भज्ज नररूपि विष्णुकुलि सो पुण नारीउ ।

सयपंच भज्ज जे चोर तस घरणि इकु सा नारि हूय ।

पहुवीरपासि पुच्छइ सु नर जा सा सा सा विष्णधूय ॥ १३ ॥

कोसंबी ससि खूर वीर वंदइ सविमाणय ।

मिग्गवइ महासत्ति जंत चंदण नवि जाणइ ।

निसि एकल्ली जाइ पाइ लग्गेवि ग्वभावइ ।

पडिवज्झइ नियदोस रोस मिल्हइ मिल्हावइ ।

सुहभावि शुद्ध केवल भयु भुजग विनाणिहिं जाणियउ ।

जिम पवत्तणी स भवपार गय विनय अंगि तिम आणियउ ॥ १४ ॥

जंबूकुमार विलासभवणि पडिबोहइ भज्झइ ।

प्रभव पंचसयजुत्त पत्त तहिं परधणकज्झइ ।

कणपनचाणुंकोडि छोडि व्रत वंछइ सुहमणि ।

तं पिक्खवि तसु वयणि सयल पडिबुज्झइ तत्तणि ।

सगवीसअधिकसयपंचसिउं रायग्गिहि संजम लयउ ।

सो दूसमि पंचमगणहरह सोस चरिमकेवलि भयउ ॥ १५ ॥

सुंसुमरागिहिं रत्त पत्त रायग्गिहिनयरिहिं ।

दात्त चिलाइपुत्त जुत्त घणघरि बहुचोरिहिं ।

कुंयरि करीय करि नट्ट दुट्ट अडविहिं अणुसरिउ ।

वाहर पत्तउ पुट्टि सिट्ठि पुत्तिहिं परिवरिउ ।

सो रिक्खि दिक्खि त्रिहु अक्षरिहिं खगसीस छंडइ करम ।

कीडियहं कट्ठि अडइ दियसि सहरसारि दीसइ परम ॥ १६ ॥

जाययपुत्त जिणिंदसीस दंडण गुणजुग्गह ।

अंतराय जाणिइ लेइ नियलद्धि अभिग्गह ।

वारवई छम्मास भमइ गुणि रमइ समिद्धउ ।

भुक्क दुक्क बहु सहइ लहइ आहार न सुद्धउ ।

मोदफसीदकेसरसदिय कर्म कूटि केवल कलिउ ।

संपत्त सिद्धि संपत्ति सुह तपतक इम पुप्फिय फलिउ ॥ १७ ॥

हुंति जि पंडियपवर अवरदुव्वयणि न कुप्पइ ।

खंदगम्वरिसुसीस जेम आपार न लुप्पइ ।

२ पालयकयउवसग्ग लग्ग मण तीहं सज्झाणिहिं ।

जंघिहिं जीविय चत्ता पत्त सवि सिद्धह ठाणिहिं ।

सो अग्गिदट्ठ नरगिहिं गयउ वाडय भव भमिसिइ घणउ ।

भो भविय भावि इम कोह अरि ख्वंतिख्वग्गि हेलां हणउ ॥ १८ ॥

पुञ्जइ सुरयर पाय राय नितु नमइं निरम्मल ।

तपि सिज्झइं भवनिद्धि सिद्धि सवि सरइं समम्मल ।

तपट लेस हरिणसवलह जिम जगि जस होवइ ।

न कुल्लम न प्पसिद्धि रिद्धि नवि तसु कुड जोवइ ।

तिंदुषा जक्क पपत्तलि लुल्लइ बहुवंभण वोदिय यलिहिं ।

कोसलियपुयपरिणीनि जाय भजोय सुद्धि अच्छिपकूलिहिं ॥ १९ ॥

एसु माटुआचारसार जइ लोभि न दुल्लइ ।

घयरसामि संपत्त नयरि पाटल सम तुल्लइ ।

सुणवि तासु गुणवत्त रत्त धणसिद्धिकुमारी ।

कणयकोडिसंजुत्त पत्त सासई वरनारी ।

गुरुयणवयणपडिवोह सुणि सुद्धसीलसंजमि रहि ।

जिम तेणि मुक्क तिम मुक्कीड रमणि रयणकोडिहिं सही ॥ २० ॥

नंदिसेण दोहग्गनडिड निद्धणवंभणसुय ।

भयविरत्त चारित्त गहवि तव तवइ अचब्भुय ।

वेयावच्चपसंस इंदकियकसिहिं पट्टत्तउ ।

बंधिय अंति नियाण सग्गि सत्तमि सो पत्तउ ।

दसचउरसारनरखयरधूयसहसबहुत्तरिरमणिवर ।

सोहग्गसार वसुदेव ह्य हरिकुल वंसपयासकर ॥ २१ ॥

पत्त दिवसि चारित्त कन्हलहुबंधव रयणिहिं ।

गयसुक्कुमाल मसाणि रहिउ कासग्गि जिणवयणिहिं ।

वंभणि वंधवि पालि सीसि वइसानर दिद्धउ ।

सिरह सरिस दुक्कम्म दहवि मुणि तक्कणि सिद्धउ ।

तस दुद्धुरियभारभूरिय उयर फुट्ट नरय गामह ।

जिम सहिउं तेणि तिम संसहु लहु लच्छि सुपरक्कमह ॥ २२ ॥

धूलभइ गुरुवयणि कोसवेसाहरि पत्तउ ।

चित्तसालि चउमासि रहिउ रसविगहनिरत्तउ ।

पुण्ववेर संभारि समर समरंगणि जित्तउ ।

जिणसासणि जयवंत सुहड सुपरिहिं विदित्तउ ।

ग्वरग्वग्गधारसिरि संचरिउ सरिउ सीह जिम इक्कमन ।

जे सीलभाव दुद्धर धरइं ते सुसाहु ते धन्न धन ॥ २३ ॥

तवसी इक्क उपकोसगेहि गिउ गुरु अचमन्निय ।

धूलभइमुणिसरिसु करिसु तव डम मनि मन्निय ।

अत्थलाभ सुणि वयण रयणकंवल भणि चहइ ।

सहवि अवत्थ सुवत्थ आणि वेसाकरि मिल्हइ ।

चंपेवि ग्वालि पडिवोहिउ सुगुरुपामि पत्तउ भणइ ।

निंदीइ लोकि सो गुरुवयण अप्पमाण इह जो कुणइ ॥ २४ ॥

गुणिअणसरिसउं गव्व म करि भूरग्व मच्छरि धमि ।

न हु निव्वडइ समत्थ जइ वि गहइ गयमरकसि ।

सुहृदभणी संभृतविजय दुक्कर ति पसंसिय ।  
 तसु सीसिहिं पुण थूलभइमुणिवरगुण त्सिसिय ।  
 तिणि कम्मि कोसवेसिहिं नडिऊ चडिउ हत्थ दुज्जणतणइ ।  
 अपकित्ति अलिय अज्ज वि अजस महिमंडलमाहि स्थाक्षणइ ॥ २५ ॥  
 म करउ मच्छर माण जाण सरिसउ जगि कोइ ।  
 पूरउ पुण्य प्रभावि पावि पुण हीणउ होइ ।  
 बाहुसुबाहु सुसाहु सुणवि गुण किउ मनि मच्छर ।  
 तिणि हीणत्तण पत्त पीढमहपीढिहिं दुहकर ।  
 परजम्मि बंभिसुंदरि सुभूय महि महिला महियलि सुणउ ।  
 सिरिरिसहभरहवाहुवलिहिं त्रिहुं प्रभाव पुद्गहतणउ ॥ २६ ॥  
 अणगल नीर विपार सुहम जीवाइअरक्कण ।  
 इण कारणि बहुकट्ट अप्पफल कहइ वियक्कण ।  
 छट्ठिहिं सट्ठिसहस्स वरिस तप तपइ अज्झानिहिं ।  
 पारण पुण इक्खीसवारजलधोइयधानिहिं ।  
 सो तामलि रिसि एरिस तपी मास दुन्नि अणसणि सरिउ ।  
 ऊपाण इंद्र ईसाणि तिणि सुक्कमग्ग न हु अणुसरिउ ॥ २७ ॥  
 कंबलरयणविनाणि जाणि जग उत्तमचंगिम ।  
 नरवरपिक्कणि जाइ माइ पुत्तह पभणइ इम ।  
 आवि इक्क खण पुत्त पत्त सेणिय तुह मंदिर ।  
 लेउ क्रियाणउं माइ ठाइ ठावउ जिणि तिणि परि ।  
 न क्रयाणउं कुइ एउ सामि तुम्ह सालिभइ य वयण सुणि ।  
 भववासविरत्त चरित्त लिइ छंढि सुक्क सहु कणयमणि ॥ २८ ॥  
 अयवंतीसुकुमाल नयरि उज्जेणि पसिद्धउ ।  
 नलिणीगुलमविचार सुणवि तक्कणि पडिवुद्धउ ।  
 अल्लसुहत्थिमणिदहत्थि वय लेत्ति पत्ताणिहिं ।  
 कासगि रहिउ सीयालि खड्ड मण लग्गु विमाणिहिं ।  
 सुहक्षाणि ठाणि तिणि सुर हुआओ रमणि वत्तिसे व्रत लिउ ।  
 तसु नंदणि तिणि थानकि पछइ महाकालदेउल किउ ॥ २९ ॥  
 रायग्गिहिं मेयज्ज भज्जनववर विवहारिउ ।  
 पुण्यमित्त सुरि वोहि दिक्क दुक्किहिं लेवारिउ ।

विहरंतउ तिहिं पत्त दुट्टसोनारह मंदिरि ।

क्रौंचि कणय जब खड्ड वड्ड वड्डउ तिणि तस सिरि ।

दृढघाह दिट्ठि दुइ नीकलीय ढलिय धरणि निचलु भयउ ।

तस पंग्विप्राण रक्षा करी धरी ध्यान सिद्धिहि गयउ ॥ ३० ॥

धणगिरिधरणिमुनंदउयरि जायउ जाईसर ।

छम्मासिउ पिउपासि वयर संपत्तउ वयधर ।

तस समीचि मुणिकज्जि गुरिहि वायण अणुजाणीय ।

धन्न सीहगिरिसीस जेहिं मन्निय इय धाणीय ।

जे माणगण मनि परिहरो सुगुम्बयण इम सहइह ।

ते सुद्ध साधु सुकुलीण सविगुणनिहाण गुम्बटि लहइ ॥ ३१ ॥

संगमसुरि गिलाण वासि संजमबिहि रक्खइ ।

धम्मच्छलि तस सीस दत्त गुरुदोस निरिक्खइ ।

वित्तविहार सविज्ज पिंड अंगुलि दिप्पंतिय ।

नित्यवास नितु सरसु असणु दीवय मणि चित्तिय ।

मन्नंतउ मुनि अप्पउं सगुण निगुण भणवि गुरु परिभवइ ।

घोरंधयार घण सह करि सम्मदिट्ठि सुर सिक्खइ ॥ ३२ ॥

यद्धमाण विहरंत नयरि सावत्थिहि आवइ ।

गोसालउ चउसाल आप तित्थयर भणावइ ।

मंग्वलिपुत्तासरुव कहइ पट्ट पुच्छिउ सोमिहिं ।

जिणवरमंगुह सुक्क तेउलेसा तिणि रीसिहिं ।

तं पिक्खि सुगुम्परिभव असह मुनरुत्त मुनि विचि थयउ ।

तिणि तेजि दट्ठ आराधना करयि सग्गि अच्युति गयउ ॥ ३३ ॥

नाहियवादि नरिद नयरि सेनवी पणसी ।

पाससीस विहरंत पत्त तहिं गणहर केसी ।

नरयगमणि इकचित्त सुगुम्बयणिहिं पडिवोहिउ ।

सावयधम्म सुरम्म करवि तिणि अप्पउं सोहिउं ।

लहुकालि काल करि सु जि सरिउ मूरिआभसुविमाणि सुर ।

इम दुरियदुक्क दूरिहिं इणी सयल सुक्क साधइ सुगुरु ॥ ३४ ॥

तुरमिणिपुरीनरिंद दत्त वंभणकुलि बट्टबल ।

माउलकालिगमूरिपामि पुच्छइ जन्नह फल ।

अंगपीड अंगमिय सुगुरु सबं चिय जंपइ ।  
 जागि जीववधि नरय सुणवि सु जि कोपइ कंपइ ।  
 अहिनाण जाण सत्तमदिवसि मलप्रवेश मुहि तुझतणइ ।  
 दक्खिन्न दुट्ठभय परिहरिय घम्मवयण मुणि इम भणइ ॥ ३५ ॥  
 आसि मरीइ मुणिंद भरहसुय नियवय छंडइ ।  
 क्रियपरिचायगवेस रिसहपहुसरिस त हिंडइ ।  
 पडिवोहइ बहुलोय दिक्क जिणपासि लिवारइ ।  
 अन्नदिवसि अतिकुटिल कपिल तसु वयण विचारइ ।  
 तसु क्षिप्यकाजि फुड नवि कहइ इत्थ उत्थि बहु धम्म छइ ।  
 भव कोडिसागर भमिउ हुउ धीरजिण तउ पछइ ॥ ३६ ॥  
 कन्हमरणि बलभइ तवइ तव तुंगिपगिरिसिरी ।  
 जाइ सरण इक हरिण रहइ अह्निसि रियिपरिसिरी ।  
 कट्टकज्जि रहकार पत्त यनि साख कपावइ ।  
 जिमणवेल जाणेवि लेवि मुणि मृग तहि आवइ ।  
 ओ दियइ दान ओ सुडनप ओ विहुगुण मनि चिंतवइ ।  
 सिरि पडइ डाल समकाल त्रिहुं वंभलोय सुरगति हवइ ॥ ३७ ॥  
 पूरणसिद्धि विभेलगामि लिइ तापसदिक्का ।  
 दीण खयरजलथलचरह अप्प चिहुभागिहिं भिक्षा ।  
 वारवरिस बहुकट्ट छट्टतप करइ दयाविण ।  
 पापालिहिं चमरिंद चमरचंचाहिव हुय तिण ।  
 अभिमाणि सग्गि सोहम्मि गयउ वज्रदंड पिक्कवि पुलिउ ।  
 सिरियीरनाहपयतलि रहिउ तउ सयल वि धंधलु टलिउ ॥ ३८ ॥  
 सुसुमारपुररोहि कहइ निष सउणसमीहओ ।  
 वारत्तयरिपि भीयबालप्रति भणइ म वोहउ ।  
 इयवयणह बलि धंधमारि पज्जोय सु जित्तउ ।  
 नेमित्तिउ भणि हसइ राउ रिसिपासि पहुत्तउ ।  
 इम गिहिपसंग सुट्ठयमुणिइ थोडउ अइमालिन्नकर ।  
 परिहरइ दूरि इण कारणिहिं सच्चसंग चारित्तधर ॥ ३९ ॥  
 चंदवडिस नरिंद नयरि सावेइ सुसावय ।  
 निश्चिहं नियआवासि सुट्ठ सामादय ठावय ।

दीवअवधि कासगग करिय निचल हुइ पालइ ।  
 दासी पुण दीवेल घल्लि चउपहर उजालइ ।  
 पूरिय प्रतिज्ञ प्रहउगगमणि परम प्रीति पामिउ पवर ।  
 सुकुमालअंग सुहृद्धानमण सगगलोइ संपन्न सुर ॥ ४० ॥  
 सावय सागरचंद रहिउ कासगि महावनि ।  
 कमलामेलाहरणचैर नभसेन धरइ मनि ।  
 घल्लइ सिरि अंगार तह वि सो झाणनिरस्तउ ।  
 पोसहवय दृढ पालि टालि दुह सगि पहुत्ताउ ।  
 जइ हुंति दुसह उवसगग सहइ स गिहत्थ सुकुमालतणु ।  
 ता अइदुद्धरचारित्तधर साहु केम न सहंति पुण ॥ ४१ ॥  
 चंपापुर अदारकोडिधणवइ कोहुंविय ।  
 पोसह करि कासगि रहिउ निसि मुज आलंविय ।  
 इंद्रप्रसंस असहहत अमरेहिं परिक्रिय ।  
 मत्तागइंदभुयंगघोररक्कसभय दक्षिय ।  
 न हु चलिउ मेरूचूलाअचल कामदेव गिहवइ सुथिर ।  
 पल्लुवीर पयासिउ प्रहसमइ सोसवगगअगगलि सुविर ॥ ४२ ॥  
 रायगिहि इक रंक अछइ अइदुस्तिउ अगगइ ।  
 उज्जाणी जण जत्त पत्त तहिं भिरु सु मगगइ ।  
 अलहतउ अइरोसि दोसि नियकम्मिहिं नडिउ ।  
 चूरिसु लोग समगग एम चिनिग गिरि चटिउ ।  
 दोलेइ टोल परयततणा गडघडाट सुणि नट सहु ।  
 पापाणि तेणि सो चंपिऊ नरयदुक्क पामिऊ दुसहु ॥ ४३ ॥  
 वद्धमाण वय लिद्ध जाव वीजऊ घरसालऊ ।  
 मुंठ तुंठ मंडेवि पुंठि विलगऊ गोसालऊ ।  
 जिणवयणिहिं विधि जाणी तेजलेइया तपि साथी ।  
 तह अटंगनिमित्त कह वि विज्जा निण लाथी ।  
 उम्मगगचारि अनरथभरिउ गुम्ढोही गरविहिं नडिउ ।  
 मंगलिसुय भोग किलेस करि दुहसायरि दुत्तरि पटिउ ॥ ४४ ॥  
 दृढपहारि वट चोर जाइ कुसथलिमिउं चोरिहिं ।  
 गीरकज्जि धावंन विप्प मारिउ निणि घोरिहिं ।



वंभणभञ्ज सगम्भ हणिय वालक फुरकंनउ ।  
 पिक्खवि भववेरगि लेइ संजम दिप्पंतउ ।  
 संभरणअवधि छंढिय असण तिणि ज गामि छम्मास रहि ।  
 अक्कोम बंधवह दुसहसह सिद्धि पत्त दुक्कम दट्ठि ॥ ४५ ॥  
 वीरसेणसेवक्क सहसमल्ल त्ति पसिद्धउ ।  
 कालसेनरिउराय जेण विहुवांहिहिं वद्धउ ।  
 तिणि गुणि संव्वनरिदि किद्ध सामंत विदित्तउ ।  
 वेरगिहिं व्रत लेवि तीण अरिदेसि पहुत्ताउ ।  
 पवारिय पूरव बाहुवल कालसेनि कुट्टाविउ ।  
 सव्ववट्ठसिद्धि सुरवर सरिउ कोह कह वि तस नाविउ ॥ ४६ ॥  
 सावत्थोनिवकणयकेतुमुय व्वंदग नामिहिं ।  
 दिक्ख लेवि जिणकप्प करइ विहरइ पुरगामिहिं ।  
 व्रत लिद्धइ तस ताय नेहि सिरि छत्त घरावड ।  
 तह वि अवद्धउ वंधुपासि कंनोपुरि आवइ ।  
 तस बहिन सुनंदा रायघरि मग्गि जंतु तिणि दिट्ठ मुणि ।  
 नरवरि अलीकशंका धरिय हरिय प्राण तस तिणि रयणि ॥ ४७ ॥  
 दीरघसिउं रइरत्ताचित्त चुलुणी मयणातुरि ।  
 वंभदत्तनियपुत्तदहण दक्खइ लक्काहरि ।  
 वरधन मंघ्रि सुरंगसंगि रक्खिउ परपंचिहिं ।  
 फिरिय फिरिय महिमज्झि रत्त पुण लहइ सुसंचिहिं ।  
 इह कत्तस कोइ न हु वल्लद्धउ भवसरूप नडपिक्खणउं ।  
 सुहियां जि मूढ मोहिय भणइ हणइ कज्ज पर तहतणउ ॥ ४८ ॥  
 तेयलिपुरि निव कणयकेतु पउमावड राणी ।  
 मंत्री तेयलिपुत्त भञ्ज तस पुट्टिल नाणी ।  
 जाय मत्त सवि पुत्त राय निय लोभि मरावड ।  
 राणी मंघ्रि कहेवि एक सुय छन्न रहावड ।  
 नरनाह पत्त पंचत्त सु जि कुंयर राय महत्तड कियउ ।  
 महत्तउ पुण पुट्टिलसुरवयणि पहिबुद्धउ केवलि थियउ ॥ ४९ ॥  
 रत्तलोभ मनि धरवि भरह पहुत्ताउ समरंगणि ।  
 बाहुवलिहिं तहिं दिट्ठिमुट्ठिमुज्झिहिं जित्तउ मणि ।

रोसि चडिउं रणि चक्क भरह भाइसिरि मिल्हइ ।  
 धिग विसयारसि लुद्ध मुद्ध सासयसुह ठिल्लइ ।  
 इम चित्ति चित्ति संजम सबल बाहुव्वलि कासगि रहिउ ।  
 भरहेसर पत्त अवज्झपुरि भायनेह कित्तिम कहिउ ॥ ५० ॥  
 भज्जा विसयविकारिभारि पइमारणि चल्हइ ।  
 सूरियकंत कलत्त भत्तभीतरि विस घल्हइ ।  
 रायपणसि सुधम्म रम्म पोसहवय पारिय ।  
 करइ पारणउं जाव ताव तक्कणि विसि धारिय ।  
 सुहइआणि ठाणि निअ आणि मण सगलोइ संपन्न सुर ।  
 वुक्कमचारि सा नारि पुण भमइ भूरि भव भीडभर ॥ ५१ ॥  
 वीरवयणि जाणेवि नरय सेणिय चितइ मनि ।  
 कोणिय रज्ज ठवेसु लेसु संजम जाई वनि ।  
 हल्लविहल्लहं हार गुरुयगयवरसिउ दिद्धउ ।  
 कूड करी कोणिक्कि रायसेणिय तव वद्धउ ।  
 नियत्ताय कट्ठपंजरि धरी खाण पाण वे राहवइ ।  
 सयपंच धाय दिणि दिणि दियइ पुत्तनेह एरिस हवइ ॥ ५२ ॥  
 वणियपुत्त चाणिक्क कयड बहुयुद्धि वियाणइ ।  
 चंदगुत्तसाहिज्जकज्जि पव्वयनिव आणइ ।  
 तससरिसी अतिप्रीति करीय अरिकंदय टालिय ।  
 नंदनरिंदह रज्जनयरि पाडलि उटालिय ।  
 विसकन्न जाणि परिणायिउ सो वि मित्त जमपुरि लयउ ।  
 नियकज्ज करवि विहडिउ पछइ मित्तनेह एरिस भयउ ॥ ५३ ॥  
 परसुराम जमदग्गिपुत्त रेणुयअंगुब्भम ।  
 कत्तविरिय नरनाह हणइ मासीसुय द्दुहम ।  
 अप्पण पइ तस रज्ज लेवि हत्थिणपुरि रहियउ ।  
 मत्तिपवंस असेस फरसुल्लालिहिं निणि दहियउ ।  
 निवघरणि नट्ट पच्छन्न टिय तस सुभूम सुय चक्कइ ।  
 निहलइ वंस वंभणतणउ निययनेह एरिस हवइ ॥ ५४ ॥  
 अज्जमहागिरिमूरि भूरिमवपावनिवारण ।  
 गिइ जिणकप्पि करंति तस्स तुलणा अइदारुण ।

कुलधरनियसुहसयणसंग निस्सा सवि छंडिय ।

अपडिवद्धविटारसार संजमगुणमंडिय ।

सावयधरि अजसुहत्थि गुरि गुणपसंस हरपिहिं करिय ।

अइआदर दिक्कि सुकारणिहिं पाडलपुर तिणि परिहरिय ॥ ५५ ॥

सेणियभारणिपुत्त मेह भज्जट्ट विमुक्किय ।

वीरपासि वय लिद्ध बुद्धि निसि संजम चुक्किय ।

पुच्चजम्म परिकहिय पुण बि थिर किद्धउ वीरिहिं ।

वहुजइजणसंवद सहइ अइडुसह सरीरिहिं ।

सो रापयंसअचयंसमणि मणिन अप्प तृणसम गणइ ।

चापरइ विजयवेमाणि सुह रहिउ सिद्धि घरअंगणइ ॥ ५६ ॥

वेडयधूपसुजिडसुद्धमहासइअंगुभम ।

विज्जाहरपेढालपुत्त विज्जावलडुइम ।

व्यायगसम्मदिद्धि अंग इग्यारइ जाणइ ।

तह बि विसयरसरंगि अंगि अतिदपण आणइ ।

उज्जेणि उमावेसायसिहि करवि कूड हेल्ला इणिउ ।

सो सव्वइ सचइ नरय गय विसयदोस एरिस भणिउ ॥ ५७ ॥

वारयईपुरि पत्त नेमियहु केवलनाणी ।

दसदसारनरनाह कन्ह निसुणइ जिणवाणी ।

सहसअठार मुणिदचंद विधियंदणि वंदइ ।

नरपभूमि चिहुदुक्ककक निम्मूल निकंदइ ।

तिलययरगुत्ता यंभइ सुदद असुहकम्म हेल्ला इरद ।

पूजाप्रणामवंदणविणय सगुणसाहसंगति करइ ॥ ५८ ॥

चंदरुद गुरु गइरोसि रीसाल विदित्तउ ।

उज्जेणीउज्जाणि सगुणसासिहिंसिउं पत्तउ ।

नयपरणीन कुमार हसिय पभणउ दिउ दिक्का ।

गुरि सीस तस चंपि केस लुंभिय दिप सिक्का ।

सो सीसभावि संजम लियइ मग्गि लग्गि गुरु सिर धरी ।

निम सहइ पाप दुच्चपण जिम लहइ वेउ केवलसिरि ॥ ५९ ॥

गयकलभे परिचरिउ सुयर सुमिणइ मुणि दिट्टउ ।

तिणि अहिनाणि सुसीससहिय पुण कुगुरु अणिट्टउ ।

निसि चंपइ अंगार सूगविण मन्नइ प्राणिउ ।

तव अंगारयमह सूरि अभविय इम जाणिउ ।

ते सीस सवे निवपुत्त हूय सूरि करह वक्करभरिउ ।

तिहिं देखि सपंवरि आवते पुव्वजम्म तक्कणि सरिउ ॥ ६० ॥

पुप्फचइसुय पुप्फचूल भइणी तह भज्जा ।

सुमिणि नरयदुह देखी पुप्फचुला वयसज्जा ।

अन्नियसुयगुरुकज्जि खीणजंघावल जाणी ।

आणांती सा भत्तपाण हूय केवलनाणी ।

पुच्छेइ सूरि मह नाण कहिं सु पण गंगभीतरि कहइ ।

तव दुट्ठदेवि उवसग्ग सहि सुगुरु तत्थ केवल लहइ ॥ ६१ ॥

सिद्धि पत्त मरुदेवि तपिहिंविणु इणि आलंबणि ।

के वि करंति पमाय ति पणि अच्छेरयसम गिणि ।

जिणि कारणि पुव्वंमि जम्मि थावरतरुभीतरि ।

वोरिसंगि बहु अंगि सहिय दुह कम्म विनिज्जरि ।

सुहभावि पावि परिमुक्कमण सरलसार संतोसमय ।

जिणणि नाभिकुलगरघरणि रिसह झाणि निब्बाणि गय ॥ ६२ ॥

लद्धि पत्त पत्ते य बुद्ध सुहसिद्धि समाणइ ।

अच्छेरयसमतुल्ल बुल्ल किवि ते मनि आणइ ।

निहिसंपत्ति स चित्ति धरवि विवसाय ति छंडइ ।

सामग्गी परिहरिय करिय पातग निय दंडइ ।

करकंडुदुमुहनमिनग्गइ चिहुचरित्त चितिय सुपरि ।

धरि धम्म रम्म उज्जमसहिय मुक्क माय अपमाय करि ॥ ६३ ॥

ससगभसगनिवपुत्तवहिणि सुकुमालिय कुमरी ।

चंपापुरि चारित्त लेइ रुपिहिं किर अमरी ।

फिरइ तरुण तस पासि रागि रत्ता गयगमणी ।

रक्कइ बंधव वेउ लेइ तिणि अणसण समणी ।

वहुदिवसि तापि तपि भूरछामुइय जाणि वनि परठवी ।

ओसहविसेसि सु जि सज्ज करि सत्थवाहि गेहिणि ठवी ॥ ६४ ॥

सु बहुसीसपरिवारसार मिद्धंनविदित्तउ ।

महुरापुरि सिरिमंगुसूरि रसणिदिइं जित्तउ ।

नगरखालि उप्पन्न जक्क बहु दुक्क निहालइ ।  
 सुचिहियजणपडिबोहकजि नियजीइ दिखालइ ।  
 जिप्पइ मुणिइ रसणिदियइ अणजित्तइ एरिसु हुउ ।  
 जग्गइ जि जोग जुगतिहिं सदा म म म मोहनिद्रां सुउ ॥ ६५ ॥  
 गिरिसुय ग्रहिउ पुलिंदि पुण्फसुय तवसी सेवइ ।  
 सुयडा अडवीमज्झि अउइ पक्कोदर वेवइ ।  
 इक्क भणइ लिउ भारि अवर पुण विणय पयासइ ।  
 अंतरसंगविसेसि दोस गुण नरनइपासइ ।  
 इम जाणि निगुणसंगति तिजउ सगुणसंग अणुदिण करउ ।  
 झगमगइ जेम जगमज्झि जस भवसमुइ तक्कणि तरउ ॥ ६६ ॥  
 सिरिधावच्चापुत्तसूरि सुकसूरि अणुक्कमि ।  
 सेलगसूरि पमायपंकि पडियउ अइदुइमि ।  
 गया सीस सवि छंडि एक्क पंधग मुणि रहिउ ।  
 खामंतइ पणि लागि पव्ववासरि तिणि कहियउ ।  
 मियमहुरवयणि सुनिपुणपणइ ठविउ सुद्धसंजमि स गुरु ।  
 सो सूरि पुण बि चारित्त वरि सिचुंजण सिद्धउ सधर ॥ ६७ ॥  
 सेणियनंदण नंदिसेण बारस संवच्छर ।  
 धीरसीस वय छंडि वेस धरि वसइ समच्छर ।  
 दस प्रतिबोध्याधिणु न लेइ आहार निरंतर ।  
 इक्क न पुज्झइ भणइ वेस दसमा तुम्हि सुंदर ।  
 इण वेसवयणि पुण वेसधर चरण वरवि सुर संपजइ ।  
 इय जस्स सत्ति देसुणातणी अहइ सो बि संजम तिजइ ॥ ६८ ॥  
 वरससहस नव कट्ट करिय कंडरिय न सुद्धउ ।  
 अंति दुट्ठपरिणाम कामवश नरयनिवद्धउ ।  
 अचिरकालि परिपालि सुद्ध संजम संपत्तउ ।  
 पुंडरीक सच्चवइसिद्धि सुहबुद्धिनिरुत्तउ ।  
 बहु दुक्क सहवि नवि लद्ध सुह अप्प दुक्कि बहुसुग्व लहिउ ।  
 विहु वंधव एवड अंतरउ भावभेदि भगवति कहिउ ॥ ६९ ॥  
 नयरि कुसुमपुरि राय भाय दूइ ससि सरप्पह ।  
 ससी न मन्नइ घम्म रम्म मन्नइ विसयासुह ।

तपजपविण सो पत्त नरगि त्रीजइ दुहत्तउ ।  
 करवि सूर दुहचूर सग्गि सत्तमइ स पत्तउ ।  
 ससि रडइ सूरसुरअग्गलिहिं तणु तच्छिय दुह दिक्खवउ ।  
 सो भणइ जीव विणु तणु दहिहिं नरयदुक्क किम रक्खिवउ ॥ ७० ॥  
 सुग्गइमग्गपईय नाण जे दियइ निरुप्पम ।  
 तिहं गुरु किं पि अदेय नत्थि जग्गमज्झि जग्गुत्तम ।  
 दिक्खउ जेम पुलिंदि सिवग्गजक्खइ नियलोयण ।  
 तिण सरिसउं सुर वत्त करइ भत्तइ दिय चोयण ।  
 केवलइं दाणि तूसइ न गुरु अंतरंगभत्तिहिं वरइ ।  
 तिणि कारणि बिहुपरि करि विणय जिम बाहिरि तिम अंतरइ ॥ ७१ ॥  
 अंबचोर चंडाल चडिउ अभयडकरि कंपइ ।  
 दय नामिणी सुविज्ज मज्झ इम सेणिउ जंपइ ।  
 विणयविबज्जिय विज्जकज्ज करिवइ नवि जग्गइ ।  
 सिंहासणि बइसारि भारि गुरु करि सो मग्गइ ।  
 ओ कहइ विज्ज ओ लहइ फल बिहुह कज्ज तक्कणि सरिउ ।  
 इण कारणि जिणसासणि विणय सुगुरु सीस अणुक्कमि करिउ ॥ ७२ ॥  
 दग्गस्यरउ तिदंडि तामलिच्ची पुरि अच्छइ ।  
 नापितपासि सु विज्ज लेवि देसंतरि गच्छइ ।  
 महिमा मोट्टिम पत्त दंड गयणंगणि रहियउ ।  
 पुच्छिउ नरवरि जाम ताम सच्चउ नवि कहियउ ।  
 गुरुलोपि कोपि विज्जा गई गयणदंड गडयडि पडिउ ।  
 लज्जियउ लोकि हसिउ सयलि इम सु नाणनिन्हवि नडिउ ॥ ७३ ॥  
 वंभण एक अनेककूडकवडाइनिरुत्तउ ।  
 उज्जेणिहिं कट्ठियउ देसि चम्मरि स पत्तउ ।  
 त्रिहुं गामइं विच्चालि करइ तप वेसि त्रिदंडी ।  
 भगतलोकघरसार मुसइ निसि सु जि पाखंडी ।  
 अहं च डिउ हत्थि नरवरत्तणइ नयण कट्ठि नडियौ घणउ ।  
 बहु सुरइ अति सोचइ सु चिर निंदइ निक्कुकुडक्कणउ ॥ ७४ ॥  
 दुहरंग वरदेव कुट्टिरुपिहिं पडु चंदइ ।  
 छींक करइ जब वीर नाम मरि कहि अभिणंदइ ।

सेणियप्रति चिर जीव अभयप्रति जा चड विहुपरि ।  
 कालसूरप्रति कहइ म मरि म म जीविय अणुसरि ।  
 मगहेसर पुच्छइ ए कवणु कवण एस परमत्थ पुण ।  
 जिण भणइ विप्पसेहुयचरिय चिहु प्रकारि नरआचरण ॥ ७५ ॥  
 चरि अंगमीइ मरण सरण जिणधम्म धरिज्जइ ।  
 जिपहिंसा पुण घोर घोरदुहहेउ न किज्जइ ।  
 कालसूरियह पुत्त सुलस जिम पाय निवारउ ।  
 परपीडा परिहरह तरह संसार असारउ ।  
 कुलकारण किं पि न लिक्खवउ गुणह रूप शुरुयडि धरउ ।  
 परलोगमग्ग जाणउं सुपरि कुपरि कुकम्म म आयरउ ॥ ७६ ॥  
 हेजिइ हित अरिहंत कह वि नवि प्राणि करावइ ।  
 तं पुण दिइ उपदेस जेण किज्जइ सुन्न आवइ ।  
 जं सुरवइ सुरचग्गि सग्गि एरावणवाहण ।  
 जं भरहादिव रज्जसज्ज भुंजइ सुहसाहण ।  
 जं जं अवर वि सुरअसुरनरमुक्क सुक्क माणइ घणउ ।  
 तिहुयणह मज्झि तं सयल फल जिणवरउवएसहतणउं ॥ ७७ ॥  
 ग्वत्तिपकुंडि जमालि बीरजामाइ खत्तिउ ।  
 सुहंसणभत्तार सार घयभारपवत्तिउ ।  
 नवि मग्नइ किज्जंत किज्ज इय आगमवाणी ।  
 निन्हवि तेण कुदिट्ठि दुट्ठि किय बहु गुणहाणी ।  
 नियकित्ति मुसिय सुर किच्चिस्सिय मिलिउ भिच्छमइ मोहियउ ।  
 सपपंच माहु साहुणि सहस ठंकसट्ठि पुण बोहियउ ॥ ७८ ॥  
 जिम मासाहम पंग्वि मुग्घिहिं मा साहस जंपहं ।  
 वग्यवयणि पइसेवि भंम लितउ नवि कंपह ।  
 निम अवरह उयणम दिति किचि फुटवयणाकरि ।  
 पणि अप्पणि न करंति रम्म जिणधम्म तणीपरि ।  
 नेरग्गवाणि नड उच्चरइ जलहि जालि पाणी गलइ ।  
 इम कम्मभारि भारिय भणी जाइ भूर भवजलनलइ ॥ ७९ ॥  
 धम्मवीय जिणराह आणि दीवंनर दिज्जउ ।  
 अविरति मयण वि ग्वद देमचिरते अघ न्वदउ ।

पासत्ये पुण खुट्टि खित्ति खाइव सहु हारिउ ।  
 संजमि ए सुभखित्ति सच्च वावीय बद्धारिउ ।  
 त्रिहु भेदि जीव ते करसणी राजदंदि अप्पउं दहइ ।  
 सुविहियमुणि रायपसायवसि सुख सुगालि लच्छी लहइ ॥ ८० ॥  
 इणिपरि सिरिउवणसमालकहाणय ।  
 तवसंजमसंतोसविणयविज्जाइ पहाणय ।  
 सावयसंभरणत्थ अत्थपय छप्पयछंदिहिं ।  
 / रघुणसांइसुरीससीस पभणइ आणंदिहिं ।  
 अरिहंतआण अणुदिण उदय धम्ममूल मत्थइ हउं ।  
 भो भविय भत्तिसत्तिहिं सहल सयल लच्छिलीला लहउ ॥ ८१ ॥  
 ॥ इति श्रीउपदेशमालासर्वकथानकछप्पया ॥

## समरारासु

पहिलउ पणमिउ देव आदीसरु सेत्तुजसिहरे ।  
 अनु अरिहंत सच्चे वि आराहउं बहुभस्तिभरे ॥ १ ॥  
 तउ सरसति सुमरेवि सारयससहरनिम्मलीय ।  
 जसु पयकमलपसाय मूरुपु माणइ मन रलिय ॥ २ ॥  
 संघपतिदेसलपूहु भणिमु चरिउ समरातणउ ए ।  
 धम्मिय रोलु निवारि निसुणउ श्रवणि सुहावणउ ए ॥ ३ ॥  
 भरइ सगर दुइ भूप चक्रवति त हउ अतुलबल ।  
 पंदव पुहधिप्रचंट तीरथु उघरइ अतिसवल ॥ ४ ॥  
 जावडतणउ संजोगु हउअं सु दसम तय उदण ।  
 समइ भलेरइ सोइ मंघ्रि वाहडदेउ ऊपजण ॥ ५ ॥  
 हिय पुण नवी य ज चात जिणि दीहाडइ दोहिलण ।  
 खत्तिय ग्वग्गु न लिति साहसियह साहसु गलण ॥ ६ ॥  
 तिणि दिणि दिनु दिक्काउ समरसीहि जिणधम्मवणि ।  
 तमु गुण करउं उद्योउ जिम अंधारइ फटिकमाणे ॥ ७ ॥  
 सारणि अमियतणी य जिणि बहावी मरुमंटलिहिं ।  
 किउ कृत्तजुगअवतारु कलिजुगि जीतउ बाहुवले ॥ ८ ॥



समरऊ ए साहसधीरु वाहविलग्गउ वट्ट अ जण ।  
 बोलई ए असमवीरु दूसमु जीपइ राउतवट्ट ए ॥ १ ॥  
 अभिग्रह ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्यणवाहवलि ।  
 उधरऊ ए आदिजिणविंबु नेसु न मेल्लउ आपणउ ए ।  
 भेटिऊ ए तउ पानपालु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥  
 चीनती ए लागु लउ वानु पूछए पहुता केण कज्जे ।  
 सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंबणु अम्हत्तणउ ए ।  
 भइली ए दुनिय निरास ह ज भागी य हींदुअतणी ए ।  
 सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देह मानु ॥ ३ ॥  
 आपिऊ ए सब्बवयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिवा ए ।  
 अहिंदर ए मलिकआणसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।  
 पतमत ए पानपणसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।  
 पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहिं चीनविउ ए ॥ ४ ॥  
 संधिहिं ए कियउ पसाउ बुद्धि विमासिय बहूपपरे ।  
 सासण ए घर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।  
 दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण बे निम्मला ए ।  
 आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पघर ॥ ५ ॥  
 दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुत्तणउ ए ।  
 इह जुग ए नही य चीसासु मनुमात्रे इय किम छरए ।  
 तउ तुह्ण ए पुत्तप्रकासु करि ऊधरि जिणवरधरसु ॥ ६ ॥

चतुर्थभाषा-संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।  
 पणमई सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।  
 चीनती अम्हत्तणी प्रभो अवधारउ एक ।  
 तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥  
 सेत्तुजतीरथ ऊधरिवा ऊपन्नउ भावो ।  
 एकु तपोघनु आपणउ तुम्हि दियउ सहाउ ।  
 मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।  
 सुगुरवणु मनमाहि धरिउ गाढउ अति रुचइ ॥ २ ॥  
 राणेरा तहिं राजु करइ महिपालदेउ राणउ ।  
 जीवदया जगि जाणिजण जो चीरु सपराणउ ।



पातउ नामिहि मंत्रिवरो तसुतणइ सुरज्जे ।  
 चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥  
 राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।  
 टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठे ।  
 फलही आणिय समरवीरि ए अतिबहुजयणा ।  
 समुद्र विरोलिउ वासुगिहि जिम लाघा रयणा ॥ ४ ॥  
 कूआरसि उछवु हउउ त्रिसंगमइनइरे ।  
 फलही देपिउ धामियइ रंशु माइ न सइरे ।  
 अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।  
 गोत्ति मेलहावइ पडरालुअह आपड बहुवित्तो ॥ ५ ॥  
 भांइ आघ्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।  
 जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।  
 खेला नाचइ नबलपरे घाघरिरयु झमकइ ।  
 अचरिउ देपिउ धामियइ कह चिचु न चमकइ ॥ ६ ॥  
 पालीताणइ नयरि संघु फलही य वधावइ ।  
 बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।  
 किं कण्णुरिहि घडीय देह पीरसायरसारिहि ॥ ७ ॥  
 सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।  
 मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरपु न माए ।  
 देसलज्जइ चरित्रि सह रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पञ्चमी भापा-संघु बहुभक्तिहि पाटि वयसारिउ ।  
 लगनु गणिउ गणघरिहि विचारिउ ।  
 पोसहसाल खमासण देयए ।  
 सुरिसेयंवरमुनि सवि संमहे ए ॥ १ ॥  
 घरि वयमवि करो के वि मन्नाविषा ।  
 के वि घम्मिय हरसि घम्मिय धाह्या ।  
 बहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।  
 संघु मिलइ बहुभली य मज्जाढया ॥ २ ॥  
 सुहगुन्सिधसुरिवामि अहिसिचिउ ।  
 संग्रपति कल्पनरु अमिय जिम सिचिउ ।

ओसवालकुलि चंदु उदयउ एउ समानु नही ।  
 कलिजुगि कालइ पाखि चांद्रिणउं सचराचरिहिं ॥ ९ ॥  
 पाल्हणपुरु सुप्रसीधु पुन्रवंतलोयह निलउ ।  
 सोहइ पाल्हविहारु पासभुवणु तहि पुरतिलउ ॥ १० ॥

भास—हाट चहुटा रूअडा ए मढमंदिरह निवेसु त ।

वाविकूवआरामघण घरपुरसरसपएस त ।  
 उवएसगच्छह मंडणउ ए गुरु रयणप्पहसूरि त ।  
 धम्मु प्रकासइं तहि नयरे पाउ पणासइ दूरि त ॥ १ ॥  
 तसु पटलच्छीसिरिमउडो गणहरु जखदेवसूरि त ।  
 हंसवेसि जसु जसु रमए सुरसरीयजलपूरि त ॥ २ ॥  
 तसु पयकमलमरालुलउ ए कक्कसूरि मुनिराउ त ।  
 ध्यानधनुपि जिणि भंजियउ ए मयणमल्ल भट्ठियाउ त ॥ ३ ॥  
 सिद्धसूरि तसु सीसवरो किम वन्नउं इकजीह त ।  
 जसु घणदेसण सलहिजए दुहियलोयवप्पीह त ॥ ४ ॥  
 तसु सीहासणि सोहई ए देवगुप्तसूरि बईटु त ।  
 उदयाचलि जिम सहसकरो उगमतउ जिण दीटु त ॥ ५ ॥  
 तिह पट्टपाटअलंकरणु गच्छभारघोरेउ त ।  
 राजु करइ संजमतणउ ए सिद्धिसूरिगुरु एहु त ॥ ६ ॥  
 जोइ जसु वाणीकामपेनु सिद्धंतवनि विचरेउ त ।  
 सावइजणमणइच्छिय घण लीलइ सफल करेउ त ॥ ७ ॥  
 उवएसवंसि वेसटह कुलि सपुरिसतणउ अवतारु त ।  
 वयरगरि कउतिगु किसउ ए नही य ज रतनह पारु त ॥ ८ ॥  
 पुन्नपुरुपु ऊपनु तहिं सलपणु गुणिहि गंभीरु त ।  
 जणआणंदणु नंदणु तसो आजडु जिणधमधीरु त ॥ ९ ॥  
 गोत्रउदयकरु अवयरिउ ए तसु पुधु गोसलुसाहु त ।  
 तसु मेहिणि गुणमत भली य आराहइ निप्पनाहु त ॥ १० ॥  
 संघपति आसधरु देसलु लूणउ तिणि जन्म्या संसारि त ।  
 रतनसिरि भोली लाच्छि भणउं तोहत्तणी य घरनारि त ॥ ११ ॥  
 देसलघरि लच्छी य निमुणि भोली भोलिमसार त ।  
 दानि सीलि लूणाघरणि लाछि भली सुविचार त ॥ १२ ॥

द्वितीयभाषा-रत्नकुपि कुलि निम्मली य भोलीपुत्तु जाया ।  
 सहजउ साहणु समरसीहु बहुपुत्तिहि आया ॥ १ ॥  
 लहूअलगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण ।  
 रत्नपरीक्षा रंजवइ राय अनु राण ॥ २ ॥  
 तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सधन ।  
 रूपवंत अनु सीलवंत परिणाविय कल ॥ ३ ॥  
 गोसलसुति आवासु कियउ अणहिलपुरनपरे ।  
 पुत्र लहइ जिम रयणमाहि नर समुद्रह लहरे ॥ ४ ॥  
 चउरासो जिणि चउहटा वरवसहि विहार ।  
 मढ मंदिर उत्तंग चंग अनु पोलि पगार ॥ ५ ॥

२ तिहि अछइ भूपतिहि सुवण सतखणिहि पसत्थो ।  
 विश्वकर्मा विज्ञानि करिउ घोइउ नियहत्थो ॥ ६ ॥  
 अभियसरोवरु सहसलिंगु इकु घरणिहि कुंडलु ।  
 कित्तिपंथु किरि अवररेसि मागइ आखंडलु ॥ ७ ॥  
 अज्ज वि दीसइ जत्थ धम्म कलिकालि अगंजिउ ।  
 आचारिहि इह नपरतणइ सचराचर रंजिउ ॥ ८ ॥  
 पातसाहि सुरताणभीवु तहिं राजु करेई ।  
 अलपखानु हींदूअह लोय वणु मानु जु देई ॥ ९ ॥  
 साहु रायदेसलह पूतु तसु सेवइ पाय ।  
 कला करी रंजविउ खानु बहु देइ पसाय ॥ १० ॥  
 मीरि मलिकि मानियइ समर समरथु पभणीजइ ।  
 परउवयारियमाहि लीह जसु पहिली य दीजइ ॥ ११ ॥  
 जेठसहोदरि सहजपालि निज प्रगटिउ सहजू ।  
 दक्षणमंडलि देवगिरिहि किउ धम्मह वणिजू ॥ १२ ॥  
 चउवीसजिणालय जिणु ठविउ सिरिपासजिणिंदो ।  
 धम्मधुरंधरु रोपियउ घर धरमह कंदो ॥ १३ ॥  
 साहणु रहियउ पंभनयरि सायरगंभीरे ।  
 पुब्बपुरिसकीरितितरंडु पूरइ परतीरे ॥ १४ ॥

तृतीयभाषा-निसुणऊ ए समइप्रभावि तीरधरायह गंजणउ ए ।  
 भवियह ए करुणारावि नीतुरमनु मोहि पडिउ ए ।

समरज ए साहसधीरु वाहबिलग्गउ बह अ जण ।  
 बोलई ए असमवीरु दूसमु जीपह राउतवट ए ॥ १ ॥  
 अभिग्रह ए लियइ अविलंबु जीवियजुव्यणवाहवलि ।  
 उधरज ए आदिजिणविंबु नेमु न मेल्हउ आपणउ ए ।  
 भेटिक ए तउ पानपानु सिरु धूणइ गुणि रंजियउ ए ॥ २ ॥  
 धीनती ए लागु लउ धानु पूछए पहुता केण कजे ।  
 सामिय ए निसुणि अडदासि आसालंबणु अम्हतणउ ए ।  
 भइली ए दुनिय निरास ह ज भागी य हींदअतणी ए ।  
 सामिय ए सोमनयणेहिं देपिउ समरा देइ मानु ॥ ३ ॥  
 आपिऊ ए सब्बवयणेहिं फुरमाणु तीरथमाडिया ए ।  
 अहिंदर ए मलिकआएसि दीन्ह ले श्रीमुखि आपण ए ।  
 पतमत ए पानपएसि किउ रलियाइतु घरि संपत्तो ।  
 पणमई ए जिणहरि राउ समणसंघो तहि वीनविउ ए ॥ ४ ॥  
 संधिहि ए कियउ पसाउ बुद्धि विमासिय बह्यपरे ।  
 सासण ए वर सिणगारु वस्तपालो तेजपालो मंत्रे ।  
 दरिसण ए छह दातारु जिणधर्मनयण वे निम्मला ए ।  
 आइसी ए रायसुरताण तिणि आणीय फलही य पवर ॥ ५ ॥  
 दूसम ए तणी य पुणु आण अवसरो कोइ नही तसुतणउ ए ।  
 इह जुग ए नही य वीसासु मनुभात्रे इय किम छरण ।  
 तउ तुह ए पुत्तप्रकासु करि ऊपरि जिणवरधरसु ॥ ६ ॥  
 चतुर्थभाषा-संघपतिदेसलु हरपियउ अति धरमि सचेतो ।  
 पणमइ सिधसुरिपयकमलो समरागरसहितो ।  
 धीनती अम्हतणी प्रभो अवधारउ एक ।  
 तुम्ह पसाइ सफल किया अम्हि मनोरहनेक ॥ १ ॥  
 सेतुजतीरथ ऊपरिवा ऊपन्नउ भावो ।  
 एकु तपोधनु आपणउ तुम्हि दिपउ सहाउ ।  
 मदनु पंडितु आइसु लहवि आरासणि पहुचइ ।  
 सुगुरवणु मनमाहि धरिउ गाढउ अति रुचइ ॥ २ ॥  
 राणेरा तहि राजु करइ महिपालदेउ राणउ ।  
 जीवदया जगि जाणिजए जो वीरु सपराणउ ।

पातउ नामिहि मंत्रिवरो तसुतणइ सुरज्जे ।  
चंद्रकन्हइ चकोरु जिसउ सारइ बहुकज्जे ॥ ३ ॥  
राणउ रहियउ आपुणपई पाणिहि उपकंठे ।  
टंकिय वाहइ सूत्रहार भांजइ घणगंठे ।  
फलही आणिय समरवीरि ए अतिवहुजयणा ।  
समुद्र विरोलिउ वासुगिहि जिम लाघा रयणा ॥ ४ ॥  
कूआरसि उछवु हूअउ त्रिसींगमइनइरे ।  
फलही देपिउ धामियह रंगु माइ न सइरे ।  
अभयदानि आगलउ करुणारसचित्तो ।  
गोत्ति मेल्हावइ पहरालुअह आपइ बहुवित्तो ॥ ५ ॥  
भांइ आत्र्या भाउघणउ भवियायण पूजइ ।  
जिम जिम फलही पूजिजए तिम तिम कलि धूजइ ।  
खेला नाचइ नवलपरे घाघरिरु क्षमकइ ।  
अचरिउ देपिउ धामियह कह चित्तु न चमकइ ॥ ६ ॥  
पालीताणइ नपरि संघु फलही य वधावइ ।  
बालचंद्र मुनि वेगि पवरु कमठाउ करावइ ।  
किं कप्पूरिहि घडीय देह पीरसायरसारिहि ॥ ७ ॥  
सामियमूरति प्रकट थिय कूप करिउ संसारे ।  
मागी दीन्ह वधावणी य मनि हरपु न माए ।  
देसलज्जइ चरित्रि सह रलियातु थाए ॥ ८ ॥

पश्चमी भापा-संघु बहुभत्तिहि पाटि वयसारिउ ।  
लगनु गणिउ गणधरिहि विचारिउ ।  
पोसहसाल खमासण देयए ।  
सुरिसेयंवरमुनि सवि संमहे ए ॥ १ ॥  
घरि वयसवि करी के वि मन्नाविआ ।  
के वि धम्मिय हरसि धम्मिय धाइया ।  
वहुदिसि पाठविय कुंकुमपत्रिया ।  
संघु मिलइ बहुभली य सज्जाइया ॥ २ ॥  
सुहगुरुसिघसुरिवासि अहिसिचिउ ।  
संघपति कल्पतरु अमिय जिम सिंचिउ ।

कुलदेवत सचिया वि भुजि अवतरइ ।  
 स्रहव सेस भरइ तिलकु मंगल करइ ॥ ३ ॥  
 पोसवदि सातमि दिवसि सुमुहुत्तिहिं ।  
 आदिजिण देवालण ठविउ सुहचित्तिहिं ।  
 धम्मधोरी य धुरि धवल दुइ जुत्तया ।  
 कुंकुमपिंजरि कामवेनुपुत्तया ॥ ४ ॥  
 इंदु जिम जयरयि चडिउ संचारण ।  
 स्रहवसिरि सालिथालु निहालण ।  
 जा किउ हयवरो वसहु रासिउ हूउ ।  
 कहइ महासिधि सकुनु इहु लब्धउ ।  
 आगलि सुनिचरसंघु सावयजणा ।  
 तिलु न पिरइ तिम मिलिय लोय घणा ॥ ५ ॥  
 मादलयम्मयिणाङ्गुणि वज्जण ।  
 सुहिरभेरोयरवि अंवरो गज्जण ।  
 नवयपादणि नयउ रंगु अवतारिउ ।  
 सुपिहि देवालउ संभारो संचारिउ ॥ ६ ॥  
 धरि वयसयि करि के यि समाहिणा ।  
 समरगुणि रंजिउ विरलउ रहिपउ ।  
 जयतु कान्हु दुइ संघपति चालिया ।  
 हरिपालो लंडुको महाधर दड धिया ॥ ७ ॥

पछी भापा-याजिय संव असंख नादि काहल दुहुदुडिया ।  
 घोडे चडइ सल्लारसार राउत सांगडिया ।  
 तउ देवालउ जोत्रि वेगि धावरिरु सुमरुइ ।  
 मम विमम नवि गणइ कोइ नवि चारिउ थकइ ॥ १ ॥  
 सिजवाला धर घटहडइ चाहिणि बह्वेगि ।  
 धरणि घटहड रजु ऊडण नवि स्रहइ मागो ।  
 हय हींसइ आरसइ करइ वेगि चहइ थइल ।  
 साद किया थाहरइ अवरु नवि देई चुल्ल ॥ २ ॥  
 निमि दीवी झलहलहि जेम ऊगिउ ताराणु ।  
 पावलपारु न पामियण वेगि चहइ सुम्भासण ।

आगेवाणिहि संचरण संधपति साहुदेसलु ।  
 बुद्धिवंतु बहुपुंनिवंतु परिकमिहिं सुनिश्चल ॥ ३ ॥  
 पाछेवाणिहि सोमसीहु साहुसहजापुतो ।  
 सांगणुसाहु लूणिगह पृत सोमजिनिजुत्तो ।  
 जोड करी असवारमाहि आपणि समरागरु ।  
 चडीय हींड चहुगमे जोह जो संधअसुहकरु ॥ ४ ॥  
 सेरीसे पूजियउ पासु कलिकालिहिं सकलो ।  
 सिरपेजि थाइउ धवलकए संघु आविउ सयलो ।  
 धंधूकड अतिकमिउ ताम लोलियाणइ पहुतो ।  
 नेमिभुवणि उछु करिउ पिपलालीय पत्तो ॥ ५ ॥

सप्तमी भाषा-संधिहिं चउरा दीन्हा तहिं नयरपरिसरे ।  
 अलजउ अंगि न माए दीठउ विमलगिरे ।  
 पूजिउ परचतराउ पणमिउ बहुभसिहिं ।  
 देसलु देयए दाणे मागणजणपंतिहिं ॥ १ ॥  
 अजियजिणिंदजुहारो मनरंगि करेवि ।  
 पणमइ सेत्रुजसिहरो सामिउ सुमरेवि ॥ २ ॥  
 पालीताणइ नयरे संध भयलि प्रवेसु ।  
 ललतसरोवरतीरे किउ संधनिवेसु ।  
 कज्जसहाय लहुभाय लहु आवियउ मिलेवि ॥ ३ ॥  
 सहजउ साहणु तीहिं थिन्हइ गंगप्रवाह ।  
 पासु अनइ जिण वीरो वंदिउ सरतीरिहिं ।  
 पंपि करइ जलकेलि सरु भरिउ बहुनीरिहिं ॥ ४ ॥  
 सेत्रुजसिहरि चडेवि संघु सामि उमाहिउ ।  
 सुलालिताजिणगुणगीते जणदेहु रोमंचिउ ।  
 सीयलो वायए वाओ भवदाहु ओल्हावण ।  
 माडीय नमिय मरुदेवि संतिभुवणि संघु जाए ॥ ५ ॥  
 जिणविबइ पूजेवी कवडिजस्तु जुहारण ।  
 अणुपमसरतडि होई पहुता सीहदुवारे ।  
 तोरणतलि वरसंते घणदाणि संधपत्ते ।  
 भेदिउ आदिजगनाहो मंडिउ पत्रीठमहूछवो ॥ ६ ॥



अष्टमी भाषा-चलउ चलउ सहियडे सेत्रुजि चडिय ए ।

आदिजिणपत्रीठ अम्हि जोहसउं ए ।

माहसुदि चउदसि दूरदेसंतर संघ मिलिया तहिं अति अवाह ॥ १ ॥

माणिके मोतिए चउकु सुर पूरइ रतनमइ वेहि सोवन जवारा ।

अशोकवृक्ष अनु आम्र पल्लवदलिहि रितुपते रचियले तोरणमाला ॥ २ ॥

देवकन्या मिलिय धवलमंगल दियइ किंनर गायहि जगतगुरो ।

लगनमहरहु सुरगुरो साथए पत्रीठ करइ सिधसूरिगुरो ॥ ३ ॥

भुवनपतिव्यंतरजोतिसुर जयउ जयउ करइ समरि रोपिउ त्रिदु धरमकंदो ।

हुंदुहि बाजिय देवलोकि तिहुअणु सोचिउ अभियरसे ॥ ४ ॥

देउ महाधज देसलो संघपते ईकोतर कुल ऊधरण ।

सिहरि चडिउ रंगि रूपि सोवनि यनि वीरि रतनि वृष्टि विरचियले ॥ ५ ॥

रूपमय चमर दुइ छत्त मेघाडंबर चामरजुयल अनु दिन्नदुत्ति ।

आदिजिण पूजिउ सहलकंतिहि कुसुम जिम कनकमयआभरण ॥ ६ ॥

आरतिउ धरियले भावलभत्तारिहिं पुवपुरिस सगि रंजियले ।

वानमंडपि थिउ समर सिरिहि चरो सोवनसिणगार दियइ पाचकजन ॥ ७ ॥

भक्ति पाणी य घरमुनि प्रतिलाभिय अचारिउ वाहइ दुहियदीण ।

धाविउ सुधम विहु सिद्धसेत्रि इंद्रउच्छवु करि ऊनरण ॥ ८ ॥

भोलीयनंदणु भलइ महोत्सवि आविउ समर आवासि गनि ।

तेरइकहत्तरइ तीरथउठारु यउ नंदउ जाव रविससि गयणि ॥ ९ ॥

मयमी भाषा-संघवाछलु करी वीरि भले मालहंतडे पूजिय दरिस्ण पाय ।

सुणि सुंदरे पूजिय दरिस्ण पाय ।

मोरठदेस संघु संघरिउ मा० चउंढे रयणि विहाइ ॥ १ ॥

आदिभक्तु अमरेलीयह मालहं० आविउ देसलजाउ ।

अलवेसरु अल जवि मिलए मालहं० मंडलिकु सोरठराउ ॥ २ ॥

ठामि ठामि उच्छव हुअइ मालहं० गदि जूनइ संपचु ।

महिपालदेउ राउलु आवए मालहं० सामुहउ संघअणुरचु ॥ ३ ॥

महिपु समर विउ मिलिय सोहइ मालहं० इंदु किरि अनइ गोविंदु ।

तेजि अगंजिउ तेजलपुरे मा० पूरिउ संघआणंदु । सुणि० ॥ ४ ॥

यउणथलीचेयप्रवादि करे मालहं० तलहटी य गदमाहि ।

ऊजिलऊपरि चालिया ए मालहं० चउज्विहसंघहमाहि । सुणि० ।

दामोदर हरि पंचमउ माल्हं० कालमेघो क्षेत्रपाल । सुणि० ।

सुवनरेहा नदी तहिं वहए माल्हं० तरुवरतणउं झमालु ॥ ५ ॥

पाज चडंता धामियह मा० क्रमि क्रमि सुकृत विलसंति । सुणि० ।

ऊची य चडियए गिरिकडणि मा० नीची य गति पोडंति ॥ ६ ॥

पामिउ जादवरायभुवणु मा० त्रिनि प्रदक्षिण देह ।

सिवदेविसुतु भेटिउ करिउ मा० उत्तरिया मदमाहि । सुणि० ।

कलस भरेविणु गयंदमए मा० नेमिहिं न्हवणु करेह ।

पूज महाधज देउ करिउ मा० छत्र चमर मेलहेह ॥ ७ ॥

अंबाई अवलोयणसिहरे मा० सांबिपज्जूनि चडंति । सुणि० ।

सहसारासु मनोहर ए मा० बिहसिय सबि वणराइ । सुणि० ।

कोइलसाडु सुहावणउ ए मा० निसुणियइ भमरझंकार । सुणि० ॥ ८ ॥

नेमिकुमरतपोवनु ए मा० दुट्ट जिय ठाउं न लहंति । सुणि० ।

इसइ तीरथि तिहुयणदुलभे मा० निसिदिनु दानु दियंति ॥ ९ ॥

समुदविजयरायकुलतिलय मा० बीनतडी अवधारि । सुणि० ।

आरतीमिसि भविषण भणइं मा० चतुगलिफेरडउ वारि । सुणि० ॥ १० ॥

जइ जगु एकु मुहु जोहयए मा० त्रिपति न पामियइ तोह । सुणि० ।

सामलधीर तउं सार करे मा० बलि बलि दरिसणु देजि । सुणि० ॥ ११ ॥

रलीयरेवयगिरि उत्तरिउ ए मा० समरडो पुरुषप्रधानु ।

घोडउ सीफिरि सांकलिय मा० राउलु दिपइ बहुमानु । सुणि० ॥ १२ ॥

बहामी भापा-रितु अवतरियउ तहिं जि वसंतो सुरहिकुसुमपरिमल पूरंतो

समरह बाजिय विजयदह ।

सागुसेलुसलइसच्छाया केतुयकुडयकयंवनिकाया

संघसेनु गिरिमाहइ वहए ।

बालीय पूछइं तरुवरनाम घाटइ आवइं नव नव गाम

नयनीझरणरमाउलइं ॥ १ ॥

देयपटणि देवालउ आवइ संघह सरवो सरू पूरावइ

अपूरवपरि जहिं एक दृईअ ।

तहिं आवइ सोमेसरछत्तो गउरवकारणि गरुड पट्टना

आपणि राणउ मृगराजो ॥ २ ॥

पान फूल कापड बहु दीजइं लणसमउं कपूर गणीजइ

जवाधिहिं मिरु टिपियए ।

ताल तिबिल तरविरियां वाजहं ठामि ठामि धाकणा करीजहं  
 पगि पगि पाउल पेपण ए ॥ ३ ॥  
 माणुस माणुसि हियउं दलिजह घोडे वाहिणिगाहु करीजह  
 हयगय सूझह नवि जणह ।  
 दरिसणसउं देवालउ चल्ह जिणसासणु जगि रंगिहिं मल्ह  
 जगतिहिं आन्या सिवमुवणि ॥ ४ ॥  
 देवसोमेसरदरिसणु करेवी कबडिबारि जलनिहिं जोएवी  
 प्रियमेलह संघु उत्तरिउ ।  
 पहुचंदप्पहपय पणमेवी कुसुमकरंदे पूज रएवी जिणमुवणे  
 उच्छवु कियउ ॥ ५ ॥  
 सिवदेउलि महाधज दीधी सेले पंचे धन्नसमिद्धी अपूरवु उच्छवु  
 कारविउ ।  
 जिनधरधरमि प्रभावन कीधी जयतपताका रवितलि बन्दी दीनु  
 पयाणउं दीवभणी ।  
 कोडिनारिनिवासणदेवी अंबिक अंबारामि नमेंधी दीवि  
 वेलाउलि आवियउ ए ॥ ६ ॥

एकादशी भापा-संघु रयणापरतीरि गहगहए गुहिरगंभीरगुणि ।  
 आविउ दीवनरिंदु सामुहउ ए संघपतिसवदु सुणि ॥ १ ॥  
 हरपिउ हरपालु चीति पहुतउ ए संघु मोलविकरे ।  
 पभणई दीवह नारि संघह ए जोअण उतावली ए ।  
 आउलां वाहिन वाहि वेगुलह ए चलावि प्रिय वेडुली ए ॥ २ ॥  
 किसउ सुपुन्नपुरिपु जोइउ ए नयणुलां सफल करउ ।  
 नियछणा नेत्रि करेसु उन्नारिस् ए कपूरि उआरणा ए ।  
 वेडीय वेडीय जोडि वलियऊ ए कीधउं बंधियारो ॥ ३ ॥  
 लेउ देवालउमाहि बहठउ ए संघपति संघसहिउ ।  
 लहरि लागाहं आगासि प्रवहणु ए जाह विमान जिम ।  
 जलपटनाटकु जोह नवरंग ए रास लउडारस ए ॥ ४ ॥  
 निरुपमु हाह प्रयेसु दीसई ए रुवडला घवलहर ।  
 तिहां अच्छह कुमरविहाक रुमडऊ ए रुमडुला जिणमुवण ।  
 तीपंकर तीह चंदेवि धंदिऊ ए सपंभू आदिजिणु ।

दीठउ बेणिवच्छराजमंदिरु ए मेदनीउरि घरिउ ।

अपूरबु पेपिउ संघु उत्तारिक ए पइली तडि समुदला ए ॥ ५ ॥

द्वादशी भापा-अजाहरवरतीरथिहिं पणमिउ पासजिणिंदो ।

पूज प्रभावन तहिं करहिं अज्जिउ ए अज्जिउ ए अज्जिउ सफल सुछंदो ॥ १ ॥

गामागरपुरबोलितो बलिउ सेतुजि संपत्तो ।

आदिपुरीपाजह चडिऊ ए वंदिऊ ए वंदिऊ ए वंदिऊ ए मरुदेविपूतो ॥२॥

अगरि कपूरिहिं चंदणिहि मृगमदि मंडणु कीय ।

कसमीराकुंकुमरसिहिं अंगिहिं ए अंगिहिं ए अंगो अंगि रचीय ।

जाइवडलविहसेवत्रिय पूजिसु नाभिमल्हारो ।

मणुयजनसुफलु पामिऊ ए भरियऊ ए भरियऊ ए भरियऊ सुकृतमंडारो॥३॥

सोहग ऊपरि मंजरिय बीजी य सेतुजि उधारि ।

.....ठिय ए समरऊ ए समरऊ ए समर आविउ गुजरात ।

पिपलालीय लोलिघणे पुरे राजलोकु रंजेई ।

छडे पयाणे संचरए राणपुरे राणपुरे राणपुरे पहुचेई ॥ ४ ॥

बडवाणि न विलंबु किउ जिमिउ करीरे गामि ।

मंडलि होईउ पाडलए नमियऊ ए नमियऊ ए नमियऊ नेमि सु जीवतसामि ।

संखेसर सफलीयकरणु पूजिउ पासजिणिंदो ।

सहजुसाहु तहिं हरपियउ ए देपिऊ ए देपिऊ ए देपिउ फणिमणिबुंदो ॥ ५ ॥

हुंगरि डरिउ न खोहि खलिउ गलिउ न गिरवरि गव्वो ।

संघु सुहेलइ आणिउ ए संघपती ए संघपती ए संघपतिपरिहिं अपुब्बो ॥ ६ ॥

सज्जण सज्जण मिलीयतहिं अंगिहिं अंगु लियंते ।

मनु विहसइ ऊलटु घणउ ए तोडरू ए तोडरू ए तोडरू कंठि ठवंते ॥ ७ ॥

मंत्रिपुत्रह मीरह मिलिय अनु बवहारियसार ।

संघपति संघु घधावियउ कंठिहिं ए कंठिहिं ए कंठिहिं घालिय जयमाल ।

तुरियघाटतरवरि य तहिं समरउ करइ प्रवेसु ।

अणहिलपुरि बडामणउ ए अभिनवु ए अभिनवु ए अभिनवु पुत्रनिवासो॥८॥

(संवच्छरि इकहत्तरए थापिउ रिसहजिणिंदो ।

१३१

चैत्रवदि सातमि पढुत घरे नंदऊ ए नंदऊ ए नंदऊ जा रविचंदो ॥ ९ ॥

पासडसुरिहिं गणहरह नेऊअगच्छनिवासो ।

तसु सीसिहिं अंबदेयसुरिहिं रचियऊ ए रचियऊ ए रचियऊ समरारासो ।

एहु रासु जो पढइ गुणइ नाचिउ जिणहरि देइ ।

श्रवणि सुणइ सो वषठऊ ए तीरथ ए तीरथ ए तीरथजात्रफल लेई ॥ १० ॥

इति श्रीसद्यपतिसमर्पसिंहरास ॥

## सिरिथूलिभदफागु ।

पणमिय पासजिणंदपय अनु सरसइ समरेवी ।

धूलिभदमुणिवइ भणिसु फागुबंधि गुण केवी ॥ १ ॥

अह सोहगसुंदररुववंतु गुणमणिभंडारो ।

कंचण जिम झलकंतकंति संजमसिरिहारो ।

धूलिभदमुणिराउ जाम महिपलि बोरंतउ ।

नयररायपाडलियमाहि पढुतउ विहरंतउ ॥ २ ॥

वरिसालइ चउमासमाहि साह गहगरिया ।

लियइ अभिगाह गुरह पासि नियगुणमहमहिया ।

अज्जविजयसंनूपसुरि गुरु वष मोकलावइ ।

तसु आणसि मुणोस कोसरेसाघरि आवइ ॥ ३ ॥

मंदिरतोरणि आवियउ मुणिवरु पिरेकी ।

चमकिय चित्तिहि दासडिय वेगि जाइ वधावी ।

वेसा अतिहि उतावलि य हारिहि लहकंती

आविय मुणिवररायपासि करयल जोडंती ॥ ४ ॥

भास—धर्मलामु मुणिवइ भणिसु चित्रसाली मंगेवी ।

रहियउ सीलकिसोर जिम घोरिम हियइ घरेवी ॥ ५ ॥

१ क्षिरिमिरि क्षिरिमिरि क्षिरिमिरि न मेहा वरिसंति ।

गलहल गलहल गलहल न बाह्ला वरंति ।

झवझव झवझव झवझव न धौजुलिय झवरुड ।

थरहर थरहर थरहर न विरहिणिमणु कंपइ ॥ ६ ॥

महुरगंभीरमरेण मेह जिम जिम गाजंते ।

पंयराण निय कुसुमवाण निम तिम साजंते ।

जिम जिम येनकि महमहंत परिमल चित्सावइ ।

तिम निम कामि य चरण लगि नियरमणि मनावइ ॥ ७ ॥

सीयलकोमलसुरहि वाय जिम जिम वायंते ।  
 माणमडप्फर माणणि य तिम तिम नाचंते ।  
 जिम जिम जलभरभरिय मेह गयणंगणि मिलिया ।  
 तिम तिम कामीतणा नयण नीरिहि झलहलिया ॥ ८ ॥

भास—मेहारवभरज्जलटि य जिम जिम नाचइ मोर ।  
 तिम तिम माणिणि खलभलइ साहीता जिम चोर ॥ ९ ॥

<sup>१</sup>/अइ सिंगारु करेइ वेस मोटइ मनज्जलटि ।  
 रइयरंगि बहुरंगि चंगि चंदणरसज्जगटि ।  
 चंपयकेतकिजाइकुसुम सिरि पुंभ भरेइ ।  
 अतिआलउ सुकमाल चीरु पहिरणि पहिरेइ ॥ १० ॥  
 लहलह लहलह लहलह ए उरि मोतियहारो ।  
 रणरण रणरण रणरण ए पनि नेउरसारो ।  
 झगमग झगमग झगमग ए कानिहि वरकुंडल ।  
 झलहल झलहल झलहल ए आभरणहं मंडल ॥ ११ ॥  
 मयणखग जिम लहलहंत जसु वेणीदंडो ।  
 सरलउ तरलउ सामलउ रोमावलिदंडो ।  
 तुंग पयोहर उल्लसइ सिंगारथवक्का ।

कुसुमबाणि निय अमियकुंभ किर थापणि मुक्का ॥ १२ ॥

भास—काजलि अंजिवि नयणजुय सिरि संथउ फाडेई ।  
 बोरीपावडिकांचुलिय पुण उरमंडलि ताडेइ ॥ १३ ॥  
 कन्नजुपल जसु लहलहंत किर मयणहिंडोला ।  
 चंचल चपल तरंगचंग जसु नयणकचोला ।  
 सोहइ जासु कपोलपालि जणु गालिमसूरा ।  
 कोमल विमल सुकंठु जासु वाजइ संखतूरा ॥ १४ ॥  
 लवणिमरसभरकूवडिय जसु नाहि य रेहइ ।  
 मयणराय किर विजयखंभ जसु ऊरु सोहइ ।  
 जसु नहपल्लव कामदेवअंकुस जिम राजइ ।  
 रिमिझिभि रिमिझिभि ए पायकमलि घाघरिय सुवाजइ ॥ १५ ॥  
 नवजोवनविलसंतदेह नवनेहगहिछो ।  
 परिमललहरिहि मयभयंत रइकेलिपहिछो । -

अहरबिं व परवालखंड वरचंपावन्नी ।

नयणसल्लणी य हावभाववहुगुणसंपुत्री ॥ १६ ॥

भास—इय सिणगार करेवि वर जव आवी मुणिपासि ।

जोएवां कउतिगि मिलिय सुरकिंनर आकासि ॥ १७ ॥

१ अह नयणकड<sup>क</sup>हं आहणए वांकउ जोवंती ।

हाव भाव सिणगार भंगि नवनवि य करंति ।

तह वि न भीजइ मुणिपवरो तउ वेस बोलावइ ।

तवणतुलु तुह देह नाह मह तणु संतावइ ॥ १८ ॥

बारहवरिसहंतणउ नेहु किणि कारणि छंछिउ ।

एवइ निठुरपणउ कंइ मूसिउ तुम्हि मंडिउ ।

धूलिभइ पभणेइ वेस अह खेदु न कीजइ ।

लोहिहि घडियउ हियउ मज्झ तुह वयणि न भीजइ ॥ १९ ॥

मह विलंबंति य उवरि नाह अणुराग धरीजइ ।

एरिसु पांवसु कालु सयलु भूसिउ माणीजइ ।

मुणिघइ जंपइ वेस सिद्धिरमणी परिणेवा ।

मणु लीणउ संजमसिरीहिसुं भोग रमेवा ॥ २० ॥

भास—भणइ कोस साचउ कियउ नवलइ राचइ लोउ ।

मूं मिलिहवि संजमसिरिहि जउ रातउ मुणिराउ ॥ २१ ॥

उवसमरसभरपूरियउ रिसिराउ भणेइ ।

चितामणि परिहरवि कवणु पत्थरु गिहेइ ।

तिम संजमसिरि परियएवि बहुधम्मसमुज्जल ।

आलिंगइ तुह कोस कवणु पसरंतमहावल ॥ २२ ॥

पहिलउ हिवडा कोस कहइ जुव्वणफलु लीजइ ।

तयणंतरि संजमसिरीहि सुह सुहिण रमीजइ ।

मुणि वोळइ जि मइ लियउ तं लियउ ज होइ ।

कवणु सु अच्छइ भुवणतले जो मह मणु मोहइ ॥ २३ ॥

भास—इणपरि कोसा अवगणिय थूलिभइमुणिराह ।

तसु धीरिम अवधारिकरि चमकिय चित्ति सुहाइ ॥ २४ ॥

अइवलवंतु सु मोहराउ जिणि नाणि निघाडिउ ।

झाणवडगिण मघणसुभड समरंगणि पाडिउ ।  
 कुसुमघुट्टि सुर करइ तुट्टि हुउ जयजयकारो ।  
 धनु धनु एहु जु थूलिभद जिणि जीतउ मारो ॥ २५ ॥  
 पडिबोहिवि तह कोसवेस चउमासिअणंतरु ।  
 पालिय भिग्गह ललिय चलिय गुरुपासि मुणीसरु ।  
 दुधरदुधरकारगु त्ति सरिहि सु पसंसिउ ।  
 संखसमुज्जलजसु लसंतु सुरनरहं नमंसिउ ॥ २६ ॥  
 नंदउ सो सिरिधूलिभद जो जुगह पहानो ।  
 मलियउ जिणि जगि मल्लसल्लरइवल्लहमाणो ।  
 नरतरगच्छि जिणपदमसरिकियफागु रमेवउ ।  
 खेला नाचडं चैत्रमासि रंगिहि गावेवउ ॥ २७ ॥  
 ॥ सिरिधूलिभदफागु समत्तु ॥

## जवूसाभिचरिय

जिण चउवीसड पय नमेवि गुरुचलण नमेवी ।  
 जवूसाभिहितणउं चरिय भविउ निसुणेवी ।  
 करि सानिध सरसत्तिदेवि जिम रघं कहाणउं ।  
 जवूसाभिहि गुणगटण संखेवि वपाणउं ॥ १ ॥  
 जंवूदीपह भरहखिस्ति तिहि नयरपहाणउं ।  
 राजगृह नामेण नयर पहुवि वक्कणउं ।  
 राज करड सेणियनरिद नरवरहं जु सारो ।  
 तासुतणइ पुत्त बुद्धिमंत मंति अभयकुमारो ॥ २ ॥  
 अन्नदिणंतरि वद्धमाण विहरंत पट्टतउ ।  
 सेणिउ चालिउ वंदणह बहुभत्तिउरंतु ।  
 मागि वहंतु माहाराज केसउं पेखेड ।  
 भोगविरत्तउ पसनचंद बहुतवण तवेइ ॥ ३ ॥  
 धनु धनु माया एहरसि पसंसिउ वंदइ ।  
 दुमुग्ववयणि सो चलिउ ध्यानि कुमारगि चल्लड ।  
 धम्मलाभ नयि दीयइ जाम मुनि हूउ अभाओ ।



ईहं सह को एक मानि रंको अनु राओ ॥ ४ ॥  
 सामिष बंदिउ वद्धमाण सेणीयं पूछीहं ।  
 जइ पसनचंद हिव करेइ काल कीछे ऊपजइ ।  
 मन जाणेविण पसनचंद सामी बोलीजइ ।  
 नरगावासइ सातमए नीछइ ऊपजइ ॥ ५ ॥  
 बीजी पूछहं मणुय होइ बीजी अणउत्तर ।  
 बुंदुहि बाजी देवकीय चालीय तिहिं सुरवर ।  
 सेणिउ पूछइ सामिसाल काहां जाईजइ ।  
 केवलमहिमा पसनचंद देवे कीजीजइ ॥ ६ ॥  
 सेणिउ मनि चिंताचडिओ सामी बलि पूछइ ।  
 जं प्रभु तम्हे बोलीयउं तं अम्हे न बूझिउं ।  
 सेणिय तम्हि बूझियउं तअं तिसउं त होए ।  
 मणपरिणामह चिसमगति जीवहं पुण होइ ॥ ७ ॥  
 केवलनाणउ भरहखेति केतुं यरतेसिइ ।  
 सामी दापीउ विज्जुमालियउ छेदु होसिइ ।  
 चउसट्ठि देवे परियरिउ चउदेवे सहीउ ।  
 अतिसइ दीसइ देहकंति सेणीचिति चडीउ ॥ ८ ॥  
 देवहं नवि हुइ एहु नाणु थउ किम होएसिइ ।  
 आजूना दीह सातमए इणि नपरि चवेसिइ ।  
 किकारण पुण एहकंति किंस्यह अतिसउ ।  
 कवणह धम्महतणइ भावियउ देवअइसउ ॥ ९ ॥

ठवणि—महाविदेहतणइ विजय बीतसोय नपरी ।

पदमरथ नामेण राउ वनमाला धरणी ।  
 तास ऊयरि ऊपन्न पुत्रु सुरलोयहहंतु ।  
 वद्ध नामिहं सिवकुमार बहुगुणिहिं संजुत्तउ ॥ १० ॥  
 पुन्वभवंतरतणइ नेहि सागरमुणि एहुतु ।  
 आबीउ बंदण सिवकुमार बहुभक्तितुरंतउ ।  
 हउं जानउं त् मुणिहिं नाह कीछे मइं दीठउ ।  
 एह जन्मह तइयभवि मुझ भाइ य हंतउ ॥ ११ ॥  
 ऊहापोह करेहि जाम पाछिलउ भय देणइ ।

जा मइं मूकी सुरह रिद्धि या कीणइं लेखइं ।  
 तु चिंताविउ सिवकुमार अथिरउ संसारो ।  
 भवनिन्नासण लेइसिउं अम्हि संजमभारो ॥ १२ ॥  
 माइ न मेल्हइं एकपूत सो मुनिहिं थाई ।  
 दृढधम्मेण सावणण जायवि बोलावीउ ।  
 पारि पारि दृढधम्म भणइ अम्ह भणीउ कीजइ ।  
 दुल्लभ वेडी मणुयजम्म जतनिहिं रापीजइ ॥ १३ ॥  
 कहइ धम्म सो मुनिहिं जाम तसु वयण मनेई ।  
 बिहुं उपवासहं पारणइ ए आंबिल पारेई ।  
 फासुयवेसण भस्सपाण दृढधम्मो आणइ ।  
 माहि थीउ अंतेउरहं सो सील ज पालइ ॥ १४ ॥  
 नवकरवालीतीपधार करमं सवि सूडइ ।  
 निहणइ मोहकंदप्पराउ भवपरीयण मोडइ ।  
 बारहं वरसंहतणइ अंति आऊपूं पूरीजइ ।  
 पंचमदेवलोकि सिवकुमार सो देव ऊपजइ ॥ १५ ॥  
 कवणह नारिहितणइ उयरि एह जीव चयेसिइ ।  
 कवणह वापहतणइ कुलि एउ मंडण होसिइ ।  
 उसभदत्तसेठिहिं घरणि धारणिउरि नंदण ।  
 होसिइ नामिइं जंबुसामि तिहुयणि आणंदण ॥ १६ ॥  
 ऊठीउ देय अणाढिउ हरपिइं नाचेई ।  
 धनु धनु अम्हतणउं कुल एसु पुत्त होसिइ ।  
 चविउ विमाणह बंभलोय धारणिउरि आविउ ।  
 सुमिणप्रभाविइं उसभदत्त अंगेहि न माईउ ॥ १७ ॥  
 जायउ पुत्रु पहाण जाम दसदिसि उदयंतउ ।  
 वडइ नामिहिं जंबुसामि गुणगहण करंतु ।  
 अठवरीसउ हुउ जाम गुरुपासि पट्टु ।  
 ब्रह्मचारि सो लियइ नीम भववासविरत्तउ ॥ १८ ॥  
 जोयणवेसह पट्टु जाम कत्ता मग्गावइ ।  
 बीजा धूया पाठवए तस विवारा वय ।  
 मन देजिउं तम्हि अम्ह देसु अम्हि इसउं करेदाउं ।

सांझहं परणी प्रहृ जाम नीछइं व्रत लेसिउं ॥ १९ ॥  
 माय दुल्लंघीय तणइं वयणि परिणैवउ मनीउ ।  
 आठइ कन्या एकवार परिणीय घरि आवीउ ।  
 आठइ परणी मृगनयणी बूझवणइ बइठउ ।  
 पंचसपंचोरेहंसिउं प्रभवउ घरि पइठउ ॥ २० ॥  
 नीद्र अणावीय सोयणीय आभरण लीयंता ।  
 ते सवि अछइं थंभीया टगमग जोयंता ।  
 प्रभवउ भणइ हो जंबुसामि एक साठि ज कीजइ ।  
 विहुं विज्जावडइं एक विज्ज थंभणीय ज दीजइ ॥ २१ ॥  
 हिष हूं कहि नवि ज लेवि पुण किसउं करेसो ।  
 आठइ परणी ससिवयणी नीछइं व्रत लेसो ।  
 रूपवंत अणुरत्त रमणि गउ एम चणसिइ ।  
 अणहंतासुहृतणी य आस सुहृ जीव करेसिउ ॥ २२ ॥  
 एवडु अंतर नरहं होइ प्रभवउ चिंतेई ।  
 संवेगरसि जउ गयउं मन प्रभवउ पूछेई ।  
 सिद्धिरमणिऊमाहीया ह तमिह संजम लेसिउ ।  
 कण्णइं विलयइं माइवप्प किम किम मेल्लेसिउ ॥ २३ ॥  
 इंदियाल नवि जाणीइ ए को किम होइसिइ ।  
 अढार नात्रां एकभवि जंबुसामि कहेई ।  
 पितर तम्यारा जंबुसामि किम तृपति लहेगइं ।  
 पिंड पइइ लोयहंतणइ ए ऊभा जोसिइं ॥ २४ ॥  
 वाप मरवि भईसु हुऊ पुत्रजन्मि हणीजइ ।  
 इणपरि प्रभवा पितरतृप्ति तिणि धीवरि कीजइ ।  
 अणहंतासुहृतणी य आस हूं तउं छांडेसिउ ।  
 तिण करसणि जिम कलत्र भणइ अवतरता करेसिउ ॥ २५ ॥  
 तमह रुपिहि हउं लोभ करउं देयि मणहर रूपउं ।  
 हत्थिकडेवर काग जिम भवसायर निवडउं ।  
 बीजी कलत्र कहेवि नाह जइ अमह छंडेसिउं ।  
 तिणि बानरि जिम पच्छुताव बहु चींति धरेसिउं ॥ २६ ॥  
 बिडुसमाणउं विसयसुख आदर किम कीजइ ।

इंगालवाहग जेम तुम्हि तूस किम न छीपइ ।  
 चीजी कलत्र भणहवि नाह जउ अम्ह छांडेसिउ ।  
 तिणि जंबुकि जिम साणहार बहुखेद करेशउ ॥ २७ ॥  
 उत्तर पडि उत्तर वह य संखेवि कहीजइ ।  
 विलखी हुई ते सखि बाल जंबूसामि न बूझइ ।  
 आसातरुवर सुक जाम अम्हि इशउं करेशउं ।  
 नेमिहिसिउं राइमइ जिम वयगहण करेशउं ॥ २८ ॥  
 आठइ कलत्रह बूझवीय पंचसयसिउं प्रभवउ ।  
 माइ दाप बेउ भणइ ताम अम्ह साधुसरीसउ ।

ठबणि — प्रह बिहसइ सुविहाण प्रभवु विनवड जंबूसामि ।  
 सजनलोक मोकलावि तम्हिसिउं संजम लेसिउं ॥ २९ ॥  
 ग्वण एक पडबाएवि राय मोकलावण चालीय ।  
 तु सुहृदसमूह करेवि भुइं कंपइ भइभडवडं ॥ ३० ॥  
 जस भय भसकइ राउ जस भय नींद्र न वपरीयहं ।  
 एसउ प्रभवउ जाइ नरनारी जोयण मिलीय ।  
 पधुतु रायदुवारि पडिहारिइं बोलावीउ ।  
 वेगिइं राउ भेटावि अम्हि अछउं उत्सुकमणा ए ॥ ३१ ॥  
 पुत्तणउ विझ राय तुम्ह दरिसणि ऊमाहीउ ओ ।  
 कारण जाणीउ राय वेगिहिं सो मेल्हावीउ ओ ।  
 ट्रेठि न ग्वंडइ राउ प्रभवउ देपी आवतउ ।  
 साचउ ए भडिवाउ पुरुषह आकृति जाणीइ ए ॥ ३२ ॥  
 रूपगुणे संपन्न रायरमणिमन चोरतु ओ ।  
 सोहइ पूलिप्रचंद उडउव कोणी प्रणम्येउ ।  
 नुतउ अद्धसीय शरीर जइ कोह जणणीजाइउ ।  
 नयणे छूई नीर संवेगजलहरि वरिसिउ ।  
 सामी ग्वमि अपराध अम्हे लोरु संतावीया ए ॥ ३३ ॥  
 पडिबज बोल्इ राउ कोणी मनि आणंदियउ ।  
 धन पनुती माइ इसिउ पुत्र जिणि जाईउ ओ ।  
 तो मोरुलावी राउ चोरपल्ली सासंचरण ।  
 सजनह कहीहं एउ अम्हे संजम लेइशउं ॥ ३४ ॥

કિણ કારણિ ચરણ તં કારણ અમ્હ ચોલીદ એ ।  
 મેલ્હી અટ્ટહ વાલ કણયકોહિ નવાણવહ એ ।  
 અમ્હ રિદ્ધિ વહત તિહિ પુણ પાર ન જાણીયએ ।  
 જંબૂસામિચરિત્ત મહિમંટલિ હૂંડે અચ્છરીય ॥ ૩૫ ॥  
 ઇણિ કારણિ ચરણ ત્તુણ જિમ દીઠડ મેલ્હતડ ઓ ।  
 અમ્હ સોઢ જિ સામિ નમ્હે યન્દ્રં અછજિડ ઓ ।  
 મોત્તરિદ્દણં ઘ્રૂણ મંજમરિદ્દિં ઘ્રૂણસિડે ઓ ॥ ૩૬ ॥

ટવણિ—પ્રમથડ પંચમણ અટ્ટવરણમાઢવણો ।  
 મવિકલં એ સ્તુડ જાઢ નાંચવરંદુ નોંસરંદ એ ।  
 ચાલોડ એ સિવપુરિમાય મારથવય તિહિ જંબુસામિ ।  
 તિટ્ટયણો એ જયજયકાર મોહમ દેપોડ જંબુસામિ ।  
 યંચણ એ રણિહિ દાણ જિમ ઘણ ઘરમ્હ ભાઢવણ ।  
 મપતક એ રંદ ગોલોંક મવિયજણમંચેગરો ॥ ૩૭ ॥

ટવણિ—પ્રમથેર્ગ પિઢ માટ પુચ કલત્ર થત ઘણ ।  
 દેમો કુદિમારિચ્છ જિણ જિમ જંબૂ પરિત્તર એ ।  
 અમ્હ લોંક થાન થન લેયા તિહિ ચાલીડ ।  
 પંદિય જિણમરણાં મોહમ્મમામિપામિ ગયડ ॥ ૩૮ ॥  
 મવસાપર ઝગારિ જમ્મણ મરણત ચોત તડ ઓ ।  
 પંચમાવ્યયમાર મેરમ્મમાણડ ઝંગમદ એ ।  
 અનુ તેનડ પરિવાર મોહમમામિહિ દિરકોડ ઓ ।  
 જૂડે વેરમ્મત્રાણ મંજમરાજ એ ચાલનાં એ ॥ ૩૯ ॥  
 ધારજિણિદા નોંચિ વેચલિ જૂડ પાણિલડ ।  
 પ્રમથડ ઘટસારોડ પાટિ મિદ્ધિ પરુતુ જંબુમ્યામિ ।  
 જંબુમામિપરિમ પટ્ટં ગુણં જે મંચલદં ।  
 મિચ્છિસુગ્ગ અણં તે નર મોંચાહિ પામિમિદં ॥ ૪૦ ॥  
 મહિદ્ગુરિસુગ્ગોમ પામ્ય મણદ દો પામોંકદ ।  
 વિનડ રામિદિપમિ જે મિચ્છિદિ ઝમ્મણીયા એ ।  
 ઘાઢધરમમણિ કવિતુ નોંપનું ઘાઢધર ॥  
 માઢદ વિજ્ઞાણયિ દુગિય પળામડ મળત્તમંડ ॥ ૪૧ ॥  
 રાં ખીમ્મરુગિમ ॥

## सप्तशेत्रिरासु

सवि अरिहंत नमेवी सिद्ध सूरि उवझाय ।

पनरकर्मभूमिसाहू तीह पणमिय पाय ॥ १ ॥

जिणसासणहमाहि जो सारो चउदह पूरवतणउ समुधारो ।

समरिउ पंचपरमिष्ठि नवकारो सप्तशेत्रि हिव कहउ विचारो ॥ २ ॥

धुनु धुनु ते जि संसारे जीहं जिणवर स्वामी ।

गुरु सुसाहू जिणभणिउं धम्म सुगण्डगामी ॥ ३ ॥

बारि अंगि दुलहु मणुजम्म अनी अ विशेषिहि जिणवरधम्म ।

सम्मत्त रयणु चित्ति निवसइ जीह सोहग ऊपरि मंजरि तीह ॥ ४ ॥

पुणु जिणसासणु दुलहउं जीव संमलि कथनु निरुपमु ।

नाणुपहाणु एकु जि जिनवरधम्म ॥ ५ ॥

भरहखित्ति खट्पंडह थित्ति केवलनाणि जिणवर जंपंति ।

धैताढ्यपरहां त्रिभि खंड होइ तहि धरमनामु निवरतन तोइ ॥ ६ ॥

उल्या त्रिहु खंडि थित्ति केवलि इम आपइ ।

तीहमांहि दुनि पंडने पडिया पापइ ॥ ७ ॥

मज्झिम पंड इकु वइनी मडिउ तेउ त्रिहुभाणि पाछइ पडिउं ।

चउथउ भाग धरमनइ लागे तेउ जोईजइ सवमइ भागे ॥ ८ ॥

ते अ नवाणवइ भाग साहू मित्थातिहि जडिउं ।

थाकतउं कुमतिकुबोधिकुगुरुगहि पडिउं ॥ ९ ॥

थोडा जीव केई दीसंते जे जिणभणिअं मनिहि करंति ।

हिव तिहुपणिहि सारु समिकत्तु पामिउ जीवि जिनभणिउ नवतत्तु ॥ १० ॥

वार वरत तई पामिउ जे जिणवरि वुत्ता ।

सुगइनिबंधण सत्ता जीव सुगति दीयंता ॥ ११ ॥

प्राणातिपातव्रतु पहिलउं होई बीजउ सत्यवचनु जीव जोई ।

त्रीजइ व्रति परधनपरिहारो चउथइ शीलतणउ सचारो ॥ १२ ॥

परिग्रहतणउं प्रमाणु व्रतु पांचमइ कीजइ ।

इणपरि भवह समुदो जीव निअय तरीजइ ॥ १३ ॥

छट्ठउं व्रतु दिसितणउ प्रमाणु भोगुवभोगव्रत सातमइ जाणु ।

अनरथव्रतु दंड आठमउं होइ नवमउं व्रत सामायकु तोइ ॥ १४ ॥

देसावगासी दसमुं व्रतु नथी मूल ।

पोषधव्रतु इग्यारमउ संजमसमतूल ॥ १५ ॥

व्रतु बारमउं अतिथिसंविभागुउ तोइ मुकतिनयर न न मागो ।

जे ईणइ मारणि चालइ संसारे धनु सक्रियारथ ते नरनारे ॥ १६ ॥

समकितमूल व्रतु बारइ गहियवरमि पालेवउ ।

ससक्षेत्रि जिनभणिया तिह वित्तु वावेवउ ॥ १७ ॥

ससक्षेत्रि जिन कहिया महामुनि वित्तु वावेजिउ विवहपरे ।

जिनवचनु आराधीउ अवक्कमु साधिउ लहइ पारु संसारसरे ॥ १८ ॥

ससक्षेत्रि जिनसासणिहि सबली कहीजइ ।

अथिरु रिधि धनु द्रव्यु बीजउ तहि जि वावीजइ ।

तेहि क्षेत्रि वावेघ्रणा धानकि लाभइ देवलोकौ ।

कणनी थाहरु मुक्तिफलो पामउ निसंदेहो ॥ १९ ॥

पहिलउं क्षेत्र सु जिणइ भुयण करावउ चंगू ।

जीछे महिमा करइ सहु श्रीचउविहसंघू ।

मूलगभारउगूढमंडपुछकुचउकीसहिउ ।

आगइ कीजइ रंगमंडपु जो पुस्तकि कहिउ ॥ २० ॥

तहिं आतरइ बलामणु कीजइ आवेरउ ।

जिम जिनभयनइ नालिमाहि दीसइ नीकेरउं ।

उत्तंगतोरणु धंभथोरु घांटु अतिनीकउ ।

कडीपइ नानाविधि रुपि सारु चारु तहि नीसलु जडिउ ॥ २१ ॥

विहु पक्ष फरती देहरी कीजइ अतिरूडी ।

ठवीजइ मूर्ति जिनहतणी माहि तेवड तेवडी ।

कणयकलस दंड घांटीइ धज पूरीय कियजइ ।

छोहपकनप्रासाहु भलउ जीव नीपाइजइ ॥ २२ ॥

तहि जिनवारिं कमाड भलां कीजइ अतिसुविघट ।

सारुभार दद प्रागू ए जो आवइ संपुट ।

तालां कूंची सांकली अतिनीसल कीजइ ।

जउ आयमणह जाइ मूर तउ संपुट दीजइ ॥ २३ ॥

अनिमउ जिणइ भुयणु किरि अमरविमाणु ।

दांसइ मूरनि धीनराग माहि तिहुगणुमाणु ।

कवण रूप धीतरागतण जोइ कवण विशेष ।  
 अठ प्रतिहारि ज जिणहतणइ वृक्ष होइ अशोक ॥ २४ ॥  
 भामंडलसुरकुसुमवृष्टिसीहासणुछत्तू ।  
 भेरिचमरदेवंडुणिहिण जोइ कवण प्रसुत्तू ।  
 ए धिति एसी धीतराग मेलही अवर न होई ।  
 सारादिक जिनसेव करइ नवि सगलइं जोई ॥ २५ ॥  
 तउ जिनजीर्णउद्धारु भवि जीव विशेषिहि करीयइ ।  
 भागउ लागउ जिणह भुवणि तेउ तोइ समुद्धरियइ ।  
 लीपिउ धउलीउ भीगु देइ चीत्रामु लिपीजइ ।  
 इणपरि भुयणु समारीय जन्मह फलु लीजइ ॥ २६ ॥  
 अनोउ जु काहं किंपि ठामु जिणभुवण सीदाइ ।  
 तं निश्चिहं करावीयए बहुफलु बोलाइ ।  
 आपणि सामिउ धीतरागु ईणपरि भणेइ ।  
 जीर्णोद्धारहतणा पुण्य तेह अंत न होइ ॥ २७ ॥  
 बीजं खेनु सुजिनह बिबु ते इहां बिचारो ।  
 मणिमय रयण सुवर्णमए बिब रूपम कारो ।  
 द्विव जिनभुवणह गृहचैत्यदेवरा छ कहीसइ ।  
 कीजइ कणयभिगार कलस जे नीर भरीसइ ॥ २८ ॥  
 तउ सीलमइ करावीयइ जिनमवन ठवीजइ ।  
 पारइ पीनलमइ भलां ग्रिहचैति पूजीजइ ।  
 घरि देवालाइं कराविय नीकाइ मणोहर ।  
 जीछे तिहुयणसरण सामि पूजीजइ जिणयर ॥ २९ ॥  
 सुगंधि नीरि सनाथु करइ जिण जीणि आणंदिहि ।  
 ते संसारह कसमलह नवि छीपइ विंदिय ।  
 अंगलहणे सूक्ष्म करउ सुफरां बहुमूलां ।  
 नियनियसक्ति करावियइ कीजे देवंगतूलां ॥ ३० ॥  
 कीजइ ओरसु ख्यडा सिरम्वंद घसेवा ।  
 कपूरचटे चाटीइ कपूरु जिनस्वीमुखि देवा ।  
 मूकइ जिणभुयणिहि धोति अतिनीकी घूपो ।  
 घालाकुंची पूंजणीइ पीगाणी कूपो ॥ ३१ ॥



अतिमुगंधिहि सिरखंडिहि कपूरिहि आंगी ।  
 कीजइ सामी वीतराग प्रसु नवनवभंगी ।  
 कस्तूरिहि कुंकुमिहि तिलउ निलाडिहि सामी ।  
 ते पुण वितपति करइ भली अतिनीकइ घामी ॥ ३२ ॥  
 तउ आभरण चडावियइ सोव्रणमय घडिया ।  
 हीरे माणिकि मोतीए बहुरणे जडिया ।  
 अतिरूपडउं आभरणउं भलउं कीजइ संपूरउ ।  
 नीकउं सिहरउं पूठिउं इतलि अनइ मसूरउ ॥ ३३ ॥  
 कानिहि कुंडल सिरि मुकुडु किरि ऊगिउ भाणूं ।  
 जाणे तिहयणि सयल लोक अभिनवउं विहाणूं ।  
 उरइ माल कंठि सांकलउं मुक्तावलिहार ।  
 नयणि निहालिन वीतरागु रूपउं सुरसार ॥ ३४ ॥  
 बाहुजुयलि वेउ बहिरम्बा अतिनीका सोहई ।  
 टीळुं श्रीवत्सु सारूपार भवियण मणि मोहई ।  
 सोनाकेरी पालठी कीजइ जिनपत्ते ।  
 सोहई वीजउरउं रूपडउं सामीजिणहत्थे ॥ ३५ ॥  
 इणि विनेकिहि बहु य विशेषिहि जिणवरपूज सलकणी य ।  
 करउ मनरंगिहि नवनवभंगिहि श्रीसंघनयणसुहामणी य ॥ ३६ ॥  
 एती अ जोइ आभरणतणी पूजा नीपत्री ।  
 दिच आरंभिसु जिणह अंगि सुरहां कुसमघ्नी ।  
 कीजइ कुसमे चंगेरीयण पूज कारणि रूपडी ।  
 घायरीइ दीहु देवकाजि अन्नइ छाजी छबटी ॥ ३७ ॥  
 रायचंपु केतकी जाइ सेवघ्नी परिमल ।  
 घडलि सिरीवालउ वेअलु अनु करणी पाडल ।  
 नीलउघ्नी विचि पूजमाहि सोहई अतिचंगी ।  
 वितपति दीसइ रूपडे तिणि नवनवभंगी ॥ ३८ ॥  
 नीरुउ कणयरु पूजमाहि वरणाकि सोहंती ।  
 परिमलु पसरइ कुसुमजाति पाछइ विहसंती ।  
 पुंइ अनइ मुशुंइ यालु जई परिजाते ।  
 एते कुसुमि करउ पूज तुमि निहयणपत्ते ॥ ३९ ॥

सुरहउ सख्यउ वावची अनइ कल्हार ।  
 सहुयइ सोहइ बीतराग सामी सुरसार ।  
 नीलउत्री नागवेलि पानमाहि जा सोहइ ।  
 ईणपरि पूजइ सामिसाल नरनारी घन्न ॥ ४० ॥  
 एहि रामणीयइ पूज तोइ नीकी सोहंती ।  
 तउ नक्षत्रहतणी माल दीवाशू चंगी य ।  
 खेलीयइ माहि भुयण जिणविवहकेरी ।  
 आणी कुसुमे पूजियइ ते सवि संखेवी ॥ ४१ ॥  
 समोसरणु जो पूजीयण जो तिनिपयासं ।  
 चिहु पखि दीसइ बीतरागु जहि तिहुयणसारू ।  
 तउ पूजा नीपल्ली गूठि धूपउटजउ लीजइ ।  
 धीजणिय ऊखेचितु गुरु तहि घंटी वाजइ ॥ ४२ ॥  
 धूप अगुरु सातिचारेसि डावडी जि कीजइ ।  
 दंडासणे अतिरूपडे जिणभुवणु पुंजीजइ ।  
 आखेरिहिं मंजूस भली अन्नय चउकीवट ।  
 ढोइउ आखे करउ भली य मंगलीक आठ य ॥ ४३ ॥  
 बद्धमाणु वरकलसु अनइ भदासणु छत्तू ।  
 दप्पणु नंदापरतु तहि साधिउ श्रीपत्तू ।  
 अठ मंगलीक तीण गाढि भरियइ जिनआगइ ।  
 इणपरि जं धन बेयीइ ए तं लेखइ लागइ ॥ ४४ ॥  
 दीवा कीजइ जिनभुवणि छत्रत्रउ दीजइ ।  
 चमर ढलंते बीतराग तेहि धनु बेयीजइ ।  
 ते उलोच कारावियइ जिणभुवणमज्झारे ।  
 वाचोटा मरचर अ लंव कीजइ जिनबारे ॥ ४५ ॥  
 तोरण वंदुरवाली वारि सापि जिणभुवणि ।  
 पूजा जोइ सहु कोइ आवइ तीणि निणि ।  
 पूजा जोइवा जिणह भुयणि तोइ सुहगुरु आवइ ।  
 तउ संघिहिं आग्रहु करीउ तीळे रदाविय ॥ ४६ ॥  
 पडपउ वेला एक प्रभु अहां उच्छयु होसिइ ।  
 संघवयणु मानेवि सुगुरु निसि सिखं पइसइ ।

तिणि वेलां वइसणां पाटि जोइ पाटला ।  
 चडकीवटि वइसंति सुगुरु तउ भावइ भट्टा ॥ ४७ ॥  
 वइसइ सहइ श्रमणसंघ सावय गुणवंता ।  
 जोपइ उच्छवु जिनह भुवणि मनि हरप घरंता ।  
 तोळे तालारस पडइ बहु भाट पदंता ।  
 अनइ लकुटारस जोइई खेला नाचंता ॥ ४८ ॥  
 सविह सरीपा सिणगार सवि तेवड तेवटा ।  
 नाचइ धामीय रंभरे तउ भावइ रुडा ।  
 सुललित वाणी मधुरि सादि जिणगुण गायंता ।  
 तालमानु छंदगीत मेलु वाजिन्न वाजंता ॥ ४९ ॥  
 तिविलां झालरि भेरु करडि कंसालां वाजइ ।  
 पंचशब्द मंगलीकहेतु जिणभुवणइ छाजइ ।  
 पंचशब्द वाजंति भाटु अंवर वहिरंती ।  
 इणपरि उच्छवु जिणभुवणि श्रीमंघु करंतउ ॥ ५० ॥  
 तउ आरसी परगुणउं कीउं आरती पटऊपरि ।  
 ऊठिउ संघपति विधिहि सहिउ तउ साहीउ विहुकरि ।  
 नीर लुण ऊतारियए कुसुम ऊतारी ।  
 संघपति ऊठी सेसि भरइ सइहत्थिहि माडी ।  
 संघपति आरती छिपा हुइ जउ वार वडेरी ।  
 आरती जोगी धांभली अ आणउ गरुगरी ॥ ५१ ॥  
 पाछइ जिणगुण गाइ पडइ सह पालउ लोक ।  
 श्रीसंघु तोह अ दानु दिपई जीह जेसा जोगू ।  
 ऊतारीइ आरतीअ तोह संघपति सइ हरखिउ ।  
 रोमांचीसारीक तहि जिणदंसणु देखीउ ॥ ५२ ॥  
 मंगलीकु ऊतारीयण घंट वाजइ सरूई ।  
 श्रीसंघु करइ प्रभावना जिणसासणि गरूई ।  
 तउ विधि बांदिपउ वीतराग श्रीसंघु ऊतारीउ ।  
 इणपरि सुकृतमंडारु तोह भव्यजोविहि भरियउ ॥ ५३ ॥  
 जे जिन भुवणतणां कृत्य ईह छेडइ कहिया ।  
 ते शहचैत्य करावियइ सविशेषिहि सहिया ।

अनि अ ज काई कोइ ठामु मूं हूं वीसरियउं ।

तेउ तुम्हि भविय करावि जि अ सहइ सांभरियउं ॥ ५४ ॥

उछवुं जिनभुवयणि हरपि नियमणि करइ संघु जयवंतु ।

नितु हिव ग्रीजउ क्षेत्रु कहिसु पवित्तु सुणउ जीव जे जिणभणित्तु ॥ ५५ ॥

ग्रीजउ क्षेत्रु सु संभलउ ए वरलोयणे जं भणित्तु वीयराइ ।

गुणगंभीर सो जिणह वयणु मृगलोयणे तसु नवि ऊपम काइ ॥ ५६ ॥

वचन इकेका मूलु नही वरलोयणे जं बोलइ भगवंतु ।

त्रिहु भुवणे चूडामणिय मृगलोयणे सह जाणइ अरिहंतु ॥ ५७ ॥

पढ कवण व्याप जिनवचनतणउ वर० बुद्धइ लोक्कु अलोक्कु ।

सउ जि सिद्धंत ज सलहीअइ ए मृग० देअइ सिद्धिसंजोगु ॥ ५८ ॥

गणधर करइ जं पुब्बधर वर० सुयकेवलहि करंतु ।

दसपूरवधर जं करइ मृग० तं भणियउ यह सिद्धित्तु ॥ ५९ ॥

त्रिहु भुवणहतणउ जाणियइ धर० आगममाहि विचारु ।

चउदपूरव इग्यार अंग मृग० करइ गोतसु सुतिहारु ॥ ६० ॥

सूत्रहार तहि निउछणा ए वर० जिणि जाणित्तु एउ सूत्र ।

त्रिपदी आपी य वीरनाथिइ मृग० आघउं गोतम वृतु ॥ ६१ ॥

केवलनाण बुच्छित्ति गयउं वर० गया सवि पूरवधर ।

जे हुंता गुरु प्रज्ञायणउं मृग० गया सु ते मुनिवरा ॥ ६२ ॥

अल्पप्रज्ञह नवि धाहरण वर० जिणवयणुं निरुपसु ।

तीण कारणि श्रीसंघ मिलीय मृग० पोथे ठवीउ आगसु ॥ ६३ ॥

भक्षाभक्ष सो बुद्धियण वर० अग्नी गम्मागंसु ।

कृत्याकृत्य परीछियण मृग० जाणीयइ धर्माधर्मु ॥ ६४ ॥

धन जीवी लाहुउ लिउ ए वर० बुद्धियणइ एहु विचारु ।

श्रीसिद्धंतु लिग्गावियण मृग० जोउ त्रिहुभुवणह सारु ॥ ६५ ॥

ग्रीजउ क्षेत्रु इस वावीयण वर० चित्ति संवेगु धरेउ ।

वेवीउ वित्त लिग्गावियण मृग० श्रीसिद्धान्त जणउ ॥ ६६ ॥

बाहुदंड पोथा कराउण वर० पोथीय नीकी य तोड ।

ज्ञानलगइ सवि लाभ हुइ मृग० एह विचार तूं जोड ॥ ६७ ॥

पाठां दोरी घीटणां वर० वर मिद्धान्ह भत्ति ।

यानीदोरा उत्तरीय मृगलोयणे पोथीय पोथीय सत्ति ॥ ६८ ॥

कामदेव जिम चलइ नही वीतरागह धर्म ।  
 वीरनाहु जिणवरु दियइ तसुनो ऊपम्म ॥ ९७ ॥  
 सदाचारु सुविचारु कुसलु अनइ निरहंकारु ।  
 शीलयंत निकलंक अनइ दीनगणआधार ।  
 जिनह वचनि तिम सानघातु जीह आवक भेदी ।  
 जाणे तीह गर्भवासवेलि मूलहुंति छेदी ॥ ९८ ॥  
 जाणइ ऊचितु सह काय साचउ वियहार ।  
 त्रिधा सुद्धि मनमाहि वसइ इकु निधउ सारु ।  
 उत्सर्ग अनइ अपवाद एह जाणइ सविसेपू ।  
 भणियइ आवकतणी भावीय मूलइ सा जीह एहु विवेक ॥ ९९ ॥  
 जे पुण आवकतणा भविय कहोपइ जिणसासणि ।  
 ते गुणु जिण भणइ आवियह जाणेया नियमा ॥ १०० ॥  
 त्रिधा सुद्धि वीतराग वसइ मनभीनरि जीह ।  
 सुलहउ मियपुरतणउ चासु तो आयक तीह ।  
 पदइ गुणइ जिणवयणु सुणइ संयेगि संपूरिय ।  
 मील सनादि पहिरिइ क्रमऊपरि खरी ॥ १०१ ॥  
 ईहं तु आयकतणउ श्रेष्ठ वायु मवि दीस ।  
 जे तुम्हि भवियउ अच्छइ काइ धर्ममणी जगीस ।  
 जिम भरयेमरि वायी रिसहेमरनंदणि ।  
 गृह्यासऊपरि जानु जासु पसरौउ निहुयणि ॥ १०२ ॥  
 निम तुम्हि वायेउ भलीपरि भविउ इउ विसु ।  
 लहिसउ फल निरयाणनयरि तिम मितां बहतु ।  
 पहिहुं कीजइ महायिनउ गुणआयक जाणी ।  
 पाप पपालीय सहहाथि सेउ कुंकूम वाणी ॥ १०३ ॥  
 पाणइ भोजनुं भलीयभक्ति मयिगेकिहि मलिषउ ।  
 दीजइ आयकआयिकां एउ आगमि कहिउ ।  
 उपरि उगटि फूल पान कापट अनुमानिय ।  
 दीजइ निजभक्ति भलां गरुणइ बहमानि ॥ १०४ ॥  
 भरयेमर जिम आयकह दीजइ आपासे ।  
 मोगा जे जिनयणि अणइ नगगुणह नियाम ।

वाछिलनी परि एक कीसउ परि हुअइ असंख ।  
 विधिमानु फरसइ सह कोइ नरनारी दुःख ॥ १०५ ॥  
 वाछिलनी परि एकजीभ हउं कहिउं न सकउं ।  
 एकह वारु सारु सकु तुम्ह कहौउ अज भू किउं ।  
 जं जं कीजइ कुणवकाजि अतिभलां भलेरां ।  
 ता कीजइ साहमिय प्रति अजी अधिकेरां ॥ १०६ ॥  
 कीधे काजे कुटवतणे अतिघणउ संसारो ।  
 जं कीजइ साहमिअकेरउ काजि ते परत भंडारो ।  
 इणपरि वाछिल आवकह कीजइ सुरचंगू ।  
 हव ते कहौइसिइ जिणभयणि वाछिल अंतरंगू ॥ १०७ ॥  
 जिणपरि लोग समाराअए सवि साहमिअकेरु ।  
 थाकइ जिम संसारमहि यलि यलि एउ केरु ।  
 कीजइ आवकआविकारहि यरपोपधशाल ।  
 जीछे करिसिइ धरमध्यान तु हरपि सवि काले ॥ १०८ ॥  
 पडुजीवरक्षा सवि काल तीछे दोसंती ।  
 समकितसिउं वार य व्रत जीव अनेकिइ लहंती ।  
 प्रतिमा नीम अभिग्रह संपज्जइ तिणि हाट ।  
 अनेकि सुकृत ऊपजइ कुहियाकडेवरमाट ॥ १०९ ॥  
 तीछे सुगुरु वपाणु करइ आगमभंडार ।  
 सह समाधियइ सांभलइ व्यथ नरनारे ।  
 थापनाचार्य थउकीवटउ सिंहासन कीजइ ।  
 नउकरवाली चिरबला महपत्ती भूंकीजइ ॥ ११० ॥  
 संधारा ऊत्तरउट पाटि कीजइ पुंछणा ।  
 करे पोसाल पाटला अनइ दंडाज्जणा ।  
 काजामेलणी य पउंजणी य काजाऊधरणी ।  
 पौपधसालहतणइ ठामि ए काजइ करणी ॥ १११ ॥  
 कीजइ कमली टवणी य याचीजइ सिद्धांतु ।  
 ज्ञान पदंता जीव तीता कर्मक्षय अनंतु ।  
 जइ ज्ञान पटिलेहवा मोरचीठी य ते तोई ।  
 दोसई आगर पटवटा अनइ जइणा होई ॥ ११२ ॥

त्रीजउ क्षेत्रु इम वावउ निरुपम लिघउ लाभु हुंतातणउ ।  
 जिम अट्टकम्म गंजीउ भवदुह भंजीउ सिद्धिनयरि खेमिइ मुणउ ॥६९॥  
 हिव श्रीश्रमणसंघभत्ति करउ जीव तुम्हि यथासक्ति ।  
 पहिलउ कीजइ तोइ पावयणा अनी य विशेषिहि आयरियठवणा ॥७०॥  
 इणपरि श्रमणुक्षेत्रु वावीजइ निश्चय भवसायक तरीजइ ।  
 जे जिनवरि मुनि कहिया आगमि क्रियासार अनइ स्वरतर संजमि ॥७१॥  
 पंचमहव्यभारु धरंता दस अनु न्यारि उपगरण वहंता ।  
 नव कल्पिइ विहार करंता ते मुनि भणियइ चारिस्तवंता ॥ ७२ ॥  
 जे मुनि पंच समिति छइ समिता त्रिहुहि गुसिहि जे अछइ गुपिता ।  
 सीलंग सहसअठार वहंता ते मुनि भणियइ उपसमवंता ॥ ७३ ॥  
 जे मुनि निम्मल निरहंकार सदाचार दीसइ सुवियार ।  
 जे धुरि जूता गणगच्छभारा ते मुनि भणिया गुणह भंडारा ॥ ७४ ॥  
 इणपरि भट्टा क्षेत्र विशेषि दियउ दानु तुम्हि भवि हरखि ।  
 जिम तु छटउ भवना भार पामउ सिचसुखु निरुपमसार ॥ ७५ ॥  
 जे जिनआण सदा छइ रत्त वावीस परीसह सहइ अपमत्त ।  
 जिनआदेसु धरइ सिरिऊपरि ते जि महामुनि नमीयइ सुरवरि ॥ ७६ ॥  
 वईतालीसदोपसुविसुद्धउ लियइ आहारु जे जिणवरि दिहुउ ।  
 इंदियविपयन्यापिनवि गूचइ तवि नीमि संजमि खण विन मूचइ ॥७७॥  
 किस्तुं घणउं हउं कहउ विचारो मुनिरयणगुण न लहउं पारो ।  
 अनुव्रतु चालइ जे जिनआण ते मुनि भणीयइ मेरुसमाण ॥ ७८ ॥  
 प्रसंसीइ मुनि जिहि गुणि सहिया ते गुण जिणवरि श्रमणी कहिया ।  
 एकु विशेषु पुण श्रमणी दीसइ वहइ उपगरण तोइ पंचवीसइ ॥ ७९ ॥  
 चालइ गङ्गाधार तोइ ऊपरि सीलवंत ति नमीइ सुरवरि ।  
 महासती जे छइ अपमत्त धारा भणइ हंतेहि पवित्त ॥ ८० ॥  
 जीइ जिनआण हियइ परिणमी ते श्रमणी तोइ मेरइ समी ।  
 जे सिद्धी जिणआण करंती धनु धनु श्रमणी ते महासती ॥ ८१ ॥  
 जिणसासणु जेहि य इम उज्जालिउ कसिमल पावपंकु पग्यालिउ ।  
 एउ साह अनइ श्रमणी वित्त वाकिन धामी छुईउ सचित्त ॥ ८२ ॥  
 जा हियदांतुं संपति अच्छइ इसीय चराष न पामिसि पछइ ।  
 जउ भलसेत्रिहि वित्त न वाविसि पाछइ परभवि किस्तउ लुणाविसि ॥८३॥

वराप टली वितु चाविसि सारु ऊगिसि खडसलु काइ कतवारु ।  
 जउ भलक्षेत्रि वरापहं चाविसि तउ इकुगुणइ अणंतगुणं पाविसि ॥८४॥  
 ए भलुं क्षेत्रं जिनवरि कहिया वावे धम्मी भावणसहिया ।  
 तउ सीचे अनुमोदनापाणी जिम हुइ सफली गय निरुवाणी ॥ ८५ ॥  
 ईणपरि चावीजइ मुनिखेत्रु दीजइ भक्त पालु स्रष्टंतु ।  
 विद्यादानुं जउ दीजइ सारु जिणु भणइ तेह पुन्य नहीं पारु ॥ ८६ ॥  
 ओपयआदि सहु स्रष्टतउ तं तं दीजइ नियघरिहुंतउं ।  
 अनिउ ज्ज काई मुनि उपगरइ तं स्रष्टतुं बहरउं करइ ॥ ८७ ॥  
 जं जं मुनि जोअइ स्रष्टंतउं तं तं दीजइ नियघरुहुंतउं ।  
 गुरु आवंता कीजइ अभिगमणउं दीजइ भक्ति थोभयंदनउ ॥ ८८ ॥  
 विनउ वेयावचु अनीउ विशेषिउ कीजइ भवीउ महामुनि देखीउ ।  
 पर्युपास्ति तही कीजइ घणी य जिम जिम जिनवरि आगमि भणीय ॥८९॥  
 एह ज परि श्रमणी जाणेवी करउं भक्ति तुम्हि हरिख धरेवी ।  
 जे स्रष्ट महामुनि दीजइ तं तं श्रमणी कीजइ ॥ ९० ॥  
 आगइ तोइ पूर्वहि सुणीजइ धनु धनु सारथवाह कहोजइ ।  
 घीउ बिहिराबिउ जिणि मुणिंदउ तिणि फलि इयउ पढम जिणंद ॥९१॥  
 हथिणाउरि नपरि श्रेयंसिहि पाराबिउ रिपुसु इक्षुरसिहिं ।  
 तिणि फलि तिण भयि केवलु ज्ञानु दिइन भयिउ मुनि इणपरि दानु ॥९२॥  
 घोर जिणेसर छट्टा मास चंदण पारावइ कोमास ।  
 तीणि दानि शिव संपत्ति पामी दियउ दानु तुम्हि अनुग्रह धामी ॥९३॥  
 जोइन संगमि कीउं मुनि पारावीउ खंट खोरु घीउ ।  
 तिणि फलि तु सर्वार्थसिद्धि पामी पाछइ होसिइ सिवसुहगामी ॥ ९४ ॥  
 इउ भल्लउ खेतू चाघउ वितू अतिफलीअइ संवेगचित् ।  
 सिवसुह संपत्ती देइन भत्ति सामिसालु आगमि भणित्ति ॥ ९५ ॥  
 हिय तोइ आवकतणउं क्षेत्रु भवी कहोसइ ।  
 जउ जिणसासणतणी भूमि अतिभलउं फलीमिइ ।  
 फिसउ सुआवक जाणियउ जिणसासणभितरि ।  
 श्रीवीनरागतणी य आण मानइ सिरऊपरि ॥ ९६ ॥  
 समकित्तमूल वार चरत पालइ नरनारि ।  
 नियसइ हियटइ घोनरागु एक जि सुरसारु ।



ईइ सातइ क्षेत्र इम बोलीया आगमअणुसारे ।  
 पुण तुम्हे वावीयं भलीयपरि वित्त आपणरे ॥ ११३ ॥  
 न्यायनीति वितु लिउं तीउ थानकि वावे ।  
 जिणसासणि वेवीतु कुलि कमल सु चडावे ।  
 संघसमुदाइ सट्ट कोइ तीरथ चंदावे ।  
 देवजात्र गुरुजात्र करीइ तउ भलउ भणावे ॥ ११४ ॥  
 इम वितु सु बेचउ धम्म सु संबउ अप्पं जीव म बंचसुउ ।  
 पली न लहिसउ प्रस्ताणु एसउ करउ सफलु भव माणसउ ॥ ११५ ॥  
 सातक्षेत्र इम बोलीया पुण एकु कहीसिइ ।  
 कर जोडी श्रीसंघपासि अविणउ मागीसइ ।  
 काईउ ऊणं आगउं बोलिउं उत्सृणु ।  
 ते बोल्या मिच्छा दुकडं श्रीसंघविदीतुं ॥ ११६ ॥  
 मूं मूरप तोइ १ धुण मात्र पुण सुगुरुपसाऊ ।  
 अनइ ज त्रिभुवनसामि वसइ हियडइ जगनाहो ।  
 तीणि प्रमाणिइ सातक्षेत्र इम कीधऊ रासो ।  
 श्रीसंघु दुरियह अपहरउ सामी जिणपासो ॥ ११७ ॥  
 संवत्त तेरसत्तावीसण माहमसवाटइ ।  
 गुन्वारि भावी य दसमि पहिलइ पम्बवाडइ ।  
 तहि पूरु हूऊ रासु सिव सुग्ग निहाणूं ।  
 जिण चउवीसइ भवीयणइ करिसिइ कल्पाणूं ॥ ११८ ॥  
 जां सिसि रवि गयणंगणिहि ऊगइ महिमंडलि ।  
 ता घरतउ एउ रासु भविम जिणसासणि ।  
 निम्मल ज ग्रह नक्षत्र तारिका व्यापइं ।  
 गयणंतु श्रीसंघ अनइ जिणसासणु ॥ ११९ ॥

इति सप्तशेखरासः समाप्तः ।

## कहलीरासः

गणवह जो जिम दुरीउचिहंडणु रोलनिवारणु तिहयणमंडणू पणमवि सामीउ  
पासजिणु ।

सिरिभेहेसरसरिहिं वंसो धोजीसाहह वंनिमु रासो घमीय रोलु निवारीउ ।

सगपंडु जिम महीयलि जाणउं अठारसउ देसु यपाणउं गोउलि धनि  
रमाउलउ ॥

अनलकुंडसंभम परमार राजु करइं तहिंछे सविवार आवूगिरियरु तहिं पवरो ।

विमलडवसहीं आदिजिणंदो अचलेसरु सिरिमासिरि वंदो तसु तलि  
नयरी य वन्नीयण ।

जणमणनयणह कम्मणमूली कहली किरि लंकविसाली सरप्रयधावि  
मणोहरी य ॥

वस्त—तम्हि नयरी य तम्हि नयरी य वसइं वह लोय ।

चितामणि जिम दुच्छीयहं दीइं दानु सविषेप हरिसि य ।

सबइं सीलि ववहरइं कूडकपट्टु नवि ते य जाणइं ।

गलीउं जलु वाडी पीइ धम्मकम्मि अणुरत्त ।

एकजीह किम वन्नीइ कहली सु पवित्त ॥

हिमगिरिधवलउ जिमु कविलासो गुरुमंडपु पुतलीयधिणासो पासभूयणु  
रलीयामणउं ।

भवीयहं गुरु मणि आणंदु आणइ जसहटनंदणु तं परिमाणइ सतरि भेदि  
संजमु परिपालइ ।

विहिमगि सिरिपहसुरि गुण गाजइ एगंतर उपवास करइ धोजा दिण  
आंविल पारेइ ।

सासणदेवति देसण आवइ रयणिहिं ब्रह्मसंति गुरु वंदीइ कविलकोटि श्रीय-  
सुरि विहरंतइ ।

मालारोपण कीयां तुरंतइं सइ नर आवीय पंचसयाइं समिकति नंदइं वह य वयाइ ।

छाहटनंदणु बहु गुणवंतउ दीग्य लीइ संसारविरत्तउ ।

लापणउंदपरमाणपरिरत्तणु आगमधम्मधियारवियरत्तणु ।

छत्रीसी गुरुगुणि जुत्तउ जाणीउ नियपदि ठविउ निम्नउ ।

माणिकपहसूरि नाम् श्रीयसूरिप्रतोछीउ कळलीपुरि पासजिणभूपणि अहिठीउ ॥

सावयलोय करइं तसु भत्ती नवनवधम्ममहसवजुत्ती ।

श्रीयसूरि आरासणिअठाही अणसणविहि पहतउ सुरनाही ।

निवीय आंविलि सोसीय नियकाया माणिकपहसूरि बंदउ पाया ।

विणठदेह जस धवलह राणी पायपखालणि हुई य पहाणी ।

माणिकसूरि जे कीय जिणधम्मपभावण इकमुहि ते किम धनउ भवपाव-  
पणासण ॥

कालु आसन्नु जाणेवि माणिकसूरि नयरिकलुलि जाएवि गुणमणिगिरि ।

सेठि द्वासलसुउ बादिगयकेसरी विरससंसारसरिनाहतारणतरी ।

संधु मेलवि सिरिपासजिणमंदिरे वेणि नियपादि गुरु ठविउ अइसइ परे ।

उदयसिंहसूरि कीउ मामि नाचंती ए नारिगण गच्छभरु सयलु समपीजए ।

सुरु जिम भवियकमलाइं बिहसंतओ नयरि चड्ढावली ताव संपत्तओ ॥

वज्र चत्तारि वरवाणि जो रंजए राउलो धंधलोदेउ मणि चमकए ।

कोइ कम्माली पाऊयारुहओ गयणि खापरिथीइं भणइ हउं धादीओ ।

पंडिते धंभणे तापसे हारियं राउलोधंधलोदेविहिं चितियं ।

यादिहिं जीतउं नयरो नवि कोउ हरावइ उदयसूरि जइ होए अम्ह माणु रहावइ ॥

वस्त—जित्त नयरि य जित्त नयरि य सयलमुणिसीह ।

नीरंतइं नीरु पडो गरुपदंडटंवरु करंतइं ।

धंधलु राउलु विजवइ सामिस्ताल पइ भझि संतइं ।

वंभण तपसीय पंडीया जं त न धंधइं बाल ।

गुरु कम्मालिउ निज्जणीउ अम्ह अप्पउ वरमाल ॥

धंधलजिणहरि सवि मिलिय राणालोय असेस ।

उदयसूरि संधिहिं सहीउ नियसइ ए निवसइ ए निवसइ वरहरि पीठि ॥

सत्थिपमाणी हरावोउ मंघिहिं ए मंघिहिं ए मंघिहिं पाडुकमठो ॥

सेयवर तउं हिव रहिजे जे गुरुसिद्धिहिं चंडो ।

विमहरु आवतु परिपलि जे लंपीउ ए लंपीउ ए लंपीउ दंडु पयंडो ॥

तउ गुरि मुहंतां मिल्हिकरि होई गरहु पणेण ।

पार्इउ लीपउ चंडुपडे गिलीउ ए गिलीउ ए गिलीउ छालभुयंगो ॥

पाउपिह्ति वि संमुहीय डरहरंतु थीउ वाघो ।

जोयणहार सवि पलभलोय हीयडईं ए हीयटईं ए हीयडइ पहीउ दाघो ॥

तउ गुरि मूकीउ रयहरणु कीधउ सीहु करालो ।  
 वाघह जं ता दूरि थीउ हरिसीउ ए हरिसीउ ए हरिसीउ नयरु सवालोल ॥  
 इत्थंतरि मुणि गयणठिय तसु सिरि पाडोय ठोव ।  
 हुउ कमालीउ कालमुहो लोकिहिं ए लोकिहिं ए लोकिहिं वाईय बूव ॥  
 छंडीउ माणु कवालघरो घाईउ वंदइ पाय ।  
 खमि खमि सामि पसाउ करी जीतउं ए जीतउं ए जीतउ तहं मुणिराय ॥  
 वस्त—ताव संधीउ ताव संधीउ ठोव मंतेण ।  
 गणहरि करि कम्मालीयह भिन्नभरीउ अप्पीउ मुहत्तिण ।  
 रामिहिं जिम वायसह इहु निजुत्त सु हरीउ सत्तीण ।  
 धारावरसि कयंतसमि भिंडीउ डिंभीउ ताम ।  
 प्रतपउ कोडि वरीस जिनउदयसूरिरवि जाम ॥  
 चड्ढावलिहिं विहरोउ प्रसु पहुतउ मेवाडि ।  
 पासु नमंसीउ नागब्रहे समोसरीउ आहाडि ॥  
 जालु कुहालिय नीसरणी दीवउ पारउ पेदि ।  
 बादीय टोहक पइ धरण पहुत्तउ पमणउ पेदि ॥  
 केवलिसुकति न जिणु भणए नारिहिं सिद्धि सजाणि ।  
 उदयसूरि पमणउ पलीउ जयत ल रायअथाणि ॥  
 केवलिसुकति म भ्रंति करे नारि जंति ध्रुव सिद्धि ।  
 तिसमपसिद्धा बज्जि जीय लीइ आहारु विसुद्ध ॥  
 पोच पीर दीठंतु दीउ जित्तु नंदिसुणिदेवि ।  
 गयकुंभथलि आरुहीय पढमसिद्ध मरुदेवि ॥  
 विवरणु पिंडविसुद्धि कीउ धमविहिंयु प्रसिद्धु ।  
 चीयवंदणदीवीय रचीय गणहरु मूअणि प्रसिद्धु ॥  
 अमहं साजणसेठे छम्मासहं कालो ।  
 वसतिणि ऊयरि ऊपनउ पदि ठाविजि वालो ॥  
 तेरदुरोत्तरयरिसे अप्पउं सापेहं ।  
 चड्ढावलि दिविहो जगि लोह लिहावी ॥  
 कट्टली जाएवि परमकल सु गच्छभारुधरो ।  
 पंचम धरिस बहंति सजणनंदणु दीम्मीउ ।  
 देवाणसु लहेवि गोठीय ससमे वरिस लहो ।

चउदीसि मेलीउ संघु आरीठवणउं विविहपरे ।  
 मोतमसामिहिं मंघु आपात्रीजइ दिणी दीइण ।  
 जोगवहाणु वहेवि अंग इग्यारइ सो पढण ।  
 त संजमि रणि जीतु सयरइ चुकउ पंचसरो ॥  
 गूजरधर मेवाडि मालव ऊजेणी वह य ।  
 सावय कीय उवपार संघपभावण तहिं घणी य ॥  
 सात्रीसइ आपाडि लखमण भयधरसाहुसओ ।  
 छयणीनयरमझारि आरिठवणउं भीमि किओ ॥  
 कमलसूरि नियपादि सहं हथि प्रज्ञासुरि ठवीओ ।  
 पमीउ पमावीउ जीघु अणसणि अप्पा स्रघु कीओ ॥  
 पणि पढुत्तउ सुरलोइ गणहरु गंगाजलविमलो ।  
 तामु सीसु चिरकालु प्रतपउ प्रज्ञातिलकसुरे ॥  
 जिणसासणिनहचंदु सुहसुरु भवीयहं कलपतरो ।  
 ता जगे जयवंत उम्हाउ जां जगि ऊगइ सहसकरो ।  
 तेरत्रिसठइ रामु कोरिंटावडि निम्मिउ ।  
 जिणहरि दितसुणंतं मणवंछिय सवि पूरवउ ॥

फहलीरासः समाप्तः ॥

## सालिभद्रकक

भलि मंजणु कम्मरिवल वीरनाहु पणमेवि ।  
 पउसु मणइ कककरिण सालिभद्रगुण केइ ॥ १ ॥  
 किय वच्छ कुवलयनयण सालिभद्र सुकमाल ।  
 भहा पभणइ देव तुहु कह थिउ इत्तियवार ॥ २ ॥  
 कारुणामयनीरनिहिं समवसरणि ठिउ सामि ।  
 अज्जु माइ भइ वंदिपउ वीरनाहु सिवगामि ॥ ३ ॥  
 सारउं कुडु ता पुत्त कहि का देसण किय वीरि ।  
 कवणु अत्थु वखाणिइउ कंचणगोरसरीरि ॥ ४ ॥  
 सारसमुइह आगलउ माइ कहिउ संसार ।  
 संजमपवहणहीण तसु किमइ न लब्भइ पारु ॥ ५ ॥

गयममत्त वीरियपवर जे जगि पुरिसपहाण ।  
 सालिभद भदा भणइ संजमु सोहइ ताण ॥ ६ ॥  
 गारववज्जिउ विन्नवउं काइउ मग्गउं माइ ।  
 जइ मोकलउ तउ व्रतु लियउं तुम्हह पाय पसाइं ॥ ७ ॥  
 घणकुंकुमचंदणरसिण तुह तणु वासिउ वच्छ ।  
 वपह परीसह किम सहिसि मुणि गंगाजलसच्छ ॥ ८ ॥  
 घाणइ पोलिय पंचसहं खंदगसरिहि सीस ।  
 साहु माइ दुस्सहु सहइं एरिस धम्म जिगीस ॥ ९ ॥  
 निवि घउ लिज्जइ तरुणपणि सालिभद सुकुमाल ।  
 मुहु कुलमंडण कुलतिलय कुलपईव कुलवाल ॥ १० ॥  
 नाउं गन्धिहिं कुलतणहं पाविज्जइ भवछेउ ।  
 माइ मरीचि भव भमिउ चद्धमाणजिणुदेउ ॥ ११ ॥  
 चिरणु लेसिजइ पुत्त तुहु नंदण नीयपवीण ।  
 रोजंती भदा भणइं महं किम मेलिहिसि दीण ॥ १२ ॥  
 चारुचक्रियलदेव तह वासुदेव बलवंत ।  
 माइ तडि द्विय परिणह कड्डिउ लेइ कयंतु ॥ १३ ॥  
 छण मइलंछणसमवयण तुह भज्जा वत्तीस ।  
 ते बिलवंती पेसभरि किम करिसि कुलईस ॥ १४ ॥  
 छारु जेम उड्डइ सयलु अंतेउरु घरसारु ।  
 माइ जीवु जउ संचरइ छंडेविणु ढंढारु ॥ १५ ॥  
 जणणि भणइ जां बालपणु तां पुत्तह पडिवंधु ।  
 तारुन्नह बुल्लाविअउ बहु उल्लाडइ कंधु ॥ १६ ॥  
 जण्णिउ देह असारवत्तु भरहिं सूकउ भोहु ।  
 ताव माइ तमु विहिडियउं केवलनाण निरोहु ॥ १७ ॥  
 झलकंतउ कंचणघडिउ सत्तम्मिपासाउ ।  
 विहवह कोडाकोडि घण कहि कोइ ऊणउ ठाउ ॥ १८ ॥  
 क्षाणानलि जिणि कम्मवणु बालिउ गहिउं नाणु ।  
 वीरनाहु महु हिव सरणि रिद्धि रमणि अपमाणु ॥ १९ ॥  
 भरवइ सेणिउ तुम्ह पट्टु सुरगोभदु सुनाउ ।  
 निचु नवलं आभरण कहि को चित्ति विसाउ ॥ २० ॥

नाहकु सेणिउ तुम्ह महु जइ किरि कहिइउ माइ ।  
 ता घणु कंचणु गेहवलु ग्वण वि न चित्ति सुहाइ ॥ २१ ॥  
 दलदलेसि घम्मत्थ पुण घम्मगहिह्ला वाल ।  
 घम्म करेवा महु समउ तुहु घणुरक्कण वाल ॥ २२ ॥  
 दालिसि चरण म माइ मइं देह महावपसिक्क ।  
 बद्धमाणजिणवरकिरिहिं पुत्तिहिं लब्भइ दिक्क ॥ २३ ॥  
 ठणकइ पुत्त तु चित्ति महु पुत्तविट्ठणिय नारि ।  
 विहवह मुचइ दुहु सहइ दीणी परघरवारि ॥ २४ ॥  
 ठामि ठामि जिउ हिंदिइउ भव चउरासीलक्क ।  
 माइ जि सहिया नरपदुहु ताह कु जाणइ संख ॥ २५ ॥  
 डेरपिसि सुणिणइ सीहसरि निसुणिसि सिक्कफिक्कार ।  
 भुक्किइउ तिसिइउ बच्छ तुह किम हिंढिसि नरसार ॥ २६ ॥  
 डालिहि चडियउ डालिसउ माइ महल्लगेउ ।  
 पच्छइ कहि हउं चरणु कहि बद्धमाणजिणदेउ ॥ २७ ॥  
 ढिलइं चमर वर पुत्त तुहु सीसि धरिज्जइ छत्तु ।  
 मणिसीहासणि बह्ठणउं किणि कारणि वइचिस्तु ॥ २८ ॥  
 ढाउ विलग्गउ माइ महु सिक्कपुरि रज्जहरेसि ।  
 घोलावउ ठिउ धीरजिणु रहिसु न भवह किलेसि ॥ २९ ॥  
 नयउं अंतेउम नयउं घरु नवजोयणु नवरंगु ।  
 सालिभहु नवकणयतणु ढल करि चरणपसंगु ॥ ३० ॥  
 नाणु रसायणु करिस्तु हउं कम्मिधणदाहेण ।  
 तिणि आऊरिस्तु माइ तणु जरा न दुक्कइ जेण ॥ ३१ ॥  
 तिरुअरनलि आवासु मुणि भिक्खु भोयणु पाणु ।  
 भूमंडलि आसणु सपणु बच्छ चरणु दुह्ठणु ॥ ३२ ॥  
 तालउ भंजिवि पइसरइ माइ गेहि जमराउ ।  
 छुट्ठइ वालु न बुडु जणु पडइ अचिन्तिउ घाउ ॥ ३३ ॥  
 थल हंगर पाहण सघण कक्कर कंठ तुसार ।  
 पाणहवज्जिउ गुरि सहिउ हिंढिसि केम कुमार ॥ ३४ ॥  
 थाहररहि न मञ्जु मणु माइ कहिउ तउ सम्मु ।  
 वीरनाहु जिणु ववहरउ लेसु चरणु धणु धम्मु ॥ ३५ ॥



दहविह धम्मु करेसि किम किम सोसिसि निय अणु ।  
 वुच्छ तहं ता दोहिलउं होसिह तुह सीलंगु ॥ ३६ ॥  
 दाणसीलतवभावणह अणु न सोसिउ जेहिं ।  
 माइ मणूभवु दुल्लहउ आलिहि हारिउ तेहिं ॥ ३७ ॥  
 धम्मु किइउ जिम रिसहजिणि तिम किज्जइ सुअ इत्थु ।  
 पुहिलउं सालिहिं पसरिउ अंति पयासिउ तित्थु ॥ ३८ ॥  
 धाइउ जमरायहत्तणउ पडइ अविंतिउ माइ ।  
 कइउ लिज्जइ जीवु तिणि धुंव न बाहर काइं ॥ ३९ ॥  
 नवकप्पूरिहि पूरिया नंदण कोमल केस ।  
 केतगिवालइं चासिया किम उद्धरिसि असेस ॥ ४० ॥  
 नारायणबंधु निसुणि तहिं दिणि दिक्खिउ बालु ।  
 सीसु अग्नि दुस्तहु सहइ माइ सु गयसुकुमाल ॥ ४१ ॥  
 पट्ट सुअ तहं पहरियां रसियउं दिव्व अहार ।  
 सुअ उव्वासिहिं सोसिया केम करेसि विहार ॥ ४२ ॥  
 पालिसु पंथ महव्वइं वारस अंग पठेसुं ।  
 वीरनाहिसुं माइ हउं नवकप्पिहि विहरेसु ॥ ४३ ॥  
 केणिरायह सिरि पुत्तं मणि मुल्लेण य बहुमुल्लु ।  
 सा गिण्हंता पाणहर संजमभरु तस तुल्लु ॥ ४४ ॥  
 पाहिज्जइ करवत्तु सिरि पाइज्जइ कथीरु ।  
 माइ दुक्खु नारय सुणिउ महु उद्धसइ सरीरु ॥ ४५ ॥  
 बेसीसहं पल्लंकि तउं सयणु करइ नितु जाइ ।  
 इंगरि कासुगि करिसि किम थलि किज्जउं तहं काय ॥ ४६ ॥  
 वार मास कासगि रहिउ बाहवलि सुणिराउ ।  
 नाणह कारणि तिणि सहिउ सीअ लूअ जलु चाउ ॥ ४७ ॥  
 भमिसि विहारिहिं भारिअओ नंदण तुं सुकुमाल ।  
 धीर जिणंदह चरण पुण सुणि वाचनउं फालु ॥ ४८ ॥  
 भार माइ सुखिय वट्टइ रासद्वसहपमुक्क ।  
 आरंकुसकसि ताडियइं ताहं कु जाणइ दुक्खु ॥ ४९ ॥  
 मयलंछण जिम तारयहं सयलहं किल भत्तारु ।  
 तं वत्तीसहं वट्टअरहं एक्खु देव आघारु ॥ ५० ॥



माह महामुणि धीमजिण कुलगुरु मह संताणि ।  
 तसु महं अप्पं अप्पिउं जिम सुहु होइ नियाणि ॥ ५१ ॥  
 यह तउं संजमु लेसि सुअ मेल्हिवि सयलु सिणेहु ।  
 ता गोभहु अभागिइउ हा धिगु छुइउ गेहु ॥ ५२ ॥  
 याइवनाइगु नेभिजिण गुणसोहग्गनिवासु ।  
 माह सिद्धिपट्टणि गयउ मेल्हेविणु गिहवासु ॥ ५३ ॥  
 रहि रहि नंदण वयणु सुणि मा मा महं संतावि ।  
 तुह विणु नितु कुण पूरिसइ मुक्काहरणह वावि ॥ ५४ ॥  
 राहडि पूरिय माह तहं महुकेरी सविवार ।  
 दिक्क दियावह जिणभणिय जा तियलोअह सार ॥ ५५ ॥  
 ल्हकहंसउं संजमु लियण नंदसेणु मुणिराउ ।  
 सो संजमुप्पव्वइपडिउ सुअ भोगह कम्मपसाय ॥ ५६ ॥  
 लाहइं विणिज्जु करेसु हउं छेहउ माह चपसु ।  
 ईणि असारि देहडि य संजमु सारु गहेसु ॥ ५७ ॥  
 वच्छ ति नारी दुक्कनिहि जाहं न कंतु न पुत्तु ।  
 मुहुत्तइं नंदण जाइयइं हिंवि आविउं निरुत्तु ॥ ५८ ॥  
 वार स माह सलक्कणीय तं मुहुत्तु सुपवित्तु ।  
 धल ति वंधव जणइजण चरणु लेइजइ पुत्त ॥ ५९ ॥  
 सहसाकारिहिं गहियवउ सुमइ कंडरिएण ।  
 नंदण तेण य नरइहुह पामिय भट्टयण ॥ ६० ॥  
 सारउं साटउं मिलिय मुह माह कहिउ तउ सम्मु ।  
 वीरनाहु किउ ववहरओ लेसु नरणु धणु रम्मु ॥ ६१ ॥  
 एलह मणोरेह इजिसइं सज्जण होसिइ सोसु ।  
 नंदण तुं थाइसि समणु एउ महु कम्महं दोसु ॥ ६२ ॥  
 पाससासवेयणपमुहवाहि माह तणु मूल्ह ।  
 जीउ तेहिं वंधोलियह उड्डइ जिम लहु तूल ॥ ६३ ॥  
 समल देह कप्पड समल रत्तिदिवस गुरुआण ।  
 होइसिइं तुं भद्दा भणइ परआइत्त पराण ॥ ६४ ॥

सालिभद्दु जंपइ जणणि ए महु कहिउ जिणेण ।  
 संजमविणु भवभयहरणु ताणु न किञ्चइ केण ॥ ६५ ॥  
 हसतरोअंता पाहुणउ ताम हसंता होउ ।  
 सालिभद्दु संजमु लियइ महु बुज्झिअइ पमोहु ॥ ६६ ॥  
 हारमउडकुंडलकलिउ चडिऊ पुरिसविमाणि ।  
 वीरपासि पट्टतउ कुमरु जण दिज्जंतइ दाणि ॥ ६७ ॥  
 क्षमासमणि भद्दातणइं दिखिउ जिणिहि कुमार ।  
 सालिभद्दु यहु तयु करइ आगमु पढइ अपारु ॥ ६८ ॥  
 क्षामेविणु जिण मुनिसहिउ अणसुणु गहिउ उवहु ।  
 सव्वइह सिद्धिहि गयउ सालिभद्दु तहिं धहु ॥ ६९ ॥  
 महाविदेहि सु मुणि गहवि केवलनाणु लहेवि ।  
 सासपसुकु वि पाविसहि भविणइ धम्मु कहेवि ॥ ७० ॥  
 इह कहियउ कक्कह कुलउ इकहत्तरि कडुयाइ ।  
 भविणउ संजमु मणि धरउ पढहु गुणहु निसुणेहु ॥ ७१ ॥

सालिभद्दकाक समाप्त.

## दूहामातृका

भले भलेविणु जगतगुरु पणमउं जगह पहाणु ।  
 जासु पसाइ मूढ जिय पावइ निम्मलु नाणु ॥ १ ॥  
 उँकारिहि उचरउ परमिट्ठिहि नवकार ।  
 सिवमंगलु कल्लाणकरो जासु वि नामुचारु ॥ २ ॥  
 नवनिहि धम्मिहि संपडए सक्कचक्करिरिडि ।  
 धम्मु इक्क करि धोर जिय सह कर आवइ सिद्धि ॥ ३ ॥  
 मणगयवरु झाणुंकुसिण ताणिउ आणउ ठाउं ।  
 जइ भंजेसइ सोलवणु करिसइ सिवफलहाणि ॥ ४ ॥  
 सिज्झइ तरु सवि कज्जट जसु हियइइ अरिहंतु ।  
 चित्तामणिसारिच्छ जिय णहु महाफलु मंतु ॥ ५ ॥  
 धंधइ पडियउ जीव तुहुं न्निणि न्निणि तुइइ आउ ।  
 दुग्गइ कोइ न रक्खिसइ सपणु न धंधयु ताउ ॥ ६ ॥

अणहंता पयडेसि तुहु दोस पराया मूढ ।  
 नियदोसण पव्वयसरिस ते सवि कारिस गृह ॥ ७ ॥  
 आह किजिय जिणधम्मु करि सुत्थइ संबलु लेवि ।  
 अग्गइ किंपि न पामिसण अत्थइ भरिया गेह ॥ ८ ॥  
 इण भवि लब्धी रिद्धि पइ परमवि केव लहेसि ।  
 अच्छिसि तिणि घणि मोहियउ जइ न सुपत्तह देसि ॥ ९ ॥  
 ईसरु देखिउ कोह नरु नीघिणु मणि दमेइ ।  
 एउ न जाणइ मूढ जिउ जणु वावियउं लुणेह ॥ १० ॥  
 उप्पलदलजलविडु जिय तिव चंचलु तणु लच्छि ।  
 धणु देखंता जाइसए दइ मन भेलत अच्छि ॥ ११ ॥  
 ऊयरु जउ भरिवउं कुपुरिसह तो भरियउ भंडार ।  
 इक्खि जीव पुत्तिहि पवर लक्खह कोडि आधार ॥ १२ ॥  
 रिणि राउलि जलि जलणि घरि तक्करि धणु घणु जाइ ।  
 धम्मकज्जि जउ मग्गियए ताव परमुहु थाइ ॥ १३ ॥  
 रोस करंता जीव रोह अच्छइ अवगुण तिग्गि ।  
 अप्पउं ताविसि परु तवसि परतह हाणि करेसो ॥ १४ ॥  
 लिहियउं लब्भइ सिरतणउं जइ चालियइ समुहु ।  
 लच्छिहि केसवु संगहिउ तिणि विसि धारिउ रुहु ॥ १५ ॥  
 लीलइ धम्मु जु होइसए सेवंता जिणनाहु ।  
 सं नवि मिच्छत्तिहि सहिउ जइ तपु करिसि अवाहु ॥ १६ ॥  
 एकहि ठावि वसंतडा एवहु अंतरु होइ ।  
 अहिउंकिउ म्हायिलु मरण मणि जीवइ सहु कोइ ॥ १७ ॥  
 ऐ आणाइ समतण जीव न वृद्धइ हेव ।  
 हिंडइ रोसि पूरिया न करइ उपसमसेव ॥ १८ ॥  
 ओदउ तहु लोभहतणउ जीव न फिट्ठइ निच्चु ।  
 अहनिंसि तेण भमाडियउ न गणइ किच्चु अकिच्चु ॥ १९ ॥  
 औसरि नेह अभिग्ग पुणु पिच्छिस हिय भजंति ।  
 चंदूपल किरणेहि तहि दूरठिया विहसंति ॥ २० ॥  
 अंधउ अंधइ ताणियए कवणु कहेसइ मग्गु ।

केवलपहु निब्बाणि गउ धम्मु मतंतरि भग्गु ॥ २१ ॥  
 अकयधम्मि जइ माणुसह हुइ नवकारु वि अंति ।  
 तिणि पुत्तिहि तह देवगइ अहवा मुत्ति न भंति ॥ २२ ॥  
 कवडिहि माया मूढ जिउ वंचइ लोउ अप्पाणु ।  
 तिणि पाविहि भवि भवि दुहिय नवि पावइ निब्बाणु ॥ २३ ॥  
 खज्जइ कालु कयंत जगि को अज्ज वि को कल्लि ।  
 संजमि गयवरि आरुहिउ सिद्धिसरणि जिय चल्लि ॥ २४ ॥  
 गयवरमत्ता जेम हिव मा हिंडसि नरसीह ।  
 हणि कत्ताय दमि इंदियइ गणिया लब्भइ दीह ॥ २५ ॥  
 घडिय न लब्भइ अगलिय इंदह अत्तइ वीरु ।  
 यउ जाणिउं जिणधम्मु करि जायह वइह सरीरु ॥ २६ ॥  
 डवि जाणिज्जइ सो दिवसु जणु पुणु मरइ निरुत्तु ।  
 छडेविणु घरहल्लोहलउ धम्मु करेवा जुत्तु ॥ २७ ॥  
 चंचलु चित्तु पवंगु जिम वयवंधण न धरेसि ।  
 धम्मरामि विणासियइ मूढा हत्थ म लेसि ॥ २८ ॥  
 छन्नउ पयडउ जीव तुहुं उज्जसु करि जिणधम्मि ।  
 सुहियं दुहियं माणुसह पासु न मेल्लइ कम्म ॥ २९ ॥  
 जरजज्जरि देहडी हुई य पंडरि ह्या केस ।  
 अरि जिय धम्मु करेजि तउं गइय स वालियवेस ॥ ३० ॥  
 झलहलंत जिणवरपडिम जेइ करायह दब्बि ।  
 सग्गपवग्गहतणा सुह ते पामेसइ सव्वि ॥ ३१ ॥  
 ज हु चिंतता विहवसिण कज्जु अनेरउं होइ ।  
 राउलि धलियउ दुब्बलउ देव न बलियउ कोइ ॥ ३२ ॥  
 टलइ मेरु नियठाणह जइ पच्छिम उग्गह सूरु ।  
 पुज्य कियउं तो नवि चलइ कम्ममहाभरपूरु ॥ ३३ ॥  
 ठगियउ हिंडिसि जीव तुहु घारिउ विसि मिच्छत्ति ।  
 सम्मत्ताह रयणह रहिउ न लहसि सिवसंपत्ति ॥ ३४ ॥  
 उणउ जेम्ब गलि संकलिउ भवि भवि कुणबउ जीव ।  
 नवि छुट्ठिज्जइ तो वि तह जइ लंघिजइ दीबु ॥ ३५ ॥  
 दणहणंति इंदिय तुरय पाडेसइ भवखोहि ।

देविणु वरसंजमिकविउ अरि जिय सग्गि निरोहि ॥ ३६ ॥  
 णवि हसंतु वि जोइयए निचलु झाणु घरेवि ।  
 ता दीसइ जिम जगतगुरु सहजाणंडु सु देउ ॥ ३७ ॥  
 तउं एकल्लउ सहसि जिय खाएसइ परिचार ।  
 विहवु विहंविउ लेइ जणु पाव न विहचणहार ॥ ३८ ॥  
 थकेसइ घणु सघणु जणु कोइ न सरिसउ जाए ।  
 पावु पुछु तं अज्जियए तं परि अग्गइ थाइ ॥ ३९ ॥  
 देइ देइ मन आलसु करि महुरालाविहि दाणु ।  
 चलिय देइ हिव विहवसिण करि सफलउ अप्पाणु ॥ ४० ॥  
 धर उप्पज्जइ केवि नर परउवयारसमत्थ ।  
 कइ देइ के कम्मवसि जणजण उड्डइ हत्थ ॥ ४१ ॥  
 नइ बहमाणी सघणजल सुकइ इयर तलाय ।  
 दापर बड्डइ रिद्धिडी मग्गण निघण धाइ ॥ ४२ ॥  
 पढिउ शुणिउ घणु तवु तविउ संजमु किउ चिरकालु ।  
 जइ कसाय नवि वसि करसि ता सहु इंदियजालु ॥ ४३ ॥  
 फलु दिक्खिउ तरवरतणउं दिहि म घल्लिसि बाल ।  
 तं नवि पाविसि पुत्तविणु छड्डिसि पारी लाल ॥ ४४ ॥  
 बलि किज्जउं तह सुहगुरुह जा जशु मारगि लाइ ।  
 उम्मग्गह दंसणि गमणि जणु पुणु पुहवि न माइ ॥ ४५ ॥  
 भरहेसरि आपरिसघरे उप्पज्जउं धरणाणु ।  
 भावण सच्चहि अग्गलि य तपु संजमु अपमाणु ॥ ४६ ॥  
 मयणु न खीणउ जाहतणि ते नवि वंभचारि ।  
 मयणविट्ठणह संजमि लुंचणि छारि न दोरि ॥ ४७ ॥  
 जसि घवलिउ जशु जेहि सुणि नाउं लिहाविउ चंदि ।  
 कम्म हणवि जे सिद्धि गय ताह चलण नितु वंदि ॥ ४८ ॥  
 रे वाहा मग्गेण वहि मा उम्मूलि पलास ।  
 कल्हे जलहरु थक्किसए कयण पराई आस ॥ ४९ ॥  
 लइ वयभरु परिहरवि घरु भंजिवि भवनियलाइं ।  
 जाव न पडुच्चइ तुज्झतणि जमरावस्स दलाइं ॥ ५० ॥  
 घयणु न जंपउ दीणु कसु जं भावइ तं धाउ ।

अधिरकडेवरकारिणिहि कहि किम खिज्जइ काउ ॥ ५१ ॥  
 सुमिणंतरि मेलावडउ अहनिसि पहर चियारि ।  
 पसरिय निय निय दिसि चलए अरि जिय सुमणु विचारि ॥ ५२ ॥  
 परकिसोर मत्तकरि दमइ करि करेविणु कटु ।  
 निय जीवु कोवि न वसि करए थिउ गलियारु विघट्टु ॥ ५३ ॥  
 संजमि नियमिहिं जे गया ते गणि सारा दीह ।  
 अवर जि पावारंभि गय ताह फुसिज्जउ लीह ॥ ५४ ॥  
 हिंढेविणु भवकोडिसइ लडउ माणुसजम्मु ।  
 तत्थ वि विसयह मोहियउ न करइ जिणवरधम्मु ॥ ५५ ॥  
 क्षणभंगुरु देहहतणउं अरि जिय कोइ विसासु ।  
 भाव न सुचइ जिणु मणह जाव फुरक्कइ सासु ॥ ५६ ॥  
 मंगलमहासिरिसरिसु सिवफलदायणु रम्मु ।  
 वृहामाई अक्तियइ पउमिहिं जिणवरधम्मु ॥ ५७ ॥

इति श्रीधर्ममातृका समाप्ता ।

## चर्चरिका



जिण चउघोस नमेविणु सरसइपय पणमेवि ।  
 आराहउं गुरु अप्पणउ अविचलु भावु धरेवि ॥ १ ॥  
 फर जोडिउ सोलणु भणइ जीविउ सफलु करेसु ।  
 तुम्हिं अवधारह धंमियउ चचरि हउं गाणसु ॥ २ ॥  
 मणि उंमाहउ अंमि सुहु मोकह्छि करिउ पसाउ ।  
 जिय्म जाइवि उज्जितगिरि बंदउं तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥  
 नइ विसमी टुंगर घणा पूत दुहेलउ मग्गु ।  
 भूयटियह सणसि तुहुं दूवलि होसइ अंगु ॥ ४ ॥  
 वालइ जोपणि नं गिया अंमि जि तहिं गिरिनारि ।  
 ते जंमंतरि दूत्थिया हिंढहिं परघरवारि ॥ ५ ॥  
 इअ असारी देहडी अंमि जि विटपइ साळ ।  
 तिणि फारणि उज्जितगिरि बंदउं नेमिक्कुआळ ॥ ६ ॥  
 फरि फरयत्ती कूपटी सिरि पोडली ठवेयी ।

मिलिषउ धम्मिपसाधउ उज्जिलमग्गि वहेई ॥ ७ ॥  
 इह वढवाणइ चउहटइ दीसइ सोहविमाणु ।  
 रंनहुलइ बोलावो अंमुलअग्गेवाणि ॥ ८ ॥  
 इय वढवाणइ जि हटइ हियडउं रह न करेइ ।  
 दिवि दिवि धंदइ नेमिजिणु चडियउ गिरिसिहरेहिं ॥ ९ ॥  
 पाइ चहुटइ कक्करीउ उन्हालइ लू वार्ह ।  
 जे कायर ते बलिपा जे साहसिय ते जाइं ॥ १० ॥  
 साहिलडा सरवरतलिहिं उग्गिउ दवणछोडु ।  
 उज्जिलि जंते धंमिणु गुंथिउ नेमिहिं मउडू ॥ ११ ॥  
 सहजिगपुरि थोलेविणु गंगिलपुरहिं पट्टुचु ।  
 माडो कहिजि संदेसडउ अंनु जिणेजे पुत्तु ॥ १२ ॥  
 जइ लखमीधरु बोलियं पेखिवि बहु य पलास ।  
 तउ हियडउं निवरु थिउं मुक्क कुटुंबह आस ॥ १३ ॥  
 विसमिय दोस्तडि नइ धणिय हुंगर नस्थि छेऊ ।  
 हियडउं नेमि समप्पियउं जं भावइ तिव मेऊ ॥ १४ ॥  
 करबंदियालं बोलियउं अणंतपुरु जहिं ठाई ।  
 दिव्रउ तहि आवासडउ हियउं विअडि थाई ॥ १५ ॥  
 नालियरीहुंगरितडिहिं बहुचोराउलिठाई ।  
 धम्मियडा बोलिउ गिया अमुलतणइ सहाई ॥ १६ ॥  
 भालडागदुसुंनउ अविषडउं यसेइ ।  
 धम्मिप कियउ बीसाबट सुरधारडीघरेहिं ॥ १७ ॥  
 ओ दीसइ उहुंघलउ सो हुंगर गिरमार ।  
 जहिं अच्छइ आवासियउ सामिउ नेमिकुमार ॥ १८ ॥  
 मंगूखंभि न मणु रहिउ अंनु वहडेउ दिट्टु ।  
 खडहड अंनु पप्पालियं गोवाडलिहिं पट्टु ॥ १९ ॥  
 भाद्रनई जइ बोलिउ नाचइ धंमिउ लोउ ।  
 उज्जिलि दीवउ बोहियउ सुरठडिय हउ जीउ ॥ २० ॥  
 खंडइ देउलि जउ गिया सांकलि बोलिवि ।  
 धंमिय कियउ आवासडउ वंचूसरितलि बेई ॥ २१ ॥  
 उज्जिलमग्गि बहंता रजु लागइ जसु अंगि ।

वलि किज्जउं तसु धम्मियह इंदु पसंसह सग्गि ॥ २२ ॥  
 जे मलि मइला पहियडा ते मइला म भणेजे ।  
 पावमली जे महलिया ते मइला ह सुणेजे ॥ २३ ॥  
 एउ थाउह लोडउं कोटउं तलि गिरिनारु ।  
 ओ दीसइ ववणथली धवलियतुंगपयार ॥ २४ ॥  
 घर पुर देउल धवलिया धज धवली दीसंति ।  
 धंमी सा ववणथली ऊजिलितलि निवसंती ॥ २५ ॥  
 वडणथली मेलेविणु जउ लागउ गढमग्गि ।  
 तउ धंमिउ आणंदियउ हरिसु न माइउ अंगि ॥ २६ ॥  
 रिसहजिणेसरु वंदियउ गढि आवासु करेवी ।  
 नाचइ धंमिउ हरसियउ हियडइ नेमि धरेवी ॥ २७ ॥  
 गढु बोली जउ चालीयउ तउ मणि पूरिय आस ।  
 वलि किज्जउ हउं जंघडिय जोयण वूढ पंचास ॥ २८ ॥  
 दोलह उपरि मागहउ सो लंघणउ न जाइ ।  
 पाउ खिसियउ विसमउ पढइ हिर्य विअडइं थाई ॥ २९ ॥  
 अंचणबाणी नइ यहइ दिहु दमोदरु देउ ।  
 अंजणसिलहिं जि अंजिया धन्न ति नयणा वेउ ॥ ३० ॥  
 तरवरुतणइ पलांवडे रुढउ माणु जंघेयि ।  
 कालमेणु जोहारियउ बलापदि जाणवी ॥ ३१ ॥  
 अंवाजंबूराइणिहिं वहु वणराइ विचिच ।  
 अंघिलिण करवंदिणहिं वंसजालि सुपवित्त ॥ ३२ ॥  
 नीझरपाणिउ खलहलइ वानर करहिं चुकार ।  
 कोइत्तसहु सुहावणउ तहिं हुंगरि गिरिनारि ॥ ३३ ॥  
 जउ मइं दिट्ठी पाजडी वंच दिहु चडाऊ ।  
 तउ धंमिउ आणंदियउ लड सिवपुरि ठाउ ॥ ३४ ॥  
 हियडा जंघउ जे यहइं ता ऊजिति चडेजे ।  
 पाणिउ पीउ गइंदवइ हुम्व जलंजलि देजे ॥ ३५ ॥  
 गिरिवाइं झंझोटियउ पाप धाहर न लहंति ।  
 कडि ओढइं कडि धाणी हियडउं सोसह जंति ॥ ३६ ॥  
 जाय न धंधलि घल्लिया लखुपत्तीपाण ।



तांव कि लब्धहिं चितिया हियडा ऊणत्ताण ॥ ३७ ॥

हुंगरडा अधो फरिं लग्गउ सोयलि वाउ ।

ह्य पुणं नवदेहडी अंमुलि कियउ पसाऊ ॥ ३८ ॥

चर्चरिका समाप्ता

## मातृकाचउपइ

त्रिभुवनसरणु सुमरि जगनाहु जिम फिट्ठइ भवदवं दुहदाहु ।

जिणि अरि आठ करम निर्हलीय नमो जिन जिम भवि नायऊ बलिय ॥ १ ॥

आंचली-सयि अरिहंत नमिवि सिद्ध सूरि उज्झावय साहु गुणभूरि ।

माईयवावनअक्षरसार चउपईवंधि पढिउं सुविचारु ॥ १ ॥

भले भणेविणु भणीअइ भलउं तिहुयणमाहि सारु एतलउं ।

जिनु जिनवचनु जगह आधारु इतीउ भूकिउ अवरु अस्सारु ॥ २ ॥

मीहउं पढिउं भवनागमा जउ समिकत्ति लीणु आतमा ।

जिनह वयणि करिजे निहु ठाउ हृदय रहवि तिहुयणनाहु ॥ ३ ॥

लीह म लंघिसि जिणवरिभणी जो रिधि बंच्छह सिवसुहतणी ।

चहुंगति फीटइ फेरउ यडउ पाच्छइ जाइउ सिवगढि चडउ ॥ ४ ॥

लीहं बीजी वे उपरि करे देवु गुरु होयडइ संभरे ।

क्षणु एक मन करिसि प्रमादु जिम तुम्हि पामउ मुक्तिसवाहु ॥ ५ ॥

ॐकारि सुमरि अरिहंतु जो अठकमहं कालु कियंतु ।

अनु सिवसुखत्तणउ दातारु मनह म सेलिहसि तिहुयणसारु ॥ ६ ॥

नव निहाण ते पामहं तिम जीह जिणवयणु हियइ परिणमह ।

सिवसंपत्ति तीहहकडी जीह जिणआण हियइंसउं जडी ॥ ७ ॥

मनु चंचलु जे अविचलु करहं जिणह आण सिरऊपरि धरहं ।

हणइं कसाय इंदीय संवरहं ते सिवनयरि सुखि संचरहं ॥ ८ ॥

सिद्धउं काजु सहू तोहतणउं जेहि जीवि कीधउं जिणवरमणिउं ।

छेदिउ आठकरमनी बेलि गया मुक्ति दुई पेलावेलि ॥ ९ ॥

वंधइं पढिया दीह मन गमउ अप्पारामि जिणवरिसउं रमउ ।

भयह तापु नवि लागई अंगि उडु बहुफलु पामउ सिवसंगि ॥ १० ॥

अनुव्रतु जिनह आण मनि घरे उपसमु विवेकु संवरु करे ।  
 अरिवर्गु अंतरंगु निग्रहे इणि परि जीव सुकृतु संग्रहे ॥ ११ ॥  
 आलिहि अलीउ म झंपिसि किमह जे जिनुवयणु हियई तू गमह ।  
 करमुयंधु पढतउ चीतवे भापासमि वि सहजि अनुभवे ॥ १२ ॥  
 इणि संसारि दृपभंडारि लइन जीव काय धम जगारि ।  
 धीतरागि जं आगमि कहीउ करे तह जि यणु भावनसहीउ ॥ १३ ॥  
 ईमह म कारसि कूडउ सोसु सोचइ जिनह बयणि करि तोसु ।  
 जोइउ आगमतणउ विचारु पाच्छइ भरिन परतभंडारु ॥ १४ ॥  
 उप्पलदलउप्परि जिम नीरु ते सउं थंचलु जीव सरीरु ।  
 धणु कणु रइणु सइणु तिम सह दीसइ धम्म एणु घर रह ॥ १५ ॥  
 उपरि देखि दैव न हु हायु तेरहि तिहुयणि कोइ न सनायु ।  
 नासीउ पइसिजान जिनसरणि जिम न पामीअह जंमणमरणि ॥ १६ ॥  
 रिद्धिहितणउ लाभु हम लेजि सातिहि पेति धीतु वावेजि ।  
 उपर सिंचे भावनानोरि वगसरु नोही जिम ताहरइ सीरि ॥ १७ ॥  
 रीणु दीणु ते थहुगति भमइ जे जिन धीतराणु नवि ममइ ।  
 नोही काइ धरमवासना ते नही जाई सुक्किआसना ॥ १८ ॥  
 लिपावीइ सुतु सीद्धंतु तेह लाभ नवि लाभइ अंतु ।  
 ज्ञानतणउ गुण एवइ कोइ धीतराग तु ज्ञानलगु होइ ॥ १९ ॥  
 लीलअमत संसारु तरेसि जइ जीव जिनधमु परहुणु लेसि ।  
 सुगुरनी जाम बिलगीउ करी जान जीव भवसाइरु तरी ॥ २० ॥  
 एकह परि पामिसि भवपारु जइ समिकत कर अंगीकारु ।  
 बीरनायु कहइ आगमि तोइ विणु समिकत सिद्धि नवि होइ ॥ २१ ॥  
 ए अ वचनु जोइ जिणवरतणुं तहि ऊपमा किसी हवं भणउं ।  
 जिणहं वइण न ऊपम काइ त्रिभुवनतणी सुद्धि जेह माहि ॥ २२ ॥  
 ओघहं पडीउ पाणु जे करिसि तउ संसारु अनंतउ फिरिसि ।  
 जोईउ पणु सिद्धंत विचारु करिसि धम्म तउ पामिसि पारु ॥ २३ ॥  
 ओपधु करे जीव जिनि भणिउं अछइ दुपु अठकरमहतणउं ।  
 बाहिजि ओपदि काई तु याइ धरमोपधविणु दुपु न जाइ ॥ २४ ॥  
 अंतु न लाभई इह संसार काइ तु जीव हीइ न विचार ।  
 एक जु धमु करे सपाइ लेउ मेल्हइ सिवनअरीमाहि ॥ २५ ॥

अनुदिनु भक्ति करे जिनराय पूजि त्रिकाल तासु पहुपाय ।  
 मानपतु दोहिलइं पामेसि पाच्छइ जिनपति काहा नमेसि ॥ २६ ॥  
 कपदिहि मायां वंचइं लोकु ते नवि लहइं सिद्धिसंजोगु ।  
 भमइइं जीव चहुंगतिहि मज्झारि इणपरि भव पूरइं संसारि ॥ २७ ॥  
 खज्जइ जगु एउ कालकु अंति एह एतला नही काइ अंति ।  
 जिणह घइणु विडिजा इकमणउ भउ फीटिसइ कितांतहतणउ ॥ २८ ॥  
 गन्धवासि जो दिलउं जाण तउ तउं माने जिनवरआण ।  
 फेइइ वुपु सह जिनराउ तउ सिवनइरि अ पावइ ठाउ ॥ २९ ॥  
 घरिं घरु हिंडिसि जीव अणाहु जइ न नमिसि जिनु तिहूअणनाहु ।  
 जिनुधमविणु सुपु नहीं संसारि अवर टमालि दीस मन हारि ॥ ३० ॥  
 उब्धइं सरिसु धम्मु जइ करिसि तउ भंडोरु परत नउ भरिसि ।  
 जे यणु लागिसि लोकप्रवाहि रडभड हुइसइ चुहुंगतिमाहि ॥ ३१ ॥  
 चक्रवति पदपंडइ धणी हंती रिद्धि तीहंनइ धणी ।  
 जो रिद्धिहिं परित्ताणु होउ त वंशु संभुमु निरगि नवि जंत ॥ ३२ ॥  
 छविह जीव करेजे रप जइ तुम्हि जिणसासणि छउ दप ।  
 आतमवत्तु जीव सवि गणे धम्मह तउं सारु इउ सुये ॥ ३३ ॥  
 जगगुरु जगरपणु जगनाहु जगबंधु जगसथवाहु ।  
 जगतारणु जिउ जगआधार जिणविणु अवरि नही भवपारु ॥ ३४ ॥  
 जइइ पापु जिम तरुअरि पनु जइ मनमाझि यसइ इकु जिधु ।  
 जापुलसेपुलि कांइ करेसि जिनि एकलइं सुकति पामेसि ॥ ३५ ॥  
 असिदिशु पंचप्रमिष्ठि सुमरेजि इणपरि असुभुं करमु पपेजि ।  
 सुभउं करमु वाघजे घणउं जिम सुपु लह सिवनगरीतणउं ॥ ३६ ॥  
 दलइ मेरु जो परवतरानु जो रवि पच्छिम ऊगई आनु ।  
 जो सायरु मिल्हइ मज्जाइ तोइ जिनभासिउं अलीउ न धाइ ॥ ३७ ॥  
 ठगीसि रापे कुगुरि कुवोधि जिनकसवटो लेजे सोधि ।  
 पूजइवानी आसतणी रिधि संगहे सुकितनी धणी ॥ ३८ ॥  
 दसीइ कालमूअंगमि लोकु तेह नवि लागई औपघजोगु ।  
 धीतराग भंत्रवादी य विणउं विसु पसरइ अठकरमहतणउं ॥ ३९ ॥  
 दलिइ पासइ देजे दाउ घणरणजीवन करिसि म गाउ ।  
 जगसरुपु देपे इंदीआलु करे धमु परहरीउ टमालु ॥ ४० ॥

णवणवपरि भग्गऊ भवचारु सांमीअ करिउ अम्हारी य सार ।  
 असरणसरणु तुहं जि जगनाह भवि पडंत अम्ह देजे वाहु ॥ ४१ ॥  
 तनु धनु जीवीउ जौवनु जोइ रिद्धि समिद्धि सहअणु सह कोइ ।  
 दिवस पांच मेलावउ होइ पाछइ वलीउ न दोसइ कोइ ॥ ४२ ॥  
 धरपर कंपइ काइरचित्त देपीउ मुनिवर माहासत्त ।  
 धीरा सत्तवंत जे जाण पालइ दीपसहीउ जिणआण ॥ ४३ ॥  
 दमि इंदिअ दुग्गइदुआर लूसीउ लिअइ सुक्खितु सविचार ।  
 जे न जिणिसि जिणवयणविचारि देसिइं दूषु बहसंसारि ॥ ४४ ॥  
 धरमध्यानि करि निमलु चित्तु जिम हुइ जीव जनमु सुपवित्तु ।  
 धमिहि सिवह सौपसंपत्ति धमिहि वलीउ न भवि उत्तपत्ति ॥ ४५ ॥  
 नर नीतु नमो नीमि जिणनाहु आठकरम जिणि दिन्हौ दाउ ।  
 मोहराउ रिणि भंजीउ करी लीलहं लई सामि सिवपुरी ॥ ४६ ॥  
 पढइ गुणइ वरकाणइ सुत्तु पुणु वुझइ नही तोइ ततु ।  
 रागुं वेपु मनभीतरि धरइं ईमइ वेत्तविडंवउ करइं ॥ ४७ ॥  
 फलइ करमु परभवइतणउं जइ रिद्धिरहि जीउ हीडइ घणउं ।  
 दुपु सुपु सह पइ लागम आवइ सिजिउं सरिसु आतमा ॥ ४८ ॥  
 बलि कीउ जीवीउ तीहं संसारि जे दिन गमइ पापव्यापारि ।  
 सफलु जनमु तीहं नरनारि जे जिनधमि द्विइ चित्तमझारि ॥ ४९ ॥  
 भविं भवु बोलइं जीव अनंत जाणइं नही वइणु अरिहंत ।  
 न सुणइं अंतरु पावइ पुणु तीहं सोकल कांइं सिरिज्जा कान ॥ ५० ॥  
 मइणु जि मारइं ते जगि सूर जे मारीपइं मइणि ते भूर ।  
 धीरा सुभट सत्तु ऊटवइ मारीउ मयणु नाउं नीठवइं ॥ ५१ ॥  
 य करइं लप्पु नीमु संझमु तीहं दुर्गतित्तु नही कोइ गंमु ।  
 जीहं स रोईउ हुइं जिनधंमु विलसइं मुकतिसोपु निरुपंमु ॥ ५२ ॥  
 रहिसिइं पूत कलत्त घरवारु रहिसिइं सहणु सह परिवारु ।  
 रहिसिइं धणुकणुरइणुभंडारु जीव एकलउ जाइ निधारु ॥ ५३ ॥  
 लइ जिनदीप मूकि संसारु आठकरम दहीउ करि च्छारु ।  
 निरुपमु सुपु सिवनहरीतणउं लहिसि जीय आगमि जिनभणिउ ॥ ५४ ॥  
 वचनव्यापु जोइ जिणवरतणउ अरथ गंभीरु अच्छइ तहिं घणउ ।  
 जो साइरि जलविदहं पारु तउ लभइ सिद्धंतविचारु ॥ ५५ ॥

शरउपरि मूढा मन पेलि जिनधमु लाघउ पाइ म ठेली ।  
 तिहुअणचिंतामणि जिनधम्मु करीन जीव भाजइ भवभ्रंसु ॥ ५६ ॥  
 पणि पणि आउ गलंतउ देपि भवि पडंतु अपुं म ऊयेपि ।  
 करि न धम्मु जं केवलिकहीउ जा सिवपुरि लेपउं विखहीउ ॥ ५७ ॥  
 सहजि जीउ भवगूतलि करइ कर्म बुद्धरादाणी घणु घरइ ।  
 जे कर्मतणउ नही य ऊधारु भवगोतिहिं दुखु सहिसि अपारु ॥ ५८ ॥  
 हरिपु बिपाडु करिसि मन कोइ जइ जीव आपद संपद होइ ।  
 अवशु फलीसइ पुवभवकिउं नं भोगवै कोइ अणकिउं ॥ ५९ ॥  
 जंघइ दीव पुहवि समुह गिरिकंदरा भमइ बहुरुह ।  
 रिखिकाजि इत्सीउ रक्षभडइ न कौ धम्मु जिणि रिधि संपडइ ॥ ६० ॥  
 धुणुभंगुरु एउ सहइ जाणि म करिसि जीव घरमनी काणि ।  
 विणसइ सहइ कहइ आगम्मु अविनसुरु एकु जिणधम्मु ॥ ६१ ॥  
 मंगल करउं सवि अरिहंत जे अच्छइं सिवलच्छीकंत ।  
 मंगल सिद्धि सूरि उवज्झाय मंगलं करउं सालुणा पाय ॥ ६२ ॥  
 मंगलमूलु सबहिं आगम्मु जो जगमाहि अच्छइं निरुपम्मु ।  
 जसु अतिसइ न लाभइ अंतु मंगलु करउ सोइ जि सिद्धंतु ॥ ६३ ॥  
 जा ससिसूरु भूषणु ध्याणंति जा ग्रह नक्षत्र तारा हुंति ।  
 जा वरतइ वस्तुहव्यापारु तां सिवलच्छि करउ मंगलाचारु ॥ ६४ ॥

भातुकाचउपइ समाप्ता

## सम्यक्त्वमाईचउपइ

भले भणउं माईधुरि जोइ धम्मह मूलु जु समिकतु होइ ।  
 समिकतुविणु जो क्रिया करइ तातइ लोहि नीरु घालेइ ॥ १ ॥  
 ऊंकारि जिणु पणमेसु सतगुरुतणउं वयणुं पालेसु ।  
 आगम नवतत वृज्जिसि तिमईं समिकतु रयणु होइ तसु तिमइ ॥ २ ॥  
 नर नवकारु सुमरि जगसारु चउदह पुब्बह जो समुच्चारु ।  
 समिकत जइ लाभइ संसारिं जाणे छुरी पढी भंडारि ॥ ३ ॥  
 मनु चंचलु अट्टशाणि पडेइ घडियमाहि सातमिय ह नेइ ।  
 मनु मपगलु शुभ ध्यानु करंति प्रसन्नचंद जिम सिद्धिहिं जंति ॥ ४ ॥

सिद्धिसुख जगि सहु को लहइ दृढसमिकतु जइ हियडह रहइ ।  
 दृढ समिकतु श्रेणिकराय होइ प्रथम तिथंकरु होसइ सोइ ॥ ५ ॥  
 धन जि गुरपारपड करंति गुरु विणु समिकतु किमइ न हुंति ।  
 मुहुतु एकु समिकतु फरसेइ पुदगल अरधमाहि सिद्धि विनेइ ॥ ६ ॥  
 अच्छइ मोहचरहु इणि समइ समिकतु रयणु न लाभइ किमइ ।  
 कुगुरु सुगुरु अंतरु न हु करइ इणि कारणि नउगति जिउ फिरइ ॥ ७ ॥  
 आगमययणु पंचमइ अरइ केवलनाणु प्रभव हुइ परइ ।  
 इसइ कालि समिकतदृढचित्त ते नर जाणे जगइ पयिस ॥ ८ ॥  
 इणि भवि परभवि सुख लहेउ सतगुरुतणउ वयणु पालेहु ।  
 वीतराग जउ वंदिसि पाय ऊढइ पापु होइ निम्मल काय ॥ ९ ॥  
 इंदियालु जगि दीसइ लोइ वालवृहु न हु छटइ कोइ ।  
 धरमसंबलु जइ सरिसउ लेइ पार गया तउ सुखु माणेइ ॥ १० ॥  
 ऊगमतइ जे नर दीसंति चउंजणकंधि नदिया ते जंति ।  
 सुकिय दुकिय वे सरिसा चलइं सजनभीत बोलावी बलइं ॥ ११ ॥  
 ओसरि बाबियइ लाभु न हुंति सजलु होइ वीजइ चूकंति ।  
 सुधउं दानु मुनिहि जो बेइ संगमतणउ लाभु सो लेइ ॥ १२ ॥  
 रिद्धिहितणउ लाभु जगि लेहु दस खेधे तुम्हि धनु बाबेहु ।  
 दीन्हादानह नासु म जोइ सुपात्रि दीन्हइ बहुफलु होइ ॥ १३ ॥  
 रीतिहि दानह नथी निवार उचितु दानु दीजइ सविचार ।  
 कूसनभयसिउ जउ खहु बारंति पात्रविसेपिहि पीरु स दिति ॥ १४ ॥  
 लिहियं जगि लोढइ सउ कोइ कुपायु विसहरसादसु होइ ।  
 खोरु आणि जउ मुखि धातिपइ पात्रविसेपिहि तसु विसु धियइ ॥ १५ ॥  
 लीह न लंघउं सतगुरुतणी क्रिया करउं जा आगमि भणी ।  
 विधिमारगु मानउं सविचार जाणउं जइ छटउं संसार ॥ १६ ॥  
 एहु करेवउं नर संसारि त्रिजि बार जउ चडिउ विहारि ।  
 वीतराग जउ भणिउ करेसु दस आसातन नितु राखेसु ॥ १७ ॥  
 ऐ वार मेलिहु जियु पूजेसु रयणिहि रमणिगमणु वारेसु ।  
 न्हवणु तं दिजहि निसिभरि रहई तं विहिमंदिरु सतगुरु कहइ ॥ १८ ॥  
 ओ दीसइ मंदिरु जगि सारु धम्मरयणकरउ मंडारु ।  
 चउरासी आसातन नितु रापेसु मंदिरि दिवसइ बलि होएसु ॥ १९ ॥

ओपा दीसई बहुत गमार धंमहतणी न पूछई सार ।

जिण गुरि दीठइ दूरिहि जंति दुलहु माणुसुजंमु आलि गमंति ॥ २० ॥

अंतरु विधि अविधिहि जाणंति मंदिर पइठ निसिहि न करंति ।

तालारासु रयणि न हू देइ लउडारसु मूलह वारेइ ॥ २१ ॥

अइसउ मंदिरु जगि प्रवहणु होइ धंमिउ लोउ चडइ सुह कोइ ।

पंचप्रमिट्ठिनो जापउ करउ संसारसमुदु जिम लीलइ तरउ ॥ २२ ॥

कहियइ धूलिभहु मुणिराउ मयण चरड भंजइ भडिवाउ ।

छ विगइ सो जनु चित्रसाली रहइ जगइमाहि धूलिभहु लीह लहइ ॥ २३ ॥

खडभड रापि न इणि संसारि जुगप्रधान जोइ धंमु विचारि ।

सुडउ धरसु करिसि जइ किमइ जंमणमरणह छुटिसि तिमइ ॥ २४ ॥

गलइ आउ जिम अंजलिनीरु सीलु जु पालइ सो नर धीरु ।

कपिलनारि पेलइ विज्ञाणि सीलु सुदरसनतणउ वखाणि ॥ २५ ॥

घडतउ फोडतउ वार न लाइ कर्मतणी विसमी गति काइ ।

जं जं करसु करइ तं होइ लपमणि दससिरु जीतउ जोइ ॥ २६ ॥

निच्छइ साहसिउ वज्रकुमारु इंदु पसंसइ जो दयसारु ।

सुर वे आविया जउ सत पडइ कुमरु पारेवासउं धडि चडइ ॥ २७ ॥

चलइ सबलवाहणु मरनाहु वीरवंदन हुउ अतिघणुं भाउ ।

दसाणभहु अतिगरयु करेइ इंदिहि जीतउ रिधि दाखेइ ॥ २८ ॥

छंडइ राजु रिद्धि पणमाहि इंदि जीतउ तं न सुहाइ ।

वीरपासि संजमुभरु लेइ इंदिहि हारिउ चलण नमेइ ॥ २९ ॥

जनमु वयरसामिउ तिमसमइ छ मास रोयतउ रहइ न किमइ ।

धणगिरि विहरतु पहुतउ घरेइ साति पूतु हिय शोली घरेइ ॥ ३० ॥

झटफह तउ शोली घातिपउ भारि शुद्ध लेउ समपिउ ।

गुरु पभणइ पउ तिणि आपेहु कुमरह आवी सार करेहु ॥ ३१ ॥

निच्छइ जुगप्रधान जिउ होइ इह गुणवज्जणु सकइ न कोइ ।

पालणइ सुनउ श्रवणि सुणेइ इमारअंग तउ आणावेइ ॥ ३२ ॥

टलइ न पावज कुमरह किमइ मायटी झगडउ मांडियउ तिमइ ।

राज विदीतु पूतु हउं लेसु मंदिर नेतउ परिणावेसु ॥ ३३ ॥

ठप्पर मिलिया जगटउ करइ कुमरु अणावी तउ चिचि धरइ ।

यणफल रमणा सा दोइइ धणगिरि रजोहरणु दापेइ ॥ ३४ ॥

डगडगतउ मनु रहइ न किमइ मायटी भवि भवि लाभइ तिमइ ।  
 सुगुरुमेलावउ दुलहउ हुंति पंचमहाव्रत सीहगिरि दिति ॥ ३५ ॥  
 दाढसु कीयउं बालकुमारि सीहगिरि तउ हालियउ विहारि ।  
 सीस भणइं अम्ह वयण कु देइ वयरइ मुनि तुम्ह काजु करेइ ॥ ३६ ॥  
 न गणउं अवरसीस जयसीह सीहगिरितणा सीस हुइ लीह ।  
 अभिनयदीपितु वयण कु देइ सीहगिरितणउं वयणु मानेइ ॥ ३७ ॥  
 तपु संजमु किउ वरिससहसु जीवदया पालिय गुणह निवासु ।  
 अंतकालि अटझाणि पडंति कंडरीकु सातमियहं जंति ॥ ३८ ॥  
 पुंडरीकु वरिससहसु कीउ रज्जु विउ घडियहं तउ सारिउ कज्जु ।  
 पावज ले गुरु संसुहउ थाइ पंचविमाणे पुंडरीकु जाइ ॥ ३९ ॥  
 दस दिसि पसरिउ जगि जसवाउ नवअंगवित्तिकरणु गुरुराउ ।  
 धंभणि धप्पिउ पासजिणंउ पणमहु सुहगुरु अभयमुणिंउ ॥ ४० ॥  
 धनु सु जिणवह्लहु वक्काणि नाणरयणकेरी छइ ग्वाणि ।  
 वइतालीससुहु पिंहु विहरेइ त्रिविधुमंदिरु जगि प्रगटु करेइ ॥ ४१ ॥  
 नर निसुणहु सतगुर वक्काणु अंतस वूझउ थिउ सु जाणु ।  
 कुगुरवाणि तउ विसु उतरैइ सुगुरवाणि जउ अभिउ झरेइ ॥ ४२ ॥  
 परिणइ अट्ट नारि करि लेइ वृद्धवणइ वइठउ कथा कहेइ ।  
 प्रभयु चोरु मंदिरि पइसेइ असुयणनिंद सयलजण देइ ॥ ४३ ॥  
 फट्टउ जंबुकुमरु इम भणइ विचाहुमहोच्छयु प्रभयु न गणइ ।  
 जंबुकुमरु जउ इस्तउ भणंति सवि धंभिया टगमग जोयंति ॥ ४४ ॥  
 वंधव अम्हसउं साटि करेज विहुं विद्यावट्ट इक धंभणी देज ।  
 कुमरु भणइ विद्या कितउं करेसु रिन्नि परिहरी प्रहं वतु लेसु ॥ ४५ ॥  
 भणइ प्रभयु नवजोवण नारि परणिण पुत्तवमिण संसारि ।  
 कामभोग भोगवि इणि समइ जोवण गइ वतु लेजे तिमइ ॥ ४६ ॥  
 मयणु चरइ सो महं वसि किउ मोहराउ पाडिउ नाथियउ ।  
 मधुविंदसाटस इहु संसारु निसुणि प्रभय तहु जोइ विचारु ॥ ४७ ॥  
 जगु पिंटाणु सयलु वरतेइ तहु विणु पितरह पिंहु कु देइ ।  
 महेसरदत्तारुथा जउ कहइ प्रभयुउ सांभलिउ मनमाहि रहइ ॥ ४८ ॥  
 रतिपनि जाणउं तइं वमि कियउ नात्रानणउं मंघणु किम थियउ ।  
 अदारह नात्रारुथा कहंति प्रभयु सांभली तउ वृंमंति ॥ ४९ ॥



लहणउ लाभइ इह जगमाहि जंबुसामिघरि रिद्धि न माइ ।  
 हुंती रिद्धि कुमरु परिहरइ प्रभवु पराई लेवा फिरइ ॥ ५० ॥  
 वधणु कहउ पुणु नीजइ वाइ जंबुकुमार तुहु परिणिउं काई ।  
 वालकुमारउ तउं व्रतु लियत नियनियमंदिरि अद्वय रहत ॥ ५१ ॥  
 सांभलि प्रभव ज काइउं हुंत जइ घरि रह त संसारि पडंत ।  
 कथा कहिउ प्रतिबोधेसु नारि बलिउ न आवइ इणि संसारि ॥ ५२ ॥  
 पडभइ केही रिद्धिहितणी नवाणवइ कोडि सोना छइ घणी ।  
 जोमणइ हाधिहि तउ हउं देसु मणवंछिय भागण पूरेसु ॥ ५३ ॥  
 सा सिवकाजउ प्रगुणी करइ दानु दियंतउ तउं नीसरइ ।  
 माय बापु अडनारि चडंति पंचसयसहितु प्रभवु वइसंति ॥ ५४ ॥  
 हल्लिय सिविका गाजे रली बल्लिय ढक्क युक्क काहली ।  
 सिविका उत्तरिउ चलण नमंति सुहमसामि सइ हयि व्रतु दिति ॥ ५५ ॥  
 लंघिउ सायक जउ व्रतु लिउ पंचमगतिप्रस्थानउ कियउ ।  
 जंबुसामिउच्छु वेखेइ धहुतु लोकु जाइउ व्रतु लेइ ॥ ५६ ॥  
 खपउं पापु जउ पावज लई घरसंसारचित्त तउ गई ।  
 मनि जीतइ इंद्रिय बसि धाई करम जिणिय नर सिद्धिहि जाई ॥ ५७ ॥  
 मंगलु पहिलउ सोहमसामि बीजउ मंगलु जंबूसामि ।  
 अगणिउ मंगलु प्रभव भणंति चउत्थउ मंगलु नारिहि हुंति ॥ ५८ ॥  
 गणियइ जुगवरु सोहमसामि बीजउ जुगवरु जंबूसामि ।  
 ब्रीजउ जुगवरु प्रभवु भणंति सिज्झंभवु चउत्थउ जाणंति ॥ ५९ ॥  
 लंछणि सीह गोपसु पुच्छंति जुगप्रधान जगि केत्ता हुंति ।  
 विसहस चउं आगला कहेइ छेहिलउ दुपसहु तउ जाणेइ ॥ ६० ॥  
 मनउं जुगवरु जिणेसरसुरि पावु पणासइ दरिसण दुरि ।  
 सदेहु म करहु जिम समिकतु रहइ भवि भवि बोधित्रीजु जिउ लहइ ॥ ६१ ॥  
 हासामिसि चउपईवंधु कियउ माईतणउ डेटु मइ नियउ ।  
 ऊणउ आगलउ किपि भणेउ जूगहु भणइ संघु सयलु खमेउ ॥ ६२ ॥  
 ओनंदउ समुदाधरि रहइ नंदउ विहिमंदिरु कवि कहइ ।  
 नंदउ जिणेसरसुरि मुणिहु जा रवि ऊगइ ऊगइ चंदु ॥ ६३ ॥  
 माईतणउ अगसरु धुरि कियउ चहसठिचउपइया वंधु धियउ ।  
 सुद्ध मनि जे नर निसुणंति अणंतसुरकु सिद्धिहि पायंति ॥ ६४ ॥

## श्रीनेमिनाथफागु

मिद्धि जेहिं सड घर वरिय ते निन्धयर नमेयी ।  
 फागुबंधि पट्टनेमिजिणुगुण गाणसउं केवी ॥ १ ॥  
 अह नवजुव्यण नेमिकुमर जादवकुलभवलो  
 फाजलसामल ललवउउ सुललियमुहकमलो ।  
 समुदविजयसिवदेविपुतु सोढगसिंगारो  
 जरासिंधुभटभंगभीमु घलि रुवि अप्पारो ॥ २ ॥  
 गहिरसहि हरिसंरु जेण पुरिय उइंदो  
 हरि हरि जिम हिंदोलियउ सुयदंडपयंडो ।  
 तेयपरिपामि आगलउ पुणि नारिविरत्ताउ  
 सामि सुलरफुणसामलउ सिवसिरिअणुरत्ताउ ॥ ३ ॥  
 हरिहलहरसउं नेमिपट्ट सेलइ मास यसंतो ।  
 हावि भावि भिज्जइ नही य भामिणिमाहि भमंतो ॥ ४ ॥  
 अह सेलइ गटोगलिय नीरि गुण मयणि नमायइ  
 हरिअंतेउरमाहि रमड पुणि नाहु न राचइ ।  
 नयणमल्लूणउ लटसटंतु जउ तीरिहिं आविउ  
 माइ यापि धंयविहिं मांउ धीवाह मनाविउ ॥ ५ ॥  
 घरि घरि उत्तसव धारवण राउल गहगहण  
 तोरण धंदुरयाल फलस धययउ लललहण ।  
 फलटि भागिय उगसैणधूय राजल लाया  
 नेमिज्जमाणीय घाल अहभयनेहनिबन्ना ॥ ६ ॥  
 राउमणसम तिहु सुयणि अउर न अत्यइ नारे ।  
 मोहणविद्धि नयलदीय उप्पनीय मंसारे ॥ ७ ॥  
 अह सामलकोमल वेणपास किरि मोरफलाउ ।  
 अरुणंदममु भालु मयणु पोगइ भएवाउ ।  
 पंकुडिगाणीय मुंहरियां भरि सुयणु भमाइइ  
 लाटी सोयणदाहुएलइ मुर मगाह पाइइ ॥ ८ ॥  
 किरि मिमिविउ कपोउ कर्णाहिंदोउ कूरंता  
 नागा धंता गरहणंणु दादिमकल देता ।

अहर पवाल तिरैह कंदुराजलसर रुडड  
 जाणु वीणु रणरणहं जाणु कोइलटहकडलउ ॥ ९ ॥  
 सरलतरल सुयवल्लरिय सिंहण पीणघणतुंम ।  
 उदरदेसि लंकाउली य सोहइ तिवलतुरंगु ॥ १० ॥  
 अह कोमल विमल नियंवविव किरि गंगापुलिणा  
 करिकर ऊरि हरिण जंघ पल्लव करचरणा ।  
 मलयपति चालति बेलहीय हंसला हरावइ  
 संझाराणु अकालि बालु नहकिरणि करावइ ॥ ११ ॥  
 सहजिहि लडहीय रायमण सुलखण सुकमाला  
 घणउं घणेउं गहगहण नयजुवण बाला ।  
 भंभरभोली नेमिजिणवीवाह सुणेई  
 नेहगहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई ॥ १२ ॥  
 सावणसुकिलछट्टि दिणि वावीसमउ जिणंदो  
 जलइ राजलपरिणयण कामिणिनयणाणंदो ॥ १३ ॥  
 अह सेयतुंगतरलतुरइ रहरि चडइ कुमारो  
 कधिहि कुंडल सोसि मउड गलि नवसरहारो ।  
 चंदणि उगदि चंदघवलकापडि सिणगारो  
 केवडियालउ खुणु भरवि वंजुडउ अतिफारो ॥ १४ ॥  
 घरहि छत्तु वित्तु चमर चालहि मृगनयणी  
 लूणु उत्तारिहि वरगहिणी हरिसुज्जलवयणी ।  
 चहुपरि बइसइ दसारकोडि जादबभूपाला  
 हयगयरहपायफचक्कीकिरिहि झमाला ॥ १५ ॥  
 मंगल गापहि गोरडीय भइह जयजयफारो  
 उगगसेणघरनारि वरो पटुतउ नेमिकुमारो ॥ १६ ॥  
 अह सहिय पयंपय हल सहि ए तुह बल्लहउ आवइ  
 मालिअटालिहि चडिउ लोउ मण नयणु सुहायइ ।  
 गउसि वइठी रायमण नेमिनाहु निरम्बइ  
 पसइपमाणिहि चंचलिहि लोअणिहि फइम्बइ ॥ १७ ॥  
 किम किम राजलदेविनणउ सिणगारु भणेवउ ।  
 पंपइगोरी अघोइ अंगि चंदनुलेवउ ।

खुंणु भराविउ जाइकुसमि कसतूरी सारी  
 सीमंतइ सिंदूरेह मोतीसरि सारि ॥ १८ ॥  
 नवरंगि कुंकुमि तिलय किय रयणातिलउ तसु भाले ।  
 मोतीकुंडल कन्नि थिय विवालिख करजाले ॥ १९ ॥  
 अह निरतीय कज्जलरेह नयणि मुहकमलि तंबोलो  
 नगोदरकंठलउ कंठि अनु हार विरोलो ।  
 मरगदजादर कंचुयउ फुडफुल्लहं माला  
 करि कंकण मणिवलयचूड खलकावइ वाला ॥ २० ॥  
 रुणुमुणु ए रुणुमुणु ए रुणुमुणु ए कडि घघरियाली  
 रिमिक्षिमि रिमिक्षिमि रिमिक्षिमि ए पयनेउरजुयली ।  
 नहि आलसउ बलवलउ सेअंसुयकिमिसि  
 अंखडियाली रायमए प्रिउ जोअइ मनरसि ॥ २१ ॥  
 बाडउ भरिउ जीवडहं टलवलंत कुरलंत ।  
 अहूठकोडिरू उडसिय देणइ राजलकंतो ॥ २२ ॥  
 अह पूछइ राजलकंतु कांइ पमुवंधणु दीसइ  
 सारहि बोलइ सामिसाल तुह गोरखु हुस्पइ ।  
 जीव मेल्हावइ नेमिकुमरु सरणागइ पालइ  
 थियु संसारु असारु हस्यउं इम भणि रहु वालइ ॥ २३ ॥  
 समुदविजय सिवदेवि रामु केसवु मन्नावइ  
 नइपवाह जिम गयउ नेमि भयभमणु न भावइ ।  
 घरणि धसकइ पडइ देवि राजल बिहलंधल  
 रोअइ रिजइ वेसु रूखु बहु मन्नइ निष्कलु ॥ २४ ॥  
 उगसेणधूय इम भणइ दूषहिं दाझइ देहो  
 कां घिरतउ कंत तुहं नयणिहि लाइवि नेहो ॥ २५ ॥  
 आसा पूरइ त्रिहुमुवण मू म करि ह्यासी  
 दय करि दय करि देव तुम्ह हउं अछउं दासी ।  
 सामि न पालइ पडिवन्नउं तउ कासु कहीजइ  
 मयगलु उवट संचरण किणिं कानि गहीजइ ॥ २६ ॥  
 नेमि न मन्नइ नेहु देइ संवच्छरदाणूं  
 जजलगिरि संजम लियउ हुय केवलनाणूं ।

राजलदेविसउं सिद्धि गयउ सो देउ शुणीजइ  
मलहारिहिं रायसिहरसरि किउ फाणु रमीजइ ॥ २७ ॥

इति श्रीनेमिनाथप्रभु.

## प्राचीनगद्यसङ्ग्रहः

### आराधना

( संवत् १३३० मां लखेला ताडपत्रमांथी )

ज्ञानाचारि पुस्तकपुस्तिकासंपुटसंपुटिकाटोपणाकवलीऊतरीठवणीपाठा-  
दोरीप्रभृतिज्ञानोपकरणअवज्ञा, अकालिपठन अतिचार विपरीतकथनु उत्स-  
न्नप्ररूपण अश्रद्धानप्रभृतिहु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु भक्षितु  
उपेक्षितु प्रज्ञाहीनतु जिनभुवनआशातना अधोयति देवपूजा गुरुद्रव्य-  
ग्रहणु गुरुनिदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु विवआशातना स्थापनाचार्यआशा-  
तना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टिप्रसंसा मिथ्यादृष्टिपरिचउ ए  
पांच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृयावाद अदत्तादान  
मैयुनपरिग्रह ए पांच अणुवन दिगुविरति भोगपरिभोगविरति अनर्थदंड-  
विरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसायकासिकु पौपधु अतिधिसंविभाणु  
ए च्यारि सिध्पाव्रत; ईहतणइ विपइ जु कोह अतिचार आसेवियउ सु हुं  
आलोयहुं । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसंक्षेपु रसत्पाणु कायक्लेशु  
संलीनता पद्विधवाद्यतपतणइ विपइ प्रायश्चित्तु विनउ धैयावृत्त्यु स्वाध्यानु  
कायोत्सर्ग पद्विधआभ्यंतरतपतणइ विपइ जु अतीचारु सु हुं आलोयहुं ।  
धीर्पाचारि संतइ बलि संतइ वीजि जु धर्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं कियउं सु  
हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु, अरिहंतु देवता मुसाधु गुरु जिनप्र-  
णीत धर्मु सम्यक्त्वदंडकु ऊचरहु, सागारप्रत्याखानु ऊचरहु चऊहु सरणि  
पइसरहु । परमेश्वरअरहंतसरणि सकलकर्मनिर्मुक्तसिद्धसरणि संसारपरी-  
चारसमुत्तरणयानपात्रमहासत्त्वसाधुसरणि सकलपापपटलकवलनकलाकलितु-  
केवलप्रणीतधर्मुसरणि सिद्ध संघगण केवलि श्रुत आचार्य उपाध्याय  
सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती ताह  
मिच्छा मि वृष्टाई । पुढिकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव घाउकाइ  
जीव घणस्पइकाइ जीव वेइंदिय त्रेंदिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर रोचर

जि जंतु ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि  
जि मनुष्य तीहिं मिच्छा मि दुक्कडं । छप्पनअंतरद्विपतणा मनुष्य तीहं मि-  
च्छा मि दुक्कडं । सातनरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर  
पंचविध जोइसी दैविध चैमानिकदेवा किं बहुना । दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात  
श्रुत अश्रुत स्वजन परजन मित्रु शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतु-  
रासी लक्षयोनि ऊपना चतुर्गतिकि संसारि भ्रमंता मइं ह्रुमिया वंचिया  
सेहिया सोरीयिया हसिया निंदिया किलाभिया दामिया पाछिया चूकिया  
भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भयलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइं  
तीह सर्वहइं मिच्छा मि दुक्कडं । अटार पापस्थान चोसिराचइ इहुसर्ख्य प्राणा-  
तिपातू सर्ख्य मृपाचाइ सर्ख्य अदत्तादानू सर्ख्य मैयुनू सर्ख्य परिग्रहू सर्ख्य  
क्रोधू सर्ख्य मानू सर्वइ माया सर्ख्य लोभू प्रेसु ठेपु कलहु अभ्याख्यानु रति  
अरति पैशून्यु मिध्यादर्शनशल्यु परपरिवादू अटार पापस्थान त्रिविधिहिं  
मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ । अतीतु निंदउ वर्तमानु  
संवरहु अनागतु पावरहु । पंचपरमेष्ठिनमस्कार जिनशासनिसार चतुर्दश-  
पूर्वसमुद्धान संपादितसकलकल्याणसंभार विहितदुरितापहार क्षुद्रोपद्रव-  
पर्वतवज्रप्रहार लीलादलितसंसार सु तुन्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतु-  
र्दशपूर्वधर चतुर्दशपूर्वसंबंधिउ ध्यानु परित्यजिउ । पंचपरमेष्ठिनमस्कार  
स्मरहि, तउ तुन्हि विशेषि स्मरेवउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थकरवेवि इसउ  
अर्थु भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ  
रक्षिनमस्कार इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समाप्तेति ॥

यदस्मै परिभ्रष्टं मानाहीनं च पद्मवेत् ।

ज्ञानव्यं तदुपैः सर्वं कस्य न स्थलते मनः ॥

संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावंगद आश्विनमासम् ॥

## अतिचार

( संवत् १३४० ना अरसामां दृष्टायटा जगता सादृश्यमांषी )

कालवेला पटयं, विनपहीणु वहुमानहीणु उपपानहीणु गुरुनिणहय अने-  
राकणहइं पटयं, अनेरइं कहइं व्यंजनरुट्ठ अर्थरुट्ठ तदुभयरुट्ठ रुट्ठउ अरुत  
कानइ मात्रि आगलउ ओछउ देवदणवांदणइ पटिपमणइ साक्षाउ करतां

पदतां गुणतां हुउ हुयइ, अर्थकूट कहइं हुइ, सुउ अर्थु वेउ कूडां कथां हुइ, ज्ञानोपकरण पाटी पोथी कमली सांपुडं सांपुडी आशातन पशु लागउ थुंऊ-  
लागउं पदतां प्रदेप मच्छरु अंतराइउ हउं कीधउ हुइं, तथा ज्ञानद्रव्यु भक्षितु  
उपेक्षितु प्रज्ञापराधि विणास्य विणासितउं अवेख्यं हुंती सक्ति सारसंभाल न  
कीधियइ, अनेरइ ज्ञानाचारिउ कोइ अतीचारु हुउ सुक्ष्मवादरु मनि वचनि  
काइ पक्षदिवसमांहि तेह सवहि मिच्छा मि दुक्कडुं ॥

सातमइ भोगोपभोगव्रति सचिच्छाद्रव्यविगइ खासहाइ पाणही पानि  
फोफलि वइसणि आसणि सयणि न्हाणुअइ अंगोहलि फलि फूलि भोजनि  
आच्छादनि जु कोइ अतिचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि

बारि भेदि तपु छहि भेदि बाह्य अणसण इत्यादि उपवास आंबिल  
नीविय एकासण पुरिमइ व्यासणं पथाशक्ति तपु, तथा ऊनोदरितपु वृत्ति-  
संखेयु । रसत्याणु कायकिलेसु, संलेखना कीभी नहि, तथा प्रत्याख्यान एका-  
सणां विपुरिमइ साढपोरिसि पोरिसिभंशु अतीचारु नीविय आंबिलि  
उपवासि कीधइ विरासइं सचिच्छा पाणीउ पीधउं हुयइ पक्षदिवसमांहि

प्रतिपिड जीवहिंसादिकतणइ करणि कृत्य देवपूजा धर्मानुष्ठानतणइ  
अकरणि जि जिनवचनतणइ अश्रद्धधानि विपरीतपरुपणा एवं बहुप्रकारि  
जु कोइ अतीचारु हुयउ पक्षदिवसमांहि ॥

## सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन

( संक् १३५८ मां लयायेछा पाण्डना पुस्तकमांथी )

पहिलउं त्रिकालु अतीन अनागत वर्त्तमान बहत्तरि तीर्थंकर सर्वपाप-  
क्षयंकर हउं नमस्करउं ।

तदनंतक पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्ट-  
कालि विहरमाण हउं नमस्करउं ।

तउ पहिलइ सौषर्म्म देवलोकि यन्नीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि  
अट्ठावीस लाख, श्रीजइ सनतकृमारि देवलोकि बारलाख, चउत्थइ माहेंद्र-  
१) देवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छट्ठइ लानकि

देवल्लोकि पंचास सहस्र, सानमइ शुक्रदेवल्लोकि च्यालीस सहस्र, आठमइ सहस्रारि देवल्लोकि छ सहस्र, नवमइ आणति देवल्लोकि विसइ, दसमइ प्राण-  
नि देवल्लोकि विसइ, इग्यारमइ आरणि देवल्लोकि बारमइ अच्युतदेवल्लोकि  
विह दउहु दउहु सउ, अनइ देठिले त्रिह ग्रैवेयके इग्यारोत्तर सउ, माहिले  
त्रिह ग्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिह ग्रैवेयकि एकु मउ, पंच पंचोत्तरवि-  
माने, एयंकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणयइ सहस्र त्रैवींम आगला  
जिमभुवन बांदउं । अनंतरु भुवनपतिमज्जे असुरकुमारमज्जे चउमठि लाख,  
नागकुमारमज्जे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्जे वहत्तरि लाख, वायकु-  
मारमज्जे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिहकुमार विज्जुकुमार  
धुणियकुमार अग्निकुमार छहं मध्यभागे छहत्तरि छहत्तरि लाख, एयंकारइ  
पालाललोकि सातकोडि वहत्तरिलाख जिनमंदिर स्तयउं । अथ मनुष्यलोकि  
नंदीसर धरि दीपि वायन्न, च्यारि कुंडलयलिग, च्यारि रुचकि वलिग, च्यारि  
मानुषोत्तरि पर्यति, च्यारि इक्षार पर्यति, पंच्यासी पांचे मेरे, धीस गजदंत  
पर्यति, दस कुरपर्यति, त्रीस सेलसिहरं, असीव क्षारसेलमिहरं, सरि-  
सउ पैतादपर्यति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ  
कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणयइ सहस्र च्यारि सइ छिपामिया तियल्लुके  
गाह्यतानि महामंदिर त्रिकाल तीह नमस्कार करउं ॥

संतीर्णमस्तुस्मयम् ।

## नवकारव्याख्यानम्

नमो अरिहंतारणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कार अरिहंत हउ । किमा जि  
अरिहंत; रागादेषरुपिआ अरि ययरी जेहि दणिषा, अथवा चतुपट्टि इंद्र-  
संयंधिनी पूजा महिमा अरिहद; जि उत्पन्नदिव्यविमलवेवल्लज्ञान, षडंगीम  
अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रतिहार्यशोभायमान महाविदेति नेत्रि  
वितरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कार हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धारणं ॥ २ ॥ महरउ नमस्कार सिद्ध हउ । किमा जि सिद्ध;  
दृष्टाष्टकर्मभूत करिउ, जि मोक्षि गया । आठ कर्म किमा भणियइ । जानार-  
णीउ १ दरिमणारणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नाम ६ गोचु ७  
अंतराउ ८ इंद्र आठकर्मभूत करिउ जि सिद्धि गया । किमा ज सिद्धि;  
लोभतणइ अप्रविभाणि पंचत्ताण्डीम लक्षणोत्तमप्रमाणि जिमउं उच्चाणु उचु



तिसह आकारि ज सिद्धिसिला, अमलनिर्मल जलसंकास जु अजरामर-  
स्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियह चउचोसमह य विभागि जि सिद्ध अनंत  
सुखलीण ति सिद्ध भणियह । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किता जि  
आचार्य; पंचविधु आचारु जि परिपालह ति आचार्य भणियह । कितउ पंच-  
विधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्या-  
चारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालह ति आचार्य भणिह । तीह  
आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । किता  
जि उपाध्याय; द्वादशांगी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशांगी; आचा-  
रांगु १ सुयगहु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नति ५ ज्ञाताधर्मकथा ६  
उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पणहवागरणु १०  
विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए वार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय  
भणियह । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लोक  
च कितउ भणियह । अठाई द्वीपसमुद्र पनर कर्मभूमि । जि किसी; पांच भरत  
पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र, ईह पनर कर्मभूमिमाहि जि केई अछइ  
साधु । किता जि साधु; रत्नघउ जि साधइ । कितउ रत्नघउ; ज्ञानु दर्शनु  
चारिनु यउ रत्नघउ जि साधइ ति साधु भणियह । तीह साधु पंचमहा-  
व्रतपरिपालक । पंचमहाव्रत किता भणियह । प्राणातिपासु १ मृषावादु २  
अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विचर्जइ ति साधु  
भणियह । तीह साधु सर्वही माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंच परमेष्ठिनमस्कारु । पंचपरमेष्ठि  
किता । जि पूर्वोक्तभणिया अरिहंत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४  
साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं कितउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥ ७ ॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ । ईणि जीवि  
चतुर्गतिकि संसारि भवघ्नमणु करतइ हुंतइ जि असुभलेइया उपायी पापु  
सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुयइ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥ ८ ॥ ईणि संसारि दधिचंदन-  
दूर्वादिक मंगलीक भणियह । तीह मंगलीक सर्वहीमांहि ग्रथसु मंगलु एहु ।

ईणि कारणि सुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउं, जिव ति कार्य एहतणइ  
प्रभावइ धृद्धिमंता हुयइ । यउ नमस्कार अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसी-  
आदिजिनोक्तसार, सुतुम्हे विसेपहइ हिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्त ध्येयु  
ध्यातव्य गुणेवउ पढेवउ । जु किसउ ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुब्बाण जो समुद्धारो ।

जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥

अनइ एहु नमस्कार स्मरता इहलोकतणा भय नासइ ।

यदुक्तं—अडविगिरिरत्नमञ्ज्जे भयं पणासेइ चित्तिओ संतो ।

रक्तइ भविषसपाइं माया जह पुत्तमंडाइ ॥

घाहिजलजलणतप्परहरिकरिसंगामयिसहरभण्हिं ।

नासंति तत्तणेणं जिणनवकारप्पभायेणं ॥

हियइगुहाण नवकारकेसरी जाण संठिओ निहं ।

कम्महुगंठिदोघह्यह्यं ताण परिनइ ॥

नमस्कारस्य स्वरूपं मण्यते । ईणि नवकारि नवपद पांच अधिकार सत्त-  
सट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु । इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु ।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ ।

नवकारपरममंतो संतियमित्तो सुहं देउ ॥

अप्पुब्बो कप्पतरु एसो चिंतामणी य अप्पुब्बो ।

जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं ॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम् ॥

## अतिचार.

संवत् १३६९ मां लखेला ताहपत्रमांथी.

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार  
पंचविधआचारविषइया अतीचार आलोउ । ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ  
गुणिउ चिनयहीनु बहुमानहीनु उपघानहीनु शुभनिन्दनु अनेरीकन्हइ पढिउं  
अनेरउ कहिउ । व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देखव-  
दणइ पडिक्कमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणनां हुओ हुइ, अर्थकूट तदु-  
भयकूट, ज्ञानोपकरण पाटी पोथी ठवणी कमली सांपटा सांपटी पतिआसा-  
तना पशु लागउ घुकु लागउ पढतां गुणनां प्रहेपु मच्छरु अनराइ हुउ कीचउं

हुइ भवसगलाइमाहि तेह मिच्छा मि दुक्कडं । मृषावादि सहसातकारि  
 आलु अभ्याख्यालु दीघडं, रहसमंत्रभेदु कीघड, मृषोपदेसु दीघड, कुडड लेखु  
 लिखिउ, कुडी साखिथापणि मोसड, कुणहइसड राडि भेडि कलहु विद्याविदि,  
 जु कोइ अतिचारु मृषावादि व्रति भवसगलाइमाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि  
 मिच्छा मि दुक्कडं । अदत्तादानि विराइउं छानउं फोदुउं लीघडं दीघडं वावरिउं  
 धरि बाहिरि खेचि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाई चोर-  
 प्रति प्रयोगु कीघड, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, कूडी  
 तल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाइ-  
 माहि हुउ तेह सबहइ मिच्छा मि दुक्कडु । मैथुनव्रति लुहुडपणि आपणा विराया  
 सील खंडया सिउणइ सिउणांतरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमि चउदसितणा नी-  
 मभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तिव्रभिलापु धरिउ हुइ, अनेरा जु कोइ  
 अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलाइमाहि हुअउ तेह सबहइ त्रिविधि त्रिविधि  
 मिच्छा मि दुक्कडं । हव हियामाहिं सम्यक्त्व धरउ । अरिहंत देवता, सुसाधु  
 गुरु, जिणप्रणीतु धर्मु, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ । हिव अठार पापस्थानक बो-  
 सिरावउ । सर्वू प्राणातिपात, सर्वू मृषावाद, सर्वू अदत्तादान, सर्वू मैथुनु, सर्वू  
 परिग्रहु, सर्वू क्रोधु, सर्वू मानु, सर्वू माया, सर्वू लोभु, रागु, द्वेषु, कलहु, अभ्या-  
 ख्यालु, पैशुन्यु, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृषावादु, मिथ्यात्वदरिस्ण-  
 सत्पुए अदारपापस्थान मोक्षमार्गसंसर्गविषयनसमान त्रिविधि त्रिविधि बोसिरा-  
 वउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पचकूड, वर्तमानु संवर । सागाम्प्रत्याप्यानुउ ।  
 एमिउं खमाविउं मइं स्वमिउ छव्विह जीवनीकाय ।

सिद्धह दिन्ना लोपणा नइ मह बइरु न पावु ।

हिव दुकूनगरिहा करउं । जु अणादि संसारमाहि हींडतइ हूतइ ईणि  
 जीवि मिट्पात्यु प्रयर्ताविउ । कुतीर्यु संस्थापिउ, कुमार्ग प्ररुपिउ, सन्मार्ग  
 अवलपिउ । हिव ऊषाजि मेलिह सरीरु कुटुंबु जु पापि प्रयर्तिउ, जि अधि-  
 गरण हलऊ गल घरट घरटी ग्वांडां कटारी अरहट पावटा कूप तलाव कीघां  
 कराव्यां अनुमोद्या, ते सवे त्रिविधि त्रिविधि बोसिरावउ । देवस्थानि द्रवि  
 वेवि पूजा महिमा प्रभावना कीघी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीघी, पुस्तक  
 लिग्गाव्यां, सार्धमिकराउल्य कीघां, तप नीयम देवबंदन चांदणाइ सज्याइ  
 अनेराइधर्मानुष्ठानतणइ विपह जु ऊजमु कीघड सु अम्हारउ सफलु हुओ ।  
 इति भावनापूर्वक अनुमोदउ

# पृथ्वीचन्द्रचरित्र

( वाग्विलास )

या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।

प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥

धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।

धर्मः कामदुघा घेनुर्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगह पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलगह मनवांछितसिद्धि; पुण्यलगह निर्मलबुद्धि, पुण्यलगह धरि ऋद्धिवृद्धि; पुण्यलगह शरीर नीरोग, पुण्यलगह अभंगुरभोग; पुण्यलगह कुटुंबपरिवारतणा संयोग, पुण्यलगह पलाणीयई तुरंग, पुण्यलगह नचनबा रंग; पुण्यलगह धरि गजघटा, चालतां दीजई चंदनछदा; पुण्यलगह निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप; पुण्यलगह वसिवा प्रधान आवास, तुरंगमतणी लास, पूजई मन चींतबी आस; पुण्यलगह आनंददायिनी मूर्ति, अद्भुत स्फूर्ति; पुण्यलगह भला आहार, अद्भुत शृंगार; पुण्यलगह सर्वत्र बहुमान, धनं कित्युं कहीयई पामीयई केवलज्ञान ।

एह पुण्यऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कपासबंध भणीयई । ता ईणई राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तई । तांह माहि पहिलउ जंबूद्वीप लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि लवणसमुद्र दिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेहपरई धातकीखंडद्वीप व्यापारिलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि कालोदधि समुद्र आठलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह परई पुष्करवरद्वीप सोललक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि पुष्करवरसमुद्र वन्नीसलक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । आगलि चारुणिद्वीप ६४ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि चारुणीसमुद्र एककोडि २८ लक्षयोजनप्रमाण जाणिवउ । ईणिपरि ठाण विमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ । कवण कवण । क्षीरद्वीप क्षीरसमुद्र घृतद्वीप घृतसमुद्र इक्षुद्वीप इक्षुसमुद्र नंदीसररद्वीप नंदीसरसमुद्र अरुणद्वीप अरुणसमुद्र अरुणवरद्वीप अरुणवरसमुद्र अरुणवरावभासद्वीप अरुणवरावभाससमुद्र इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात । तेहमाहि पहिलु जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिहं मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप, तेहनुं दक्षिण उत्तरहं सातक्षेत्र चऊद महानदी छ वर्षधर पर्वत वर्त्तई ।

किसा ते क्षेत्र । भरतक्षेत्र १ हैमवतक्षेत्र २ हरिवर्षक्षेत्र ३ महाविदेहक्षेत्र ४  
 रम्यक्षेत्र ५ ऐरण्यवतक्षेत्र ६ ऐरवतक्षेत्र ७ । किसी महानदी । गंगा १ सिंधु २  
 रोहिताशा नदी ३ रोहिता ४ हरिकांता नदी ५ हरिसलिला नदी ६ सीतोदा ७  
 सीतानदी ८ नारीकांता ९ नरकांता १० रूप्यकूला नदी ११ सुवर्णकूला नदी १२  
 रक्तवती १३ रक्तानदी १४ । किस्या किस्या वर्षधर । हिमवंतपर्वत १ महा-  
 हिमवंत २ निपथ ३ नीलवंत ४ रुक्मीपर्वत ५ शिखरीपर्वत ६ । हिव जे कहिउं  
 भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताळ्यपर्वत ३२ सहस्र देश । ईहमाहि  
 साढा पंचवीसदेश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा । ऋषभदेवतणा पुत्रतणं नामिहं  
 सयलदेश जाणिवा । ते कुण कुण काश्मीरदेश १ कीर २ कावेर ३ कांजोज ४  
 कमल ५ जूत्कल ६ करहाट ७ कुरू ८ काण ९ कथ १० कौशक ११ कोसल १२  
 केशी १३ कारुत १४ कारूप १५ कछ १६ कर्णाट १७ कीकट १८ केकि १९  
 कौलगिरि २० कामरूप २१ कूंकण २२ कुंतल २३ कालिंग २४ करकूट २५  
 करकंठ २६ केरल २७ पस २८ पर्पर २९ पेट ३० गौड ३१ अंग ३२ गौप्य ३३  
 गांगक ३४ चौड ३५ चिह्निर ३६ चैत्य ३७ जालंधर ३८ टंकण ३९ कोडि-  
 याण ४० डाहल ४१ तुंग ४२ ताजिक ४३ तोसल ४४ दशार्ण ४५ दंडक ४६  
 देवसभ ४७ नेपाल ४८ नर्त्तक ४९ पंचाल ५० पल्लव ५१ पुण्ड्र ५२ पोट्ट ५३  
 प्रत्पग्रथ ५४ अर्युद ५५ यमु ५६ वंभीर ५७ भट्टीप ५८ मोहिष्मक ५९ मद्रो-  
 द्य ६० मुकुंड ६१ मुरल ६२ मैद ६३ मरु ६४ मुहूर ६५ मंकेन ६६ मल्लवर्त्त ६७  
 महाराष्ट्र ६८ मूचन ६९ रोम ७० राटक ७१ लाट ७२ ब्रह्मोत्तर ७३ ब्रह्मावर्त्त  
 ७४ ब्राह्मणवाहक ७५ विदेह ७६ वंग ७७ वैराट ७८ वनवास ७९ वनायुज ८०  
 बालहीक ८१ बह्लव ८२ अवंति ८३ बहि ८४ शक ८५ सिंहल ८६ सुम्ह ८७  
 सूर्पर ८८ सीवीर ८९ सुराष्ट्र ९० सुहड ९१ अस्मक ९२ हूण ९३ हर्माक ९४  
 हर्माज ९५ हंस ९६ हुहुक ९७ हेरक ९८ एवं देश अष्टाण् अनड आदन हावस  
 मुगदिसुं धनगिरि सीकोत्तर चोलनाट पांज्य तालीउ त्रिहृति भोट महाभोट  
 थोण महाचीण वंगाल पुरसाण मग्ध बच्छ गाजणाप्रमुप अनेक देश वर्त्तइ ।

तीहमाहि वपाणीयइ मरहट्टदेस । जीणइ देसि ग्राम, अत्पंत अभिराम;  
 भलां नगर, जिहां न मागीयइं कर । दुर्ग, जिस्यां हुइ स्वर्ग; धान्य, न नीप-  
 जइ सामान्य; आगर, सोनारूपातणा सागर । जेह देसमाहि नदी बहइं, लोक  
 सुपइं निर्यहइं । इसिउ देश, पुण्यनणउ निवेश, गरूअउ प्रदेश । तीणि देसि  
 पट्टाणपुर पाटण वर्त्तइं; जिहां अन्याय न वर्त्तइं । जीणइं नगरि फउसीसे करी  
 सदाकार पापलि पोढउ प्राकार; उदार, प्रतोली द्वार; पातालभणी धाई, महा-

काय पाई, समुद्र जेहतु भाई; जे लिहू कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेव-  
तणा प्रासाद; करइं उल्लास, लक्षेश्वरीकोटीध्वजतणा आवास; आनंदइं मन,  
गरुडं राजमचन; ऊपरि अपंड, सुवर्णमय दंड, ध्वजपटल लहलहइं प्रचंड ।  
जेह पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउहटां कलकलाट करइं ।  
किस्यां ते चउहटां । सोनीहटी १ नाणावटहटी २ जवहरीहटी ३ सौगंधीपाहटी  
४ फोफलिया ५ सूत्रिया ६ पटसूत्रिया ७ घोया ८ तेलहरा ९ दंतारा १०  
घलीयार ११ मणीयारहटी १२ दोसी १३ नेस्ती १४ गांधी १५ कपासी १६  
फटीया १७ फडोहटी १८ एरंडिया १९ रसणीया २० प्रवालीया २१ घांवहटा  
२२ सांवहडा २३ पीतलगरा २४ सोनार २५ सोसाहडा २६ मोतीमोयी २७,  
सालवी २८ मीणारा २९ कुंआरा ३० चूनारा ३१ तुनारा ३२ कूदारा ३३  
गुलीयारा ३४ परीयटा ३५ घांची ३६ मोची ३७ सुई ३८ लोहदिया ३९  
लोढारा ४० चीन्नाहरा ४१ सतुआरा ४२ कागलीया ४३ मयपहटी ४४ वेड्या,  
४५ पणगोला ४६ गांछा ४७ भाटभुंजा ४८ बीवाहडा ४९ घांवडीया ५०  
भईसापत ५१ मलिन नापित ५२ चोपा नापित ५३ पाटीवणा ५४ घांगडीया  
५५ बाहीत्रा ५६ काठवीठीया ५७ चोपावीठीया ५८ सूपडीया ५९ साधरीया  
६० तेरमा ६१ वेगलीया ६२ बसाह ६३ सांधूआ ६४ पेल्हा ६५ आटीआ ६६  
दालीया ६७ दडडीआ ६८ भुंजकूटा ६९ सरगरा ७० भरथारा ७१ पीतलहटा  
७२ कंसारा ७३ पत्रसामीआ ७४ पासरीआ ७५ मंजीठीया ७६ साकरीया ७७  
साबूगर ७८ लोहार ७९ सूत्रहार ८० वणकर ८१ तंबोली ८२ कंदोई ८३ धुडि-  
हटी ८४ कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिया ।

जीणइं नगरि अनेक पामीपंड रत्न, जीहत्तणां कीजइं यत्न । किस्यां ते  
रत्न । अश्वरत्न गजरत्न पुरुपरत्न स्त्रीरत्न अनइ पद्मराग पुष्परग माणिक  
सींघलिया गुरुटोडारमणि मरकत कर्कतन वज्र वैडूर्य चन्द्रकांत सूर्यकांत  
जलकांत शिवकांत चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक चीनशोक अपराजित  
गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ पुलिक सौगंधिक सुभग सांभाग्यकर विपहर  
धृतिरु पुष्टिरु शत्रुहर अंजन ज्योतीरु शुभरुचि शुलमणि अंशु कालि देवा-  
नंद रिष्टरत्न कीटपंगि कसाउला धूमराड गोमूत्र गोमेद लमणीया नीला तृण-  
पर गडगाइ यज्ञधार पटकोण कणी चापटी पिरोजा प्रवाला मौक्तिकप्रमुग  
रत्नेकरी दीसइं भरियां हाट, अनेकसुवर्णमय घाट; पिटुली घाट, घालड घोट-  
तणां घाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट । जिहां पुण्य चिनाल, सोसी पोमाल;

जिहां छात्र पढ़े चउसाल, तिसो नेसाल; जिहां अध्यात्मतणी वात दद, तिसां अनेक मढ; जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार; जिहां पाणी पियइ सर्व, तिसो पर्व; जिहां रमलि कीजइ स्वभावि, तिसो चावि; जिहां आनंद हुआ, तिसा कूआ; पद्मवनखंडमंडित प्रवर, महाकाय सरोवर; जिहां रंगि कीजइ रयवाडी, तिसो वाडी; जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पापलियां वन; इसुं अन्यायरहइ दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पुहिठाणपुर पाटण ।

तोणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइं नामिइं राज्य 'प्रतिपालइ, भुजबलिकरी घइरी वर्ग टालइं । जोणि राजा गौडदेशनउ राउ गांजिउ, भोटनउ भांजिउ; पंचालनउ राउ पालउ पुलइं, कानडादेसनउ कोठारि कलइं, दोरसमुद्रतउ दोयणां दोयइ, बाबरउ वारि वइठउ टगमग जोयइ; चौडनउ दंडि चांपिउ, कास्मीरनउ कांपिउ; सोरठीयउ सेवइ, तुडि न करइं देवइं; अंगदेसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ; घणुं कियुं कहीयइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल । जीणं रिपु सर्वे निर्घाट्यां दुर्ग सर्वे आपणा कीधा, वयरीनइं देसवडा दीधा । इसिउं निःकंटक साम्राज्य प्रतिपालइ । तेह नरेश्वरनइं बुद्धिनिधान, परमहंसनामि प्रधान; जेउ सहिजिइं रूपिइं रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ; राउलउ अर्थ सारइं, लोक जगारइ, वपरविग्रह धारइ; पालइ दीन द्युस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार; शस्त्रि शस्त्रि कुशल अपार, गुहिर गंभीर, अतिहिं धीर; मुहि मीठउं भापइं, काज कीधां जि दापइ; चिहं बुद्धितणउं निधान, सविहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान; रायतणउं प्रतिशरीर, इसिउं ते मंत्रीश्वर; नरेश्वररहइं, शिवमय सुपमय कल्याणमय दिवस अतिक्रमइं ।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातितणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं फल छइ अत्यंत मीठउं । किसउं ते स्वप्न । इसिउं जाणइ नरेश्वर सुवर्णवर्णकांति, देवरहइं मन आंति; पलकते नेउरि झलकते कुंडलि हाथि वरमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल; रूपि विशाल, इसी बालदेवी देपइ भूपाल । जेतलइ तेहतणी वरमाला फंटिकंदलि लागी, तेतलइं रायनइं निद्रा भागी; जागिउ नरेश्वर, रीतवइ अलयेसर । किसिउ स्वप्नतणउ घटइ विचार, तेतलइ प्रभातावसरि हउ मांगलिकशंख तणउ ओंकार हुआ तिवलितणा दांकार, मृदंगतणा घोंकार; भटनणा मांगलिकपध्वनि, राजा आनंदिउ मनि; शुभहेतु स्वप्नतणउ मनि विचार घरी, पालंक परिहरी; क्षण एक राजा मल्लपाइ आख्या । मल्ल-

सिउ विनोद नीपजाब्या पछइ खानमजनादिक प्रभातकरणीय कीधुं, याचकर-  
हइ दान दीधउं । ति वारें गणनायक दण्डनायक पायक वृत्तिनायक वहीवाहक  
तलवर माडम्बिक कौटुंबिक इन्द्रजाली फूलमाली धातुर्वादी मन्त्रवादी तन्त्र-  
वादी यन्त्रवादी कपटाइत चपटाइत अङ्गरक्षक अङ्गमर्दक मीठाबोला सुहाबो-  
ला कथाबोला साचाबोला जूठाबोला अनइ अनेक राजराजेश्वर मण्डलेश्वर सा-  
मन्त तंत्रपाल तलवर्ग चउरासीया महामात्य मन्त्रीश्वर श्रीगरणा वयगरणा  
धर्माधिगरणा सेनाधिपति आगरीया व्यवहारीया राजद्वारिक भण्डारी  
कोठारी कापडभण्डारी पूगभण्डारी रसोईया पाणहरी श्रेष्ठ सार्थवाह पीठमर्द  
चारवधू बीणकार बंशकार उतिकार आउजी पखाउजी पटाउजी आलबणकार  
लाक्षणिक तार्किक छान्दसिक मुखमाझलिक वैद्य ज्योतिषी पाहरी पद्मधर  
कुन्तधर धनुर्धर छत्रधर बालकहार सेजपाल थईयात पण्डित कवि लेखक  
पोष महापोष माल मसाहणी पाण्डव पउतारप्रमुखसकललोकि करी सश्रीक  
राजा राजसभां बईठा ।

राजसभा किसी छइ । जीणि राजसभां कुंकुमजलि छटा दीधी छइ,  
विविधमुक्ताफल चतुष्क पूरिया छइ, कर्पूरतणा शंख आलिष्या छइ, लुण्णा-  
गरजबाधितणा परिमल महमहइ छइ, मोतीतणी सिरि लहलहइ छइ, फूलपगर  
भरिया छइ, कदीप्रमाणपाउपीठसंयुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन  
मांडिउं छइ । तीणि सिंहासणि राजा बइठा । किसउ राजा दीसइ छइ,  
मस्तकि श्वेतातपत्र छइ; पासइ ढलइ चामर पवित्र, बाजइ विचित्र वादित्र;  
मस्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हारार्जहार, महाउदार, धनदतणउ  
अवतार, रुपतणु भण्डार । घणउं किसिउं कह्योइ । जिसउ पृथ्वीलोकतणउ  
इन्द्र, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र ।  
तिसिइ अवसरि प्रतीहार आविउ प्रणाम नीपजाविउ । राजांसाहो दृष्टि  
दीधी, ऊणि वीनती कीधी; जी अयोध्यानगरीहुंतउ दूत तम्हारइ दारांतरि  
आविउ मनितणइ उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेल्हउं माहि । हूउ राजा-  
तणउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रवेस । रायरहइ कीधउ जुहार, अलं-  
करिउं योग्य आसण उदार । राजा दूतरहइ बहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न  
कीधउं । आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिय दूत वीनवइ कार्य विशेष चन्त ।  
जिहां लोकरहइं नही किसिउ क्लेश, जिहां नही वइरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ  
निवेश; अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर; मनोहर छइ कोसलादेस ।



तिहां छइं नगरी अयोध्या । किसी ते नगरी । धनकनकसमृद्ध, पृथ्वी-  
 पोठि प्रसिद्ध; अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय; पृथ्वीरूपिणीकामिनीरह-  
 इं तिलकायमान, सर्वसौंदर्यनिधान; लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतण्ड आ-  
 वास; अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित, सदा सुठाकुरि पालित, रमणी-  
 यराजमार्गि शोभित, उत्तंगप्राकारवेष्टित; सदा आश्चर्यतण्ड निलय, वसुधाव-  
 नितावलय, निरुपमनागरिकतण्ड ठाम, मनोभिराम; जनितदुर्जनक्षोभ, सज्ज-  
 नोत्पादितशोभ; पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल । जीणइ  
 नगरी देवगृह मेरुशिपरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान; अनेक गवाक्ष  
 वेदिका चडकी चित्रसाली जाली त्रिकलसां तोरण धवलगृह भूमिगृह भांडागार  
 कोष्ठागार सभ्रागार गढ मढ मंदिर पडवां पटसाल अधट्टां फडट्टां दंडकलस  
 आमलसार आंचली बंदरवाल पंचवर्ण पताका दीपइं । सर्वोसर मंत्रोसर  
 मांजणहरां सप्तद्वारांतर प्रतोली रायंगण घोडाहडि अपाडड गुणणी रंगमंडप  
 सभामंडपसमृद्धि करी मनोहर एवंविध आवास । जेह नगरिमाहि दोसी  
 नेस्ती साह बसाह पटउलीया पडसुत्रिया पजूरीआ बीजउरीआ कणसारा भण-  
 सारा मपारा नवकर भोजकर भला लामा अनेक लोक बसइ । पांचसई व्यव-  
 साईया व्यवसायविषय उल्लसइ । जेह नगर पापलीया अनेकि कृपा बाबि स-  
 रोवर नइ नीक निरुपम उत्थान आंव नींव जांबू जंबीर बीजपूरप्रमुख वृक्षावली  
 करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि; प्रभातसमइ सूर्यतणे  
 किरणेकरी प्रासादतणे शिपिरि धजकलश झलकइ, धजजड ललकइ ।  
 घणउं किस्सुं कहीइ, जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका  
 लंका इसी नगरी अयोध्या बपाणीइ । तीणि नगरी ईश्वराकुवंशावतंस  
 विहितवयरीकुलविध्यंस निजकुलकमलराजहंस अतुलबल पराक्रम त्रिवि-  
 क्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संसालइ, अन्याय दालइ ।  
 जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद प्रतिज्ञा राजाश्रीयुधिष्ठिर निर्भय भीम  
 आपन्न जीमूतवाहन विद्या वृहस्पति लावण्य लवणार्णव रूपि कंदर्प प्रताप  
 मार्त्तंड ओदारिं बलि राजा अद्भुतदानि चिंतामणि सेवरुजनकल्पवृक्ष चतुरंग-  
 वाहिनीसमुद्र । घणउ किशुउ कहीइ महासासनु अरडकमल्लजगङ्गणउ प्रता-  
 पलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह  
 राजातण्ड अंतःपुरिमाहि प्रधान गुणनिधान भर्तारतणी भक्तिविषय महासा-  
 यधानि स्त्री कमललोचना इसिइं नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ । जेह राणी, सहजि

मधुरवाणी; सीलवन्तिमाहि वपाणी, गुणि करी जाणी; घणूं किसई; इंद्राणी, जिह  
आगलि बहिइ पाणी। तेह राणीतणइ कुक्षितउ समुत्पन्न मदनभ्रमनणी मंजरी,  
कुंकमि करी पिंजरी, रत्नमंजरी, इसइ नामिहं कन्या वर्त्तइ । ते कन्या जइ भ-  
णिवा गुणिवा योग्य हई तु पंडितरहि आपी। तोणि आपणकहुइ संस्थापी, पंडि-  
त अणसंतापी कन्या समग्रकला व्यापी; ता ते कन्या बहुत्तरि कला जाणइ, चउ-  
सट्टि विज्ञान वपाणइ । किसी ते बहुत्तरि कला लिपितकला १ पठित २ गणित  
३ गीत ४ नृत्य ५ वाद्य ६ व्याकरण ७ काव्य ८ छंद ९ अलंकार १० नाटक  
११ साटक १२ मखच्छेद्य १३ पत्रच्छेद्य १४ आयुधाभ्यास १५ गजारोहण १६  
तुरगारोहण १७ गजशिक्षा १८ तुरंगमशिक्षा १९ रत्नपरीक्षा २० पुरुषलक्षण  
२१ स्त्रीलक्षण २२ पशुलक्षण २३ मंत्रवाद २४ यंत्रवादतंत्रवाद २५ रसवाद  
२६ विषवाद २७ गंधवाद २८ विद्यानुवाद २९ युद्ध ३० निपुद्ध ३१ तर्कवाद ३२  
संस्कृत ३३ प्राकृत ३४ उत्तर ३५ प्रत्युत्तर ३६ देशभाषा ३७ कपट ३८ वित्त-  
ज्ञान ३९ विज्ञान ४० सिद्धांत ४१ वेदांत ४२ गारुड ४३ इंद्रजाल ४४ विनयकला  
४५ आचार्यविद्या ४६ आगम ४७ दान ४८ ध्यान ४९ पुराण ५० इतिहास ५१  
दर्शनसंस्कार ५२ खेचरी ५३ अमरी ५४ वाद ५५ पातालसिद्धि ५६ धूर्तशं-  
बल ५७ वृक्षचिकित्सा ५८ सर्वकरणी ५९ काष्ठघटन ६० कृत्रिममणिकर्म ६१  
वाणिज्य ६२ वड्यकर्म ६३ चित्रकर्म ६४ पापाणकर्म ६५ नेपथ्यकर्म ६६ धर्मकर्म ६७  
धातुकर्म ६८ यंत्ररसवतीकर्म ६९ दसित ७० प्रयोगोपाय ७१ केवलीविधिकला ७२  
७ बहुत्तरि कला जाणइ । हिच चउसठि विज्ञान कित्यां । नृत्य १ कवित २ चित्र ३  
वादित्र ४ मंत्र ५ यंत्र ६ तंत्र ७ विज्ञान ८ वंम ९ जलकर्म १० गीतगान ११ तालवायण  
१२ मेघवृष्टि १३ फलकृष्टि १४ आरामरोपण १५ आकारगोपन १६ धर्मविचार  
१७ शकुनसार १८ क्रियाकल्प १९ संस्कृतजल्प २० प्रासादरीति २१ धर्मनीति  
२२ वर्णिकावृद्धि २३ सुवर्णसिद्धि २४ सुरभिनेलकरण २५ लीलामंचरण २६  
गजाभ्यनिरीक्षण २७ पुरुषस्त्रीलक्षण २८ वसुचर्णभेद २९ अष्टादशलपि-  
परिच्छेद ३० तत्कालयुद्धि ३१ वास्तुसिद्धि ३२ वैद्यकक्रिया ३३ कामक्रिया ३४  
घटभ्रम ३५ सारिपरिभ्रम ३६ अंजनयोग ३७ चूर्णयोग ३८ हस्तलाघय ३९ शा-  
स्त्रपाठ्य ४० नेपथ्यविधि ४१ वाणिज्यविधि ४२ मुग्धमंढन ४३ मालिपंढन ४४  
कथाकथन ४५ पुष्पग्रथन ४६ यक्रोक्ति ४७ काव्यशक्ति ४८ मारवेप ४९ सन-  
लभाषाविशेष ५० अभिवानज्ञान ५१ आभरणपरिधान ५२ नृत्योपपार ५३  
गृहाचार ५४ रंघन ५५ केशबंधन ५६ धोणानाद ५७ चिन्तायाद ५८ अंकविचार

५९ लोकव्यवहार ६० वशीकरण ६१ चारितरण ६२ प्रश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३ धर्मध्यान ६४ ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र वपाणइ चउसट्टि विज्ञान ।

इति श्रीअश्वलाच्छे श्रीमाणिस्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे  
वाग्विलासे प्रथमोद्घासः ।

## द्वितीयोद्घासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनिभरि; परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ नवनवी परि । इसिइं अवसरि आविउ आपाढ, इतरगुणि संवाद; काढइयइं लोह, घामतणउ निरोह; छासि पाटी, पाणी बीयाइ माटी; विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पंथीतणउ काल, नाठउ दुकाल । जीणिइ वर्षाकालि मधुरध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षनूपति आवतां जयदका वाजइ; चिहुं दिसि बीज झलहलइ, पंथी घरभणी पुलइ; विपरीत आकाश, चंद्रसूर पारियास; राति अंधारी, लचइं तिमिरी; उत्तरनउ ऊनयण, छापउ गयण; दिसि घोर, नाचइं मोर; सधर, वरसइ घारावर; पाणीतणा प्रवाह पलहलइं, बाडिऊपरि बेला बलइं, चीपलि चालतां शकट खलइं, लोकतणां मन धर्मऊपरि बलइं; नदी महापूरि आवइं, पृथ्वीपीठ ह्वावइं; नवां किसलय गहगहइं, बल्लीवितान लहलहइं; कुडुंबीलोक माचइ, महात्मा बड्ठां पुस्तक धाचइं; पर्वततउ नीक्षरण विष्टइं, भरियां सरोवर फूटइ । इसिइ वर्षाकालि राजा सोमदेयतणउं कराविउं सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं; घघावणीउ धापउ, राजाकन्हइ आपउ; राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ; दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर; जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहूर्त लीयउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीघउं; इसिउं करतां आविउ आसो मास, दिसि सप्रकास; कमलवन उल्लास, हंसतणु विलास; कादव सूकइं, नइ निर्गलपणउं मूकइं; विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज पूजतां पूजइ मनतणी रली; तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी पालि पुहुता, वजपट दीसइ लहलहता ।

तिसिइ समइं अनेक ब्राह्मण मिलिया । कवण कवण । दुवे त्रिवाडी व्यास पाठक देवाईत मोपाईत सुराईत चंद्राईत देवशर्म्म मोपशर्म्म यज्ञशर्म्म

सोमशर्म श्रीधर देवधर गंगाधर गदाधर लक्ष्मीधर श्रीवच्छ पद्मनाभ पुरुषो-  
त्तमप्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानहं कारणि कलिकलिया; गलेत्रागा,  
वेदध्वनि उच्चरिया लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण १८ स्मृति जाणह। ते किस्व्या  
पुराण। भागवतपुराण १ भविष्योत्तरपुराण २ मत्स्यपुराण ३ मार्कण्डेयपुराण ४  
विष्णुपुराण ५ वाराहपुराण ६ शिवपुराण ७ वामनपुराण ८ ब्रह्मपुराण ९  
ब्रह्मांडपुराण १० ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११ आग्नेयपुराण १२ पद्मपुराण १३ लिङ्ग-  
पुराण १४ नारदपुराण १५ स्कंदपुराण १६ कूर्मपुराण १७ गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति। मानवीस्मृति १ आत्रेयीस्मृति २ वैष्णवीस्मृति ३  
हारीतकीस्मृति ४ याज्ञवल्कीस्मृति ५ शनैश्वरीस्मृति ६ अंगिरास्मृति ७  
आपस्तंबीस्मृति ८ सायत्तकीस्मृति ९ कात्यायनीस्मृति १० बृहस्पतीस्मृति  
११ पारासरीस्मृति १२ शंखीस्मृति १३ लिखितास्मृति १४ दाक्षीस्मृति १५  
गौतमीस्मृति १६ श्वाततपीस्मृति १७ वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिह रत्नमंजरी कुंअरि राजारहइ बीनती कराबी, तिहां कुतिग जोइवा  
आबी। जेहतण्ड परिवारि, सपी अनेकप्रकारि; कस्तूरिका कर्पूरिका लीलावती  
पद्मावती चंद्रावती चंद्रउली चंपू हंसी सारसी वगुलीप्रमुख अनेक सपी बर्त्तइ।  
तीहं सहित तिहां आबी। पितारहइ प्रणाम नीपजाबी उत्संगि वइठी, दिव्य  
रूप देपी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एहयोग्य कवण वर, किं नर, किं विद्या-  
धर, इसीउं चींतवतइ नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीपी। तु निर्मल जलि, वइठा  
कमलि; हंस करइ रमलि, च्यारइ दिसि वासीइ परिमलि; कारंड कुरंज कल-  
हंस कलगलइ, ताप टलइ; मोर वासइ, सर्प नासइ; आडि पंपीआ तरइ, ब्राह्मण  
खान करइ; माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइ मन; देहुरी  
वंडकलस झलहलइ, लहरि ऊछलइ। इम जोतां राजहंस एक सरोवरहंतउ ऊडी  
वइठउ राजातणइ हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रुडउ रूपवंत, म्लीयामणउ,  
सोहामणउ; श्वेत, लावण्योपेत; जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, जीणइ मोही-  
यइ अमर, कुंदकुसुमस्तवकसमान प्रधान पक्षिकुलावतंस। इसिउं हंस कुति-  
गकरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइ जोअड कुमरी, तेतलइ हंसि  
जिमणी पांप विस्तारी; कुमरि पांपमाहि घाती, भलीपरि साती। ऊपटिउ हंसु,  
तत्काल पडिउ ध्वंसु। घसमसतउ ऊठिउ राउ, कहइ भाउ घाउ, बलिउ नी-  
माणि घाउ। राउतपायक पलभलिया, घोर सवि मिलिया। घाउं गणा, ब्राह्मण

घरभणी ऊजाणा; दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी त्राठा । वुंव पढी राउ घायउ हंस-  
पूठिइं जेतलइं, हंस घाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं । जे बारु, ते पइठा सरो-  
वर माहि तारु; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ । निश्वास मेलही  
राउ पाछउ बलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ । राणी ते वात जाणी, मूर्छा  
पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांटी छांटी पाणी; राजा आवासी आव्या,  
कन्यानणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया ।

तिसिइ आविउ वसनं, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल  
वाउ वाई, विहसईं वणराईं ।

सध्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल ।

जे दवि दाया रूपडां तीह माथइ फुल्ल ॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; पेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कल-  
रय करइं कोकिलतणां कुल । प्रवर प्रियंशु पाडल, निर्मल जल, विकसित क-  
मल; राता पलास, सेयंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहईं, नाग पुन्नाग गहगहईं ।  
सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि; लोकरुणे हाथि बीणा, बन्नाइंदवर  
झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलनणा हार; सर्वांगसुंदर, धनमाहि रमइ  
भोग पुरंदर । एक गीत गवारइं, दान दिवारइं; विचित्र वादित्र बाजइं, रमलि-  
तणां रंग छाजइं । एकिघादिइं फूल चूडइं, वृक्षतणा पल्लव पूंढइं; हीडोलइं हींचइं,  
झीलनां वादिइं जलिइं मींचइं; कैलिहरां कउतिग जोभइं, प्रीतमन होपइं । धनपा-  
लकि अवसर लही वसनं अवनरियातणी वार्त्ता कही । राजा सोमदेय आव्या  
धनमाहि, तेह जि सरोवर देवी कुंअरि सांभली मनमाहि । तेतलइं पुरुषि  
एकइं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेइ रापरहइ दीघउं, राजा हाथि लीघउं ।  
तेतलइं तेह जि कमलमण्यहंती नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि ।  
हुंगुनणां व्याप चूरियां, लोक आश्चर्य पूरिया । नगरमध्य चार्ता जणाचीं, राजी  
कमललोचना आयी । दीठी चेटो, हुइ परमानंदतणी पेटी, परियरी चेटो । तिहां  
मांडिया यथामणां, महोत्सवि करां सुहामणां; विचित्र वादित्र वाजिया लागी ।  
ते कयण कयण । बीणा विपंवी पल्लकी नकुलोष्टी जपा विचित्रिका हस्त्रिका  
परयादिनी कुञ्जिका घोषयनी मारंगी उदंवरि त्रिसरी धंवरि आलविणि  
छरना रावणहन्त्रा ताल कमल घंट जयघंट शालरि उंगरि कुरकणि कमरउ  
घापरि टाक टाक टाक भूंम नीमाण तांवरि कटुआलि मेहक कांसी पाठी

पाऊ सांप सींगी मदन काहल भेरी धुंकार तरवरा । ईणिपरि मृदंगपटुपडहप्रमुख  
वादित्र वाज्यां, दुःख दूरि ताज्यां । इकवीस मूर्छना ह्युणपंचास तान, इस्यां  
हुई गीत गान; याचक योग्य प्रधान वस्त्रदान । कस्यां ते वस्त्र । सृथिला संग्रा-  
मां दाडिमां मेघवनां पांडुरां जादरा कालां पीयलां पालेवीयां ताकसीनीयां  
कपूरीयां कस्तूरीयां फूदडीयां चउकडीयां सलवलीयां ललवलीयां हंसवडि  
गजवडि उडसाला नर्म पीठ अटाण कताण झूना झामरतली भइरव सुद्धभइरव  
नलीवद्धप्रमुख वस्त्र जाणिवां । ईणिपरि महोत्सवभरि, साथि कुमरि, नरेश्वर  
पहुता नगरि । मनतणइ उल्लासि, आख्या आवासि । रायरहइ कुमरीतणउं  
स्वरूप विमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वार्त्ता कहिस्यइं केवलनाणी । राजा  
तां आश्चर्य धरतइं हुंतइ प्रधान तेडाविउ, तिहां आविउ । ते प्रणाम करी बह-  
ठउ तउ राजां बोलाविउ । हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी  
कुमारि । तु मंडावीयइ स्वयंवर, मैलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छा  
वरइ वर । इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइं आदेश दीधउ; लु  
को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ ।  
तिवारपूठिइं स्वयंवरमंडप सूत्रधारपाहिं कराविवा मंडाविउ, हुं लुम्हकन्हइं  
आविउ । हिव लुम्हे तिहां पाउ धारउ, ए धीनती अवधारउ, राजासोमदेवतणइं  
मनि आनंद वधारउ ।

इसी वार्त्ता सांभली दूतहुईं बहुमान देतु कटक लेइ राजा पृथ्वीचंद्र  
स्वयंवरभणी घालिउ, कटकभारि पातालि शेष नाग हालिउ । हाथीया घोडा,  
नहीं थोडा । कस्या ते हाथीया छइ । सिंहलदीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीक,  
उल्ललितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल क्षरता,  
आलि करता, अतुलबल, उच्छृंखल, गलगर्जित करता गजेंद्र सांचरियां, तर-  
लतेजी तरवरिया । कस्या ते । हयाणा भयाणा कूंकणा कास्मीरा हयठाणा पइ-  
ठाणा सरसईया सींघउरा केकाइला जाइला उत्तरपंथा पाणीपंथा ताजा तेजी  
तोरका काच्छला कांवोजा भाडेजा आरद बाल्हीकज गांधार चांपेय तैतिल  
त्रैगर्त्त आर्जनेय कांदरेय दरद सौवीर क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल  
वंचासणा परीछणा । जोयउं सहइं, वपूकारिया रहइं; वांकी द्रेठी, सभर पूठि;  
छोटे काने, सूधइ यानि; सइरनी ललवलाई, नीछटनी कलाई, पूंछतणी आय-  
ताई; पलाणतणी सामंत्राई; वांकी तुंडवाल, बहुली पेटवाल, शुहि ल्हा,

घरभणी ऊजाणा; दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी त्राठा । बुंव पढी राउ धापउ हंस-  
पूठिहं जेतलहं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलहं । जे वारु, ते पइठा सरो-  
वर माहि तारु; समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ । निश्वास मेलही  
राउ पाछउ बलिउ, परिघउ परिवार मिलिउ । राणी ते बात जाणी, मूर्छा  
पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांटी छांटी पाणी; राजा आवासी आव्या,  
कन्यातणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया ।

तिसिह आविउ बसंत, हूउ शीततणउ अंत, दक्षिणदिसितणउ शीतल  
वाउ वाहं, बिहसहं घणराहं ।

सन्वे भल्ला मासडा पण बइसाह न तुल्ल ।

जे दधि दाघा रंपडां तीह माथह फुल्ल ॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार; वेउल बकुल, भ्रमरकुल संकुल, कल-  
रव करहं कोकिलतणां कुल । प्रवर प्रियंशु पाडल, निर्मल जल, बिकसित क-  
मल; राता पलास, सेवंत्री वास; कुंद मुचकुंद महमहहं, नाग पुद्गाग गहगहहं ।  
सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीहं कुसुमरेणि; लोकतणे हाथि धीणा, यन्त्राडंबर  
झीणा; धवल शृंगार सार, मुक्ताफलतणा हार; सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमहं  
भोग पुरंदर । एकि गीत गवारहं, दान दिवारहं; विचित्र वादित्र बाजहं, रमलि-  
तणां रंग छाजहं । एकि वादिहं फल चूदहं, वृक्षतणा पल्लव पूंदहं; हीडोलहं हींचहं,  
झीलनां वादिहं जलिहं सौंचहं; केलिहरां कउतिग जोअहं, प्रीतमंत होयहं । वनपा-  
लकि अवसर लही वसंत अवतरियातणी वात्सा कही । राजा सोमदेव आव्या  
घनमाहि, तेह जि सरोवर देपी कुंअरि सांभली मनमाहि । तेतलहं पुरुषि  
एकहं तेह सरोवरहुंतुं एक कमल लेहं रापरहं दीधउं, राजा हाथि लीधउं ।  
तेतलहं तेह जि कमलमध्यहंतो नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि ।  
दुःखतणां व्याप चूरियां, लोक आश्चर्य पूरिया । नगरमध्य चाना जणावी, राजी  
कमललोचना आवी । दीठी वेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिचरी चेटी । तिहां  
मांटिया घषामणां, महोत्सवि करीसुहामणां; विचित्र वादित्र बाजिवा लाग्ता ।  
ते कवण कवण । धोणा विपंची बल्लकी नकुलोष्टी जया विचित्रिका हस्तिका  
परवादिनी कुज्जिका घोषवनी सारंगी उदंवरी त्रिसरी छंपरी आलविणि  
छरना रावणहत्या ताल कंसाल घंट जयघंट डालरि उंगरि कुरकचि कमरउ  
घाघरी टाक टाक टाक धुंम नीसाण तांबकी कटुआलि सेह्दक कांसी पाठी

तेहमाहि नरेश्वरतणां कटक न लहइं माग, न लहइ नदीतणा ताग; न सरुइ चाली घोडा हाथी, न को जाणइ साथी । विपम पर्वतमाला, डावी जिमणी दवतणी ज्वाला, जई न सकइं चडिया नइ पाला, तेतलइं दीसिवा लाग़ा भील अत्यंत काला । तिवारइं राजापृथ्वीचंद्र चींतविउं आवी विपम वेला, जई थाई भील मेला; तु किम झूझीयइं, जइ परदल नचूझीयइं । जेतलइं राजा इसिउं चींत-विउं तेतलइं ते कटक अटचीऊपरि हुई पारि पढुतुं, मनि गढगढतुं । आगलि नगर एक देपइ, ते हर्प कुणतणइ लेपइ । सवे कटकीया लोक आथर्य धरइं, परस्परइं इसी घात करइं । कुणहिं काई जाणिउं, ए कटक इहां कुणि आणिउं; दैव रुठउ, पुणि दैव दाणव कोइ तूठउ; जीणइं एवइं सानिध्य कीधउं, हेलांमात्र कटक इहां लीधउं । अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरुडं पुण्य । जेह फारणि इस्युं कहइ । जे गया विदेसि, पडिया फ्लेशि; ताणीया पाणीनइ पूरि, आक्रम्या क्रूरि; चांप्या सधरि, डसिया विपधरि; धरियां राइ, भेल्या घणे घाइ; मुरडिया मोगे, दहविया रोगे; ऊपाटिया वंदि, पडिया विछंदि; तीहं सविहं-नइं धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार । लोरुरहइं इसी घात करतां राजाइं तिहां आंवापृक्षहेठलि आव्या, उतारा नीपजाव्या । तेतलइ धातु, पुलतु; पाछउ जोतउ, कायरपणइ रीतउ; पुरुष एक नरेश्वरतणइ शरणि पइठउ । तेतलइ तरुआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता; केई पुरुष आव्या । तेहइ राजा बोलाव्या । आपु ए चोर, महाकठोर, जे एहनइं रापइ ते दोर । तिवारइं राजातणे सेवके कहिउं अरे ए कहीइं राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्युं पहुची न सकइं इंड । तिवा-रइं ते पुरुष कहिवा लाग़ा । नरेश्वर पहिलउं घात अवधारउ, तउ चोर जगारउं । अम्हे तलार, करउं नगरतणी सार । पुणि ए चौर, दुर्दान्त अपार; ए विवि-धवेसि हेरइ, बोलाविउ बोल फेरइ; चटइ मालि अटालि, पडसइ परनालि पालि; कमाड ऊपाटइ, पुणि सतु कोइ न जगाटइ, अचोर निद्रा दिइ; कान-फोटना आभरण लिइ; कटारी पायबंधन वाडइ, पर्वतप्राय केलाण काडइ; पाडिउं चोर पवाडई, राउला भंडार फाडइ; दोसइ दिसि ज्ञान, पुणि रात्रिइं साक्षात् मृतान्त; विणासीतउ न मानइं चोरी, बांधइउं बाढी जाइ दोरी; लोक सांरुल घोटइ, घटी न रहइं पोटइ; लाकिउ ऊजाइ, मंघिउ धमो घाट, करि फीपइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि; गढमंदिर फाटइं, धीजि अटइ । इस्यु ए चोर गढनइ परनालि पदमनउ लापउ, पाछी बांधउ, दांते दोर चोटि



आसणि सूधा; हसमंत ह्यहेपारवि अंवर वधिर करता । सुरवीर साहसिक  
 कालूआ किरडिया किहाडा नीलडा सेराहा कविला धूसरा मांकडा दोरीपा  
 बोरीपा द्वादशावर्त्तव्यजनगुणि शोभित शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित ।  
 ससइं घसइं, साटि पइसइं, जुडइं, दउडइं । जिस्या सूर्यतणा रथ छुटा हुइं तिस्या  
 अनेक तुरंगम सांचरिया । तउ पायक पहटिया । किस्या ते पायक । सुरवीर  
 विक्रांत दुर्दीत पद्म पेहेलीवे अमइं, वयरीरहइं आक्रमइं; पवनवेगि पुलिइं, योधस्युं  
 जुटइं, सेल्ल कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं; वेला लामी, न मेल्हइं  
 स्वामी; नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां घाट दिह । किहईं  
 न दीसइ धाका, जीह लगइ हुइ जयपताका; जे घाई पुलइं ऊच्छलइं । इस्या  
 पायकनी मिली कोडि, जीह माहि नहीं पोडि । हिव रथ विस्तरिया । किस्या  
 ते रथ । चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि बइठा सता; छत्रीसे  
 दंडायुधे भरिया, वायुवेगि सांचरिया; घडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजभाहि  
 रविबिंब रोलइं; ऊपरि घज लहलहइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगहइं;  
 घांट याजइं, वयरी भाजइं; मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरिया  
 रथ । ईणिपरि चतुरंग दल चालतां हुतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम नगर  
 आवइं, लोक नवनवां भेटणां नीपजाचइ । मार्गिं जातां आयी एक अटवी ।

हिव ते किसीपरि वर्णविधी । जेह अटवीमाहि तमाल ताल हंताल  
 मालूर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक वकुल विचिकिल सहकार कांचनार जांबू  
 जंघीर बानीर कणवीर फीर केलि कदंब निंब नारिंग नालीपरि द्राप दाडिमी  
 देवदारु अंकुल कंकिलि नाग पुन्नागवल्ली यूथिका मालती माघयी जपा  
 मग्न्यक दमनक पारथि केनकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री राजगिरि  
 सिरिपां सीबलि सिरघू सीसमि साग टोंटूसार आक आकमंदार कपित्थ धील  
 यहिडां करण धरण धव पदिर पलाश बह वेडस पींपल पींपरि ऊंयर फटंबड  
 घाहूदी धामण पीप पेजड पीरणीं कइर करंज वाउल बीजुरी आमली आंविली  
 वोरि इंगोरि गोरडोयाममुख गृक्षावली दीसइं, वोहंतां सूर्यतणां किरण  
 माहि न पटसइं । अनटं बिलाइं सिवानणा पेत्कार, घूक्तणा घूत्कार; व्याघ्र-  
 तणा पुरहाराट, न लाभइं वाट नइ घाट; माहि वानरपरंपरा उछलइ, मदोन्मत्त  
 गजेंद्र गुल्गलइं; मित्रनादभयभीन मयगल पलभलइं । जिस्या दवि दाघा  
 पील, निस्या भील । मृअर पुरकइं, चीघ्रा पुरकइं; वेताल किलकिलइं, दावानल  
 प्रज्वलइं; रींछ सांचरइं, विग्नणा यूध विचरइं । इसी मझारीअ अटवी ।

४ पद्म ५ छुरिका ६ तोमर ७ कुंत ८ विशूल ९ भाला १० भिडमाल ११ सु-  
संदि १२ मक्षिक १३ मुद्गर १४ अरल १५ हल १६ परशु १७ पट्टि १८ शवि-  
ष्ट १९ कणय २० कंपन २१ कर्त्तरी २२ तरवारि २३ कुदाल २४ दुस्फोट २५  
गदा २६ प्रलय २७ काल २८ नाराच २९ पाश ३० फल ३१ यंत्र ३२ द्रस  
३३ दंड ३४ लगड ३५ कटारी ३६ वह्नि । इस्यां हथीआर झलहलहं, कायर  
पुलहं । रथ जूडंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, बाण भेलहते  
आकाश छाया । एकि घोडे चडहं, एकि ऊतावला पडहं; कायर रडहं, सुभट  
भिडहं, घोध जुडहं । घोडा मुह मूकी धाई, नूटे पगि ऊजाई; हस्तीतणा सुंडादंड  
घूटहं, एकिना शिर फूटहं । इसिह युद्धि प्रवर्त्ततहं हुंतहं राजा पृथ्वीचंद्रतणुं  
दल वयरीए एकवार भागं, नासिया लागं । समरकेत हूउ सानंद, पृथ्वीचंद्र  
हूउ निरानंद; चींतवह ए किसी बात, माहरा दलरहई काई हूउ उपघात ।  
राजा चींतवतह हुंतहं बीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणहं कडतिग नीपजा-  
विउ । तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना फटकरहई  
थडियां । राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते बीर  
तियारपूठिहं कुणहीं न जाणिउ । तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वी-  
चंद्रतणउ बीरवर्ग मिलिउ ।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिस्यसुंदरसुरिविरचिते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे

द्वितीयोद्घासः ।

### तृतीयोद्घासः



जह मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहुंतउ छोटिउ; पिहराबी बोलाचीउ ।  
तुं मनि गर्व आणे, माहरी बात न जाणे । किवारहं सूर्य पूर्व छांटो पश्चिम उदय  
मांडह, समुद्र मर्यादा छांडह; मेरु ढलह, आकाशानउ नक्षत्रराशि गलहं; पापीया-  
घरि धर्म पलह, पाणीमाहि अग्नि प्रज्वलहं; धूमंटल पलभलहं, कुलाचलचक्र  
चलह; अमृतहुंतउ विष धाह, पृथ्वी रसानलि जाह; कृपणि दान दीजह, पुणि  
मुक्षकन्हइ प्राणि शरणागत चोरह किम लीजह । निवारहं जे आविउ छह  
शरणि, ते लागु राजातणे चरणि; स्वामी तुं धन्य जीणि तह हुं ऊगारिउ,  
नहींतु तलारे हुंतु मारिउ; पटतउ संसारि; होयन मनुष्यजन्मनणी हारि ।  
गजा कहिउं तु किमिउ, जेहनुं मन इमिउं । यिचानि ते कहिया लागु । अंग-

नाठउ, तुम्हनई शरणइ पड़ठउ । पुणि ए पापी, जीणिप्रजा संतापी; ए तुम्ह न थापउ, अम्हरहई आपउ । नहींतु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं । अम्हारउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि कोई राय नइ राणउ । सांभलउ ए वात, ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात । तिहां छइ राजा समरकेतु, अतिसचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु । जेतलइ तेउ ए वात जाणिसिइ, तेतलइ ताहरा अहंकारतणउ अंत आणिसिइ । एह कारणि चोर आपी निर्दोष धाउ, पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ । इसी वासां सांभली आपणां सुभटसाम्भउं जोई राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या । ऊठिया ते वीर, ताकवा लागी सोमर तीर । नाठा तलार, नासता घूठिइं बाजइ प्रहार; नीठ ते जई नगरमाहि पड़ठा, तु नाभिइं सास बड़ठा । जइ वीनविउ समरकेतु राउ, देपाढइं आपणउ घाउ । समरकेतु राजा कीयउ कोप, हुउ दलवई निरोप; तत्काल सामहिउं दल, मिलइं सुभट सबल; बाजइं प्रयाणभेरी, वीहइं वयरी; पाठहस्ति शुद्धिउ, तेहऊपरि राजा चडिउ । रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पापरिया, पायक सांचरिया; चतुरंग दल नीकलिउं, बाहिरि एकठउं मिलिउं; दीसइं छत्रध्वज, ऊछलइं रज । तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी वात कही । तुं पियारइ वेसि पइस, अन्याय करी इहां वयस; तउ तुं अजाण, अजी मानि स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहींतु प्रकटि प्राण; चोरदंड तुझनइं होसिइं, लोक कउतिग जोइसिइ । ईणइं वातइं दूत अपमानी बाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि दल सामहाविउं, ए आपणइ पवै आविउं । चाल्पां वेउ दल, ऊपड़इं धूलिपडल; कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सुझइ नहीं । न जाणीइं आपणां दल, न जाणीइं पिरायुं दल, न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल; न जाणीइं पूर्व न जाणीइ पश्चिम एकाकार हुउं । बिहुं दल मिलते मादल बाजी, जयदक याजी, रणचहण काहली बाजी; रणतूर बाजियां । ग्रंथकतणे ग्रहचक्रादि जाणे त्रिन्हइ त्रिसुवन टलटलिवा लागी, भेरीतणे भूंभूयादि सुहि मिलिहि फादी, काहलतणे कोलाहले काथर कमकम्पा, नीसाणतणे निनादि उच्चैः श्रवा ऊकनिउ, ऐरावण ऊमंडिउ, दिग्गज डहडहिवा, दाकनूक बाजी, बुंवारव फादी, बिहुं दलि चालते सेपनाग सलबलिउ, कुलाचलचक्र चलिउ, कूर्म करोदि भाजइ, अंबर गाजइ; अकालि अपस्तावि प्रलयकालनी शंका हुई । बाघ्याकोष, झूझइं गोघ; घाय जालवइं, उन्नीस दंडापुत्र चालवइं । किस्यां ते । चक्र १ चक्र २ धनुष ३ अंकुश

दकालनु मेह; थोडा मेहनउ ब्रेह, वहिलु आवइ छेह । लक्ष्मीतणउं त न्याय  
नीपनउ, हिव वैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव ।

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचं-  
द्रप्रतिहं शिरु नामिउ । अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही । तूरहिइ  
कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ । ताहरुं अद्भुत भाग्य, मुक्ष-  
नइ ऊपनु वैराग्य । विमासी जोयुं तउ असार, संसार । जिशिउं पीपलनुं पान,  
जिशिउं गजेद्रनु कान; जिशिउ संघ्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ  
मांकडनु वैराग; जिस्तिउ बीजनु झवकु, जिस्तिउ पोइणिनइ पाति पाणी-  
नउ टवकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ सं-  
सार चंचल । तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी । हउं तापसी दीक्षा  
लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु । पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे  
करुवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म । सांभलउ वन ते यर्णवीह जे वृक्षवंत,  
नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे धीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे  
समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, घाट ते जे यूथवंत,  
हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे बचनवंत, मठ ते जे  
मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, बचन  
ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे  
तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चाय-  
वंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत ।  
अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ । जेतलुं अंतर राणी अनइ दासि,  
जेतलुं अंतर दही नइ छासि, जेतलुं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतलुं  
अंतर समुद्र नइ फूया, जेतलुं अंतर सोनईया नइ रूया, जेतलुं अंतर वाप  
नइ फूया; जेतलुं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलुं अंतर रूपा नइ कथीर;  
जेतलुं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतलुं अंतर बारू भीति नइ त्राटी; जेतलुं  
अंतर पटउला नइ छाटी; जेतलुं अंतर पडसूत्र नइ सुतली, जेतलुं अंतर जी-  
घता माणस नइ पूतली; जेतलुं अंतर खट्ट नइ छुरी, जेतलुं अंतर तंदुल नइ  
बुरी; जेतलुं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलुं अंतर साकर नइ पारा; जेतलुं  
अंतर सीह नइ सीआल, जेतलुं अंतर प्रभात नइ बीआल; जेतलुं अंतर रूंगा  
नइ राग, जेतलुं अंतर सीबलि नइ साग; जेतलुं अंतर अलसला नइ नाग,

देशि श्रीपुरिनगर, तिहां श्रेष्ठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीईं सधर । तेहतणु पुत्र  
हुं श्रीपति, पणि विपम दैवगति; दसकोडि द्रव्य हूंती, पणि वापुजीसाथि  
पहुती । पिता परोक्ष ह्वा पृष्ठिं जं वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र सातिउं; कई  
चाणउत्रे ग्रसिउं, हाड चोरे मुसिउं; थलवटनउ थलवटइ रहिउं, कई ठाकुरे ग्रहिउं;  
घर वलिउं, समग्र मंडाण टलिउं; समग्र द्रव्य निस्तरिउं, एकलक्ष द्रव्य ऊगरिउ ।  
पछइ अवर काजकाम छांडिउं, प्रवहण पूरिवा मांडिउं । भलइ दिवसि  
प्रवहण पूरिउ, त्रिभि सइं साठि क्रियाणां चढाव्या, ससविध पकवान चढा-  
व्यां; ससविध करंवा लिया, पोतां सपाणी भरिया, देवसमुद्र वापस पूजाव्या ।  
पाभिल मादल वाजिवा लागीं, वावरि कोलणि नाचेवा लागी, गलेला हेलाल  
करवा लागी; कूउपंभउ ऊभउ कीधउ, नागरउ पाडिउ, सिद्ध ताडिउ; घामतीउ  
घामतउ लीचइवा लागु, बाऊरीऊ तलि पइठउ, नोजामउ नालि वइठउ । आउलां  
पइइं, सुकाणी सुकाण चालवइं, मालिम वाहण जालवइं; सुरवर लहलछा,  
वादित्रनादि समुद्र गाजी रछा । हिव आगलि जातां हूंता चिली वाय वायां,  
आकाशि हईं मेघछाया; ऊडिउ पवन प्रवल, समुद्र इउ उच्छृंखल; कल्लोल  
आकाशि ऊपइइं, बीहतां लोकरहइं डींवा चडइ; वेला लामी, वस्तु घामी; एक  
हा दैव करइ, एक देवघ्यान घरइं । वाहणि पर्वत आफली भागउं, श्रीपतिइ  
हाथि पाटीउ लागउं । तेहनइ आधारितरतउ तरतउ त्रिहु दिवसि पारि आविउ,  
वनमाहि सरोवरि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ । आगलि जाता दीठउ  
योगी एक, मह साचविउ नमस्कारतणउ विवेक । जोगी कहिउं तूरहिइ एक  
देसु, बीजउ लेइसु । मह कहिउं दिइ, पछइ मुज निर्जनकन्हइं जं देपइ तं लहिइं ।  
जोगी बंधछोडणी विद्या देइ मस्तकि मागिउं । मह चींतवइउं, घली पूर्व-  
भवपातक जागिउं । जोगी धायु पृष्ठि, मह नासिवा बांधी मूठि । नासतु ईणि  
नगरि आवी रात्रिइं गढतणइ पालि पयसी रहिउ, तलारके ग्रहिउ; तइ रापिउ,  
मोटउ उपगार दापिउ ।

छासिहंकेरउ आफरु दासिहंकेरु नेह ।

कंवलकेरु मोलीउं पिसत न लागइ घेव ॥

माहरी लक्ष्मी इहसरीपी हुई, तउ कहोइ । आभातणी छांह, कुपरिस्तणी  
वाह; आढनउ तूर, नदीनं पूर; ठाकुरनउ प्रसाद, मारुडनउ बिपाद; वहीनउ  
पटीगणउं, मृपटानउ उठीगणउं; दीवानु तेज, मात्रेईनु हेज; दासीनु स्नेह, शर-

दकालनु मेह; थोडा मेहनउ ब्रेह, वहिलु आवइ छेह । लक्ष्मीतणउं त न्याय  
नीपनउ, हिव बैराग्य ऊपनउ; तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदासिव ।

हिव समरकेतु राजा ते चार्त्ता सांभली मनि बैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचं-  
द्रप्रतिइं शिरु नामिउ । अनइ इसी बात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही । तूरहिइ  
कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ । ताहरु अद्भुत भाग्य, मुझ-  
नइ ऊपनु बैराग्य । विमासी जोयुं तउ असार, संसार । जिशिउं पीपलनुं पान,  
जिशिउं गजेद्रनु कान; जिशिउ संघ्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ  
मांकडनु बैराग; जिसिउ बीजननु झबकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणी-  
नउ टवकउ; जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ घजनु अंचल, तिसिउ सं-  
सार चंचल । तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकरी । हउं तापसी दीक्षा  
लेउसु, तप करिसु, संसार तरिसु । पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं तुम्हे  
करवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म । सांभलउ वन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत,  
नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे  
समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत,  
हाट ते जे वस्तुवंत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे बचनवंत, मठ ते जे  
मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन  
ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे यिनयवंत, मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे  
तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे धाय-  
वंत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत ।  
अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ । जेतलूं अंतर राणी अनइ दासि,  
जेतलूं अंतर दही नइ छासि, जेतलूं अंतर मधुरध्वनि नइ धासि; जेतलूं  
अंतर समुद्र नइ कूया, जेतलूं अंतर सोनईया नइ रूया, जेतलूं अंतर बाप  
नइ फूया; जेतलूं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलूं अंतर रूपा नइ कथोर;  
जेतलूं अंतर सुवर्ण नइ माटी; जेतलूं अंतर बारु भीति नइ त्राटी; जेतलूं  
अंतर पटउला नइ छाटी; जेतलूं अंतर पडसूत्र नइ सुतली, जेतलूं अंतर जी-  
वता माणस नइ पूतली; जेतलूं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलूं अंतर तंदुल नइ  
घुरी; जेतलूं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलूं अंतर साकर नइ पारा; जेतलूं  
अंतर सीह नइ सीआल, जेतलूं अंतर प्रमात नइ बीआल; जेतलूं अंतर रूंगा  
नइ राग, जेतलूं अंतर सींवलि नइ साग; जेतलूं अंतर अलसला नइ नाग,

जेतलं अंतर हंस नइ काग; जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ पजूया नइ सूर;  
 जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगाधूर; जेतलइ साधु नइ चोर,  
 जेतलइ हार नइ दोर; जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा; जेत-  
 लइ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस; जेतलइ मोटा  
 घृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव; तेतलं अंतर अपरदैवत  
 अनइ श्रीसर्वज्ञदेव ।

एह कारणि इसउ मनि निश्चियु आणिवउ । जिम श्री मूर्यपापइ दिवस  
 नही, पुण्यपापइ सौख्य नहीं, पुत्रपापइ कुल नही, गुरुपदेशपापइ बिया नही,  
 हृदयशुद्धिपापइ धर्म नही, भोजनपापइ त्रिपति नही, साहसपापइ सिद्धि  
 नही, कुलस्त्रीपापइ घर नही, वृष्टिपापइ सुभिक्ष नही, तिम श्रीवीतरागपापइ  
 मुगति नही । अनइ जिहां हिंसा, तिहां नही धर्मनणी प्रशंसा । जेह कारणि  
 इसिउं कहिइं । जिम विलंब विणसइ काज, कुठाकुरि विणसइ राज, मार्जा-  
 रिप्रचारि विणसइ छाज, अणबोलिइं विणसइ व्याज; पडपि विणसइ दान,  
 कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपापइ विणसइ गान, लुइं विणसइ मइपान,  
 व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान; कुपंडित विणसइ छात्र,  
 क्षयणि विणसइ गात्र; पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद; आक-  
 दूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र; चीभडी विणसइ कणकनु धाक,  
 विपइप्रयोगि विणसइ रसवतीतणउ पाक; वरसालइ विणसइ शक्क, पयरी  
 विणसइ बल्ल; जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ  
 धर्म । राजा पृथ्वीचंद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइ कहिइ छइ । सांभलु परमार्थ  
 हिव, टालिउ मिथ्यात्वतणी देव; आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव,  
 करउ सट्टरनी सेव; जिम टलइ पापकर्मतणा लेव ।

ए वार्त्ता सांभली तोह बिहुरहिइं मिथ्यात्वतणी आंति टली, जैनदीक्षा  
 लेवा हुई मनि रुली । तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण भ्रमगमाहत्मा  
 एक तिहां आविउ, नेह सविहु तेहरहइं प्रणाम नीपजाविउ । पणि लागी, दीक्षा  
 मागी; तीणि दीधी, बांछितवार्त्ता सीधी । तिवारपूठिइं तेहे ऋषीश्वरे राजा  
 मोकलायी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आवउ पीयाणउ दीधउ । पहिलुं पहुतु पद्म-  
 पुरि, लोक हर्ष पमाडिया भलीपरि । तिहां परमहंस प्रधान स्थापिउ, कर्णवारनु  
 भार आपिउ । हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहुंता साते पीयाणे अयोध्या नगरी

पहुता, स्वयंवरि आख्या दीठा राय सवे गहगहता । राजा सोमदेवि साम्हई  
 आची महोत्सवि करी माहि लिया, भला जतारा दिया । तेतलई सूत्रहारे  
 स्वयंवरमंडप नीपायु, पोयणिने पाने छायु । कर्पूर कस्तूरी महमहई, ऊपरि  
 ध्वज लहलहई; चंद्रूआतणी विचित्राइ, पूतलीतणी काविलाई; धंभकुंभीतणा  
 मनोहर घाट, पठई भाट; रत्नमई तोरण नई मोतीसरि, अलंकरिउ कुसुमतणे  
 प्रकरि; वादित्र वाजई, मांगलिक्यगीत छाजई; आरीसा झलकई, चालतां  
 खीना नेउर पलकई । इसिइ मंडपि राययोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण,  
 मागणहारनई पगि पगि दीजइ वासण । तु राजासोमदेवदूत सांचरिया, जतारे  
 फिरिया; राय सविहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंबरि समग्र नरेश्वर  
 मंडपमाहि आख्या । जिस्या देवलोकसंबंधीया छुई देव, तिस्या दीसई सवि  
 नरेश्वर सिंहासणि वड्ढा हेव । तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ  
 साक्षात् हुइ इंद्र । इसिउ आची स्वयंवरि सभामाहि वड्ढउ, सविहुं रायतणे  
 मनि इसिउ शंकाभाव पड्ढउ । जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अन्हारउं आवि-  
 चउं किसिइ करिसिइ । राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलई  
 पवित्र । राजा पृथ्वीचंद्र देपी सकललोक इसिउ विमासई । जिम अक्षरमाहि  
 ओंकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधर्वमाहि तुंवरु; वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधयस्तुमाहि  
 कपूर, वल्हमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शूद्रकवीर, गढमाहि कालिंजरु,  
 पाणिमाहि बहिरागरु; खीपमाहि जंबूदीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप; पर्वतमाहि मेरु-  
 भूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर; जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण;  
 तुरंगममाहि उच्चैःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग; धवलमाहि धूपभ,  
 प्रशस्यदिशिमाहि उत्तरककुभ; अचलमाहि धूमंडल, क्षमायंतमाहि भूमंडल;  
 जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग; जिम ध्यानमाहि शुरु ध्यान,  
 दानमाहि अभयदान; मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागर-  
 खंडउ पान; ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सवार्थसिद्धि विमान; गरु-  
 आमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र,  
 ग्रहगणिमाहि चंद्र; तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र ।

तिवारपूठिई राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहई तेउउ दिवराविउ,  
 तउ सयवं स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याहुई मांगलिकु खान कराविउं । अंगरू-  
 क्षण अनंतर कन्या सदश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलं-



करियां । कित्यां कित्यां ते आभरण । हार अर्द्धहार त्रिसर प्रालंब प्रलंब कटी-  
 सूत्र कांची कलाप रसना किरीट मुकुट पट शेषर चूडामणि मुद्रिका तवक  
 दशमुद्रिका केयूर कटक कंकण ग्रैवेयक अंगुलीयक अंगुस्थल हेमजाल मणि-  
 जाल रत्नजाल गोपुच्छक उरम्बिक चित्रक तिलक कुंडल अभ्रमेचक कर्णपीठ  
 हस्तसंकली नूपुरप्रमुख आभरण जाणिवां । ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि कन्या  
 हुई अलंकृतगात्र, हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां सीकिरितणां छात्र ।  
 कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि तांबूलराग; आविडं नरविमान,  
 तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान । आगलि हुइ यादित्रध्वनि अनइ गीत  
 गान । ईणिइं परिइं सकललोकहुइं आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती; महो-  
 त्सवसहित कुमरि, पढुती मंडपतणइ दारि । ते देपी नरेश्वर सवे मकरध्वजइ  
 मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि । तेहतणा  
 पाणिग्रहणनणी बांछा घरइं, विविध चेष्टा करइं । एकि राय आपणा हीयानउ  
 हार हलावइं, एकि बांहतणा घहिरपा चलावइं; एकि रत्नमय दंडा जलालइं,  
 एकि छुरी जलालइं; एकि मित्रसिउं घात्तालाप मांडइं, एकि दृष्टिरहइं विनोद  
 ऊपजावइं, क्षणु एक पांडइं, एकि संभालइं कानि कुंडल, ईणिपरि विविध  
 चेष्टा करइं राजमंडल । तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाश देव अनइ  
 दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव; मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या  
 नहीं विद्याधर । हिव कन्या आभरणितेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती; स्वपं-  
 थरमंडपमाहि आषी, तु यशोधरा इसिइं नामिइं प्रतीहारीइं बोलावी । अहे  
 कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्षिया हुंता आसमुद्रांतपृथ्वी-  
 तणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरइं तुं वरसि तेहना मनोवांछित पासा  
 ढलिया, मनोरथ फलिया ।

हिव जोइ तुहु आगलि दस्तद्वयमागधदेस्तणउ नरेन्द्र, स्तहिरिइं अर-  
 वेश्वर; राजगृहनगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइं नामि दीसइ । जेह राजा-  
 तणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उल्लसइ; तूठउ दारिम हरइ,  
 दीठउ आनंद करइ; रणांगणि गयवरतणी शुद्धि गांजइ, शत्रुभट भांजइ; इत्यु  
 भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल । अथवा ए जोइ बाणारसीतणउ राउ,  
 भांजइ यपरीनगउ भटियाउ; ए सरागदृष्टि अवलोकी, जेहतणउ प्रनांप प्रसि-  
 द्धउ त्रिहुं लोकि; जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इंद्रहुं सपक्षपर्वततणी

शंका नीपजइ । जेहतणइ तरलतुरंगमि प्रसरइ हुंतइ वहीरहतइ प्रलयकालोद्ध-  
तसमुद्रकलोलतणी शंका नीपजइ । इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल; अकल,  
सकल; कर्मचंद्रनामा नरेश्वर बरि, माहरुं कहिउं करि । अथवा विदर्भदेस कुं-  
डिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विपमकालि; वहइ कर्णदानेश्वरतणउ  
अवतार, धनुर्धरपणइ हरइ अर्जुनतणउ कीर्तिप्राग्भार; जेहतणइ अतुल भंडार,  
प्रबलकोठार, झूझारतणउ नही पार; करइ शत्रुसंहार, करइ भट्ट कहवार; म-  
लाइवार, महाउदार, कंठि बरमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार ।  
अथवा गौडदेस इंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहस्थ राजा जोइ, जीणि दीठइ  
आणंद होइ । जेह राजासंबंधीयइ कुंदमचकुंदकुमुदकेतकीकर्पूरधबलि कीर्त्ति मं-  
डलि प्रसरतइ हुंतइ नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलासपर्वततणी  
पदवी आपी; यमुनातणइ स्थानकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र मइ राहु;  
सरीपा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं बग नइ काग; ईश्वरहुइ नीलकंठपणउं  
टालिउं, विष्णुहुइ कृष्णपणउं पत्तालिउं; बलदेव बांधवपणउं उज्जुआलिउं ।  
ईणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनो किसी बात बपाणीयइ अनेरी ।  
इसिउ अलवैश्वर, सिंहस्थ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीधितेश्वर । ईणिपरि  
तीणइं प्रतीहारीयइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ वीर्यवाहु  
सुपर्णवाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुवाहु रत्नांगद हेमां-  
गद हेमरथ मणिरथ मणिशेपर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभप्रमुख  
नरेश्वर वर्णव्या वपाण्या, पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आप्या ।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ सुपचंद्र,  
ऊलटिउ आनंदसागर, मनि चींतवइ एउ सही गुणतणउ आगर । तिवारइं  
प्रतीहारीयइं कहिउं हे कुमरि सांभलि, पुरा पूर्वइं सगर चक्रवर्त्ति हुइ वि-  
ख्यात वसुधातलि । जेह सगरचक्रवर्त्तितणइ चउरासी लाप हस्ती, जीहतणि  
गति महाप्रशस्ती; चउरासी लाप तुरंग, ऊललता जित्स्या हुइ कुरंग, चउरासी  
लाप रथ सहिजिइं सुरंग; चउरासी लाप नौसाण वाजइं, बयरीना भडवाउ  
भाजइ; अत्यंत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम; गाम घोडउं काढतां छन्नू कोडि  
साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं; चऊद सहस्र संवाध, चऊद सहस्र  
अमात्य अत्यंत साधु; जेहनइ चऊदरत्न, देवता करइ यत्न; नवनिधान, बहुत्तरि  
सहस्र नगर प्रधान; अन्यायरहइं दाटण, अडतालीस सहस्र पाटण; जेहे थसइं

अनेक कुटुंब, इत्या चउवीस सहस्र मटंव; जीहना वर्णनतणी कीजइ जेड, इत्या सोलसहस्र पेड; जेह चक्रवर्तितणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत सारी; चरणि रुण्डुणइ नेउर, इत्या चउसट्टि सहस्र अंतेउर; विहितोल्लास, अट्टावीस-उ लाप पिंडविलास; वत्तीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमई पाय; प्रत्यक्ष, पंचवीससहस्र यक्ष; बीससहस्र सोनारूपातणा आगर, नवकोडि ध्वजाघर, छत्रीस लाप दीयदीया उदार, त्रिन्निसई साठि स्रुआर। एवंविध प्रचंडमुजदंड, साधित भरतक्षेत्रपदपेड; निरुपमस्फूर्त्ति, अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हूउ सगरचक्रवर्त्ति। हिव भगीरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जीणई गंगा समुद्रि घाति रापिउ आपणउं चरित्र। तीणई राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हूआ दस। तेहमाहिइ एकरहई कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहई दीधउं मरहठदेसि ठाम। तेह कुंतलतणइ बंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीकप्रमुख राय हूआ, तेहना प्रघट्टक कुणइ वर्णवाइं जूजुया। देवानीकतणउ पुत्र हूउ राजा पृथ्वीशे-पर। जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउ दर्शन प्रत्यक्ष आपिउ। हिव मधुरबाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि। एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि साक्षात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महीधर, दानिगुणि नवीन जलधर, गांभीर्यगुणि क्षीरसागर; निर्मलपणइ गंगाजल, सौम्यपणइ शशिमंडल; रूपिगुणि अम्बिनीकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गांगेयतणउ अवतार; विवेकगुणि राजहंस, चातुर्यगुणि वृहस्पतितणीपरि लब्धप्रशंस; पृथ्वीभारचहणि शेषनाग, एहजपरि धरि तु अनुराग, इहां छई ताहरउ लाग। घणउं किसिउं कहीई। एह राजा यिक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, शौर्यश्रीवदनारविदप्रयोतन, सकलमहीपाललीला-ललितशासन, पालितश्रीजिनशासन, तुज वरिया योग्य छइ। ते रत्नमंजरी कुमारि प्रतीहारितणां इस्यां वचन सांभली अंगि रोमांच धरती, नेउरतणा क्षमज्ञमकार करती; दर्पभर वहती, राजादूकडी पुहती। लाज ठेली, कंडकंदलि घरमाल मेलही; तत्काल जयजयवारव ऊछलिया, लोक कलकल्पा; विद्याघर पुष्पवृष्टि करई, भट्ट जयजयशब्द उचरई; गंधर्व गीत गाई, वादित्रीया चादित्र वाई; वापरइ धवलमंगल, हुई महामहोत्सव विपुल।

इति श्रीब्रंजलाच्छे श्रीमाणिस्यमुन्दरसूरिष्ठे श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे  
वाग्विलासे तृतीय प्रश्नात् ।

## चतुर्थ उल्लासः

हिव तिसिइ अवसरि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेह-  
रहइ धूमकेतुदेवताणउ मंत्र स्फुरइ, तीणइ जं चींतवइ तं करइ । धूमकेतुदेव  
अठ्ठासीग्रहमाहिलउ जाणिवउ । कवण कवण । अंगारक १ विकालिक २  
लोहितांक ३ शनैश्चर ४ आधुनिक ५ प्राधुनिक ६ कण ७ कणकणक ८ कणक ९  
वितानक १० कणसंतानक ११ सोम १२ सहित १३ अश्वासन १४ रुत १५  
कार्योपग १६ कर्तुरक १७ अजकरक १८ दुंदुभक १९ शंख २० शंखनाम २१  
शंखवर्णाभ २२ कंस २३ कंसनाम २४ कंसवर्णाभ २५ नील २६ नीलाव-  
भास २७ रुप्य २८ रुप्यावभास २९ भस्मक ३० भस्मराशि ३१ तिल ३२  
तिलपुष्पवर्ण ३३ दक ३४ दकवर्ण ३५ काय ३६ बंध्य ३७ इंद्राग्नि ३८ धूम-  
केतु ३९ हरि ४० पिंगल ४१ बुध ४२ शुक्र ४३ बृहस्पति ४४ राहु ४५  
अगस्ति ४६ माणव ४७ कामस्पर्श ४८ धुर ४९ प्रमुख ५० विकट ५१ विसं-  
धिकल्प ५२ प्रकल्प ५३ जटाल ५४ अरुण ५५ अग्नि ५६ काल ५७ महा-  
काल ५८ स्वस्तिक ५९ सौवस्तिक ६० वर्द्धमान ६१ प्रलंब ६२ नित्यालोक  
६३ नित्योद्योत ६४ स्वयंप्रभु ६५ अवभास ६६ श्रेयस्कर ६७ क्षेमंकर ६८  
आरंभकर ६९ प्रभंकर ७० अरजा ७१ विरजा ७२ अशोक ७३ घीतशोक  
७४ वितस ७५ विबल ७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८०  
एकजटी ८१ द्विजटी ८२ कर ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुष्प ८७  
भावकेतु ८८ । इह अठ्ठासीग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ ।

जिचारइ पृथ्वीचंद्रराजातणइ कंठि बरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजा-  
हुइ रीस चडी । रोसं हूउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊछालिउं  
करवाल । ते खड्ग फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नवताल; कंठाविलंबितकंड-  
माल, करतलि कपाल; बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमदूत; कान टापरा, पग छापरा;  
आंषि ऊंडी, पेटि कूंडी; आंषि राती, हाथि काती; विकराल वेश, मोकला केश;  
हडहडाटि हसइ, घरामंडलि घसइ; मस्तकि अंगीठउ बलइ, भैरवा जिम  
कलकलइ । इसिउं रुद्र रूप, केतलुं वपाणीयइ तेहनूं स्वरूप । इसिउ वेताल  
देपी संह भयभ्रांत हूउ । तेतलइ धूमकेतुराजा ऊंडी कन्या उपाटी रथि घातिवा  
लागउ । तेतलइ राय राणा घसमसिवा लागी । तेनलइ तेह जि वेतालहंतउ अं-

धकार प्रसरितं । जीणहं अंधकारि प्रसरतहं हुंतहं अवर कवण लेखह, कोई आपणी छाह न देषह । गजेंद्र गलगलारवि जाणीयहं, रथचक्र चीत्कारपणहं जाणीयहं; चिंधपताका किंकिणीकाणि करी जाणीयहं, तूर्य शब्दि करी जाणीयहं, नोसाण द्रह्द्रहादि जाणीयहं । इसिउ अंधकार विपहर दिवसतणा, च्यारि प्रहर रात्रितणा; छप्रहर गर्भवास सरीपुं प्रवर्तितं ।

ह्रिच ह्रुं प्रभात, फोटी राक्षसनी घात, टलिउ अंधकारव्रत; अदृश्य नक्षत्रपदल, गगन उज्ज्वल; निःशब्द घूककुल, निर्मल दिग्मंडल; आश्रितपूर्वाचल, ह्रुं रविमंडल; विहसहं कमल, विस्तरहं परिमल; वायु घाहं शीतल, प्रसन्न महीतल; जित्या रातापारेवातणा चरण, तित्यां विस्तरहं सूर्यतणा किरण । इसिह प्रभाति हुंतह दीसहं घोडा राधीया, दीसहं पूरिया साधीया; दीसहं राघराणापरिवार, पुणि न दीसहं रत्नमंजरी कुमारि सार । तिवारहं सोमदेव राजा ह्रुउ संचित, परिवार ह्रुउ शोरुवंत, पृथ्वीचंद्र राघ ह्रुउ घिठाय । स्वजनवर्गसंबंधीया राईराणा तिसिह अवसरि उल्हाणा । ते मंडप रत्नमंजरीपापह निःश्रीक दीसिवा लागउ । जिम लयणहीन रसवती, व्याकरणहीन सरस्वती; गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन; खांडरहित पकवान, मानरहित दान; छंदरहित कवि, शस्त्ररहित पवि; विवेकरहित मणु, वेदरहित ब्राह्मणु; स्वर्गरहित ऐरावण, लंकारहित रावण; शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक; फलरहित वृक्षु, तपोरहित भिक्षु, वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम; नासिकारहित मुगमंडल, कर्णपालिरहित कर्णकुण्डल; बम्बररहित शृङ्गार, सुवर्णरहित अलंकार; तांबूलरहित भोग, प्रसिद्धिरहित प्रयोग; करुणरहित बाहुदंड, पणिछरहित कोदंड; चरणरहित बाल, राज्यरहित भूपाल, स्तंभरहित प्रासाद, दानरहित मान; मुष्टिरहित कृपाण; ठउलीरहित बाण; अणीरहित छुरी, लोकरहित नगरी । जिम पाणीरहित सरोवर, तिम रत्नमंजरीपापह ते न शोभह लोकनणउ न्यतिकर । ते सभा, ह्रुई निष्प्रभा । रीझह हुंते जेहरहं दीजहं मोतीतणा घाट, तीह भाट बोलतां न जोह कोह वाट; जीह रीझह चीत, ते कोह न गाह गीन; जेहे ऊपजहं चित्र, ते न बाजहं बादिन; जीणं धूणीह मस्तरु, ते कोह न बांचह पुस्तरु, जीहनउं यपाणीयहं औचित्य, निसिउं न होइ नृत्य । इसिह दुःखि स्वपंवरमाहि पवर्तनह हुंतउ पृथ्वीकंपि छुटउ । धूजह धंभ, धूजह कुंभ; धूजह राघराणा आसणपीठ, वट्टे रहीठ नोठ; एक

धूजतां पडई, कायर रडई। इम धूजि विहूटी, पछई सभाविचालि पृथ्वी फूटी।  
विवर नीपनुं। तेह ज माहि तेज प्रगट हूउं। जोतां हूतां तेह विवरमाहि दिव्यरू-  
पधारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीतणह उत्संगि  
शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सह आश्चर्यपूरित हूउं। तीणें  
स्त्रीइं विहुं हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइं माहि गई, पृथ्वी  
बली तिसीइ जि हुई। असमाधि फेडी, राजा कुंअरि आधी तेडी।

तिथार लोकनणा मेला, चात पूछिवातणी नही वेला। हिव हपिंइ  
लोक कलकलिया, विशेषतु उच्छव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र  
सहित आवासि पहुता। राय उतारे हया। भोजन मंडपऊपरि घज लहलहिया,  
विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुई बवलगान, नीपनां परवान; केलवीपई  
धान, स्वजनहुई बहुमान; वापरई पान, जिमाडीपई जान। कामकाजना  
धणी पलबडि बांधी हींइइ आकुला, मेलई चाउरी चाकुला। मेलई  
आइणी, हिव भोजनतणी मांडणी। बइठी पांति, जिमणहार परीसणहार  
बिहुरहई पांति। पहिलउं परीस्या फलावली खंडम्बाय पकान, पछइ परीस्यां  
उण्हा अन्न। तां विशालस्थालि, परीसी शालिदालि; घृततणी नालि, पापलि शा-  
कनणी पालि; ऊपरि कर करवा वहीं थापरई, ईणिपरि लोक भोजन करई। आ-  
चमनअनंतर दीयां कपूरमिश्र वीडां, लक्ष्मीवंततणे सये वस्तु संपजइ मीडां।  
हिव वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रहुई कराविउं मंगलस्नान, विवाहपोग्य पहिरियां  
पत्र प्रधान। सर्वांग शृंगार भरिउ, जाणे ईंद्र अवतरिउ। गरुड गजेंद्र आविउ,  
उत्तिम स्त्री बधाविउ। गजेंद्रहंतउं ऊतरी डाबइ पगि सिरावसंपुड चांपतउ  
माहि पहुतु। आचारविचार हूआ, चउरीसमाहि क्यारि मांगलिक धर्ती, हाथ-  
मेलायणई दान प्रवर्त्तपी। राजासोमदेवि वरहुई गजरथ तुरंगमदान दीयउं, राजा-  
पृथ्वीचंद्र महोत्सवसहित रत्नमंजरीतणउं पाणिग्रहण कीयउं। पछइ विदो-  
पवंत उत्सवसंपुक्त उत्ताराभणी चालिउ, सरललोक जोइया मिलिउ। एकि  
वपाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वपाणइ रत्नमंजरीतणउं रूप; एकि वपाणइ  
भाग्य, एकि वपाणइ सौभाग्य; एकि वपाणइ शरीरतणा शृंगार, एकि वपाणइ  
परिवार; एकि वपाणइ ऊहतणां कुल, एकि वपाणइ बिहुंतणां शील निर्मल;  
एकि वपाणइ लावण्य, एकि वपाणइ पुण्य। इसीपरि वपाणीतु स्थानकि आ-  
विउ, विश्वहुई आनंद ऊपजाविउ। राजासोमदेवि सविहुं राखहुई आवर्जन

तथवललोचन; जिसिउ बालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतसुं लिइ वाद ।  
 इसिउ अत्यंत शुभ, दीठउ पम २ । तउ राणीयइ दीठउ सीह । किसिउ  
 ते सीह । रूप्यपिंडपांडुर, अद्भुतप्रभांडवर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, तालूइ  
 लागी आरक्त जिह्वा जिसिउ हुइ अशोकप्रवाल । विस्तीर्णकेशरसदाशोभित-  
 स्कंध, वज्रसारशरीरबंध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ, कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविहं-  
 वितवदन, पराक्रमतणउं सदन; पुच्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि  
 भूमिकांति निहालतउ, मृषागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्ति-  
 तणउं क्षेत्र; अकलअगंजित, सबल अपराजित; अबीह, एवंविध दीठउ सीह ३ ।  
 तु दीठी देवी लक्ष्मी । ते किसी । हिमवंतपर्वततणइ शिपरि, महाप्रखरि; पद्म-  
 ब्रह्माहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चंद्रसमानवदन, कमलसमान-  
 लोचन, निर्जितसूर्यमंडल, देदीप्यमानकुंडल; उदारप्रलंबितहार, अद्भुतभृंगार;  
 दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिपिच्यमान, पगतलि चांपी रही नवनिधान;  
 एवंविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ४ । तदनंतर अशोक  
 चंपक नाग पुष्पाग प्रियंग पाडल सेवत्री जाइ जूही बेउल बउल श्रीदमणा  
 मरुआ मंदार मुचकंद केतकीप्रमुखचनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न ब्रमरभरभुज्य-  
 मानपरिमल एवं विध दीठउ मालायुग्म ५ । तउ दीठउ चंद्रमा । ते किसीउ चंद्र-  
 मा । रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी; रोहिणीरमण घामिनीजी-  
 वितेश्वर अमृतनयमूर्ति उज्ज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवंविध चंद्रमंडल ६ ।  
 तउ दीठउ श्रीसूर्य । किसिउ ते सूर्य । प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ  
 उदइ प्रासादतणां द्वार ऊघडइ, देवहुइ पूजा चडइ; पंथ सये बहइ, मुनीश्वर  
 धर्मकथा कहइ, लोक वादविशेष लहइ, मेघ मल्हारःगाइइ । माहि अनेक  
 शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल विहसइ, चक्रयाक  
 उल्हसइ; एवंविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ७ । तउ दीठउ ध्वज ।  
 किसिउ ते ध्वज । कृताह्लाद, कोई एक गरूड प्रासाद; प्रखरि, तेहतणइ शिपरि;  
 अखंड, सुवर्णमयदंड; तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश; भली, रत्नमय  
 पाटली; तिहां जिसी स्वर्गतउ ऊदाली, इसी फाली; निरुपम स्वरूप, तिहां सी-  
 हतणउं रूप । इसिउ घंटागणि गहगहतउ बाइ लहलहतु निर्मल नीरज, राणीठं  
 दीठउ ध्वज ८ । तउ दीठउ पूर्णकलस । किसिउ ते पूर्णकलस । सुवर्णवदित रत्न-  
 मय पडघोयां स्थापित, कंठि पुष्पमाला व्यापित; माहि अमृतप्रति घटजुगली-

विराजमान, आग्रफलप्रधान; मांगलिक लक्ष्मीप्रदानतण्डु विपट्ट अनलस, दीठउ पूर्णकलस ९। तउ दीठउं सरोवर, वृक्षनणउ परिकर; पालिउन विस्तर, देहरी-नउ समहर, पाणीनउ आकर। चउकी चउपंटी झलहलहं, परउ वाइ लहरि ऊच्छलहं, ऊपर जाण भरीयइं, पड कइ तरीयइ। अमृतोपम नीर, दीठइं ठरइ शरीर; सारस कुरल कपिजल कलहंस कलगलइं, तापतणा व्याप दलइं; राज-हंस रमइं, भ्रमर भमइं; चकोर चक्रवाक कूजइं, जलकेलिनां कोइ पूजइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आडि पंगीया तरइं, ब्राह्मण खान करइं; आस्तिक लोक नित्य सारइं, कश्मल निवारइ; संध्याविधि साधइं, अधमर्पणमंत्र आराधइं; धोतीयां धोयइं, कमंडल द्योयइं। सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतातणउ निवास। देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइ, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर पलकइं; तडि कीर्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ। वग थलइ जाइइ, मेघ मल्हार गाइइ। माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिह्वां क्रीडा कामइं। एवंविध उदार, वृत्ताकार; अत्यंतसार; महामनोहर; दीठउं पद्मवनम्बडमंडित सरोवर १०। तउ दीठउ समुद्र। किसिउ ते समुद्र! अनंतजल, अनंतकल्लोलकोटीसंकुल। माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र न्यक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणां कुल पडइ, एकि ऊपडइ। लहरि बाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणावर्तशंखतणां यूथ फिरइं, माहि अनेक प्रवहण सांघरइं। एकि पूरीइं, एकि नांगरीयइं, बाहण बाहणरहइं एकि मिलि-तां आफलइं। मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेघिइं पाणी पी-जइं। इसिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठहुइ बलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीयइ दीठउ समुद्र ११। तउ दीठउं विमान। किसिउं विमान। सुवर्णमपभित्ति, रत्नमणविच्छित्ति; प्रशस्थकलशि करी शोभमान, गगनल-क्ष्मीहुइं कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करइं, एकि श्रुति धर-इं; एकि गीत गापइं, एकि वादित्र वाइं; हीयइं हर्षे न साइं। अनेककुसुम-तणा प्रकर, चंद्रआतणा निकर; मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल बहकइं; ध्वजा लहलहइं, मन गहगहइं। एवंविध विबुधवधूजनक्रीडा-स्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान १२। तउ दीठउ रत्नरा-शि। किसिउ ते रत्नराशि। अनेक वज्र वैडूर्य चंद्रकांत जलकांत पुष्पराग प-द्मराग मरकत कर्कटन चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रमानाथ अशोक वीतशोक अप-



राजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ लोहिताक्षप्रमुखरत्नतण्ड राशि विर-  
चितविश्वप्रकाश देण्ड राणी मनतण्ड उल्लासि १३ । तउ दीठउ निर्धूम वैश्वा-  
नर । किसिउ ते वैश्वानर । कांतिभरकमनीय, प्रदक्षिणावर्त्तज्वाला करीय रम-  
णीय; मधुघृतघनपरिपिच्यमान, कूर्चरहितदेवतामुखसमान; धूमरहित, तेज-  
सहित; मांगलिक्यमूल, विश्वानुकूल; प्रवर, एवंविध दीठउ वैश्वानर ४१ ।

ए चतुर्दश स्वप्न देपी राणी जागी, निद्रा मागी, मनि विमासिया लागी ।  
मई तां ए चऊद सुमिणां दीठां, ईहतणां फल हुसिइ अत्यंतमोठां । तउ स्वा-  
मीकन्हइ जाइसु, निःसंदेह थाइसु । इसिउं विमासी कइ न वोलावी दासी; सखी  
महिली सवि पाली, राणी स्वयमेय चाली । हंसगति हरपिइं गहगहती, जिहां  
राजा तिहां पहुती जयविजय करती । रायहुइं निद्रा टाली राजातण्ड आदेसि  
भद्रासनि वइठी । स्वप्नचार्ता सांभली राजा फलु कहिउं; राज्ञी हृदयि ग्रहिउं ।  
तिवार पूठिइं आपणइ स्वस्थानकि आवी, पल्यंक वइसी सखीसहित धर्मजाग-  
रिका नीपजावी । प्रभाति नरेश्वरि सत्तामाहि स्थपपाठकपाहिइं विचार कहा-  
विय, दान देउ निमित्तीवर्ष अदरिद्र नीपजाविय । संपूर्ण दिचस अतिग्रमे हुंते  
परमेश्वरतण्ड हूउ अवतार, देवता करइं जयजयकार ।

इति श्रीजन्मलान्ठे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे  
वाग्विलासे षष्ठोऽध्यायः ।

### पञ्चमोऽध्यायः

तत्काल मनतणी रली, छप्पन्न दिफुमारिका मिली । ते कयण कयण । भोगं-  
करा १ भोगवती २ सुभोगा ३ भोगमालिनी ४ तोपधारा ५ विचित्रा ६ पुष्प-  
माला ७ आनंदिता ८ मेघंकरा ९ मेघवती १० सुमेधा ११ मेघमालिनी १२  
सुवत्सा १३ वत्समित्रा १४ वारिपेणा १५ वलाहका १६ नंदोत्तरा १७ नंदा  
१८ आनंदा १९ नंदवर्द्धिनी २० विजया २१ वैजयन्ती २२ जयन्ती २३ अप-  
राजिता २४ समाहारा २५ सुप्रदत्ता २६ सुप्रबुद्धा २७ यज्ञोपरा २८ लक्ष्मी-  
वती २९ शेषवती ३० चित्रगुप्ता ३१ वसुंधरा ३२ इलादेवी ३३ सुरादेवी ३४  
पृथ्वी ३५ पद्मावती ३६ एकनाशा ३७ नवमिक्ता ३८ भद्रा ३९ सीता ४०  
अलंगुसा ४१ मितकेशा ४२ पुंढरीका ४३ चामुणी ४४ हासा ४५ सत्यप्रभा ४६

श्री ४७ ही ४८ सुतारा ४९ चित्रकनका ५० चित्रा ५१ सौत्रामणी ५२ रूप  
 ५३ रूपांसिका ५४ सुरूपा ५५ रूपवती ५६ एवं अधोलोकनिवासिनी ८ ऊर्ध्व-  
 लोकनिवासिनी ८ रुचकपर्वतचतुर्दिशिनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, विदिसिनिवा-  
 सिनी ४ मध्यरुचकनिवासिनी ४ ईणिपरि छप्पन्नदिक्कुमारिका आवी । तेहे  
 स्रतिकर्मतणी समग्ररीति नोंपजावी । तदनंतर सौधर्मादिकदेवलोकइंद्ररहई  
 आसनप्रकंप नीपनउ । पहिलउं इंद्रहुई कोप ऊपनउ । वज्र ऊलालिउं, ज्ञानदृष्टि  
 निहालिउं । जाणिउं परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार । इंद्र मनि  
 गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थइ मस्तकि हाथ जोडी शक्र-  
 स्तव कहिउ । इंद्रि आसणि बइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्काल  
 आविउ । इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउं ।  
 इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालंकि विमाने चडी पंचरूपि परमेश्वर लेउं मेरुपर्व-  
 ति आविउ । चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलकलिया । आठ सहस्र  
 चउसठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं । तदनंतर अंग-  
 स्नान करी विलेपन १ यस्त्रयुगल ३ वासपूजा ४ पुष्पारोहण ५ माल्यारोहण  
 ६ वर्णारोहण ७ चूर्णारोहण ८ घ्वजारोहण ९ आभरणारोहण १० पुष्पग्रह  
 ११ पुष्पप्रकर १२ अष्टमंगलकरण १३ धूपोत्क्षेप १४ गीत १५ मृत्य १६  
 धादित्र १७ सत्तरभेदपूजातणउं करणीय सीधुं ।

तीणि अवसरि गगन गाजियां, इगुणपंचासभेदि वाजिघ्न वाजियां । क-  
 वणकवणपरिई । उद्धर्मताणं शंखाणं संगीषाणं खरसुहीयाणं परिपरियाणं  
 अहम्मंताणं पणवाणं पटहाणं अप्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जं-  
 ताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं सुखाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं  
 घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पं-  
 ताणं दुंदुभीणं चिपाणं धाइज्जंताणं करडाणं डिडिमकाणं उच्चालिज्जंताणं त-  
 लाणं तोलाणं कंसतालाणं घटिज्जंताणं रिक्किसिक्काणं सुंसरिकाणं दुंदुभीणं फू-  
 मिज्जंताणं थंसाणं वेणूणं एवमाईणं एगूणवज्राणं पयाइज्जंताणं । ईणि युक्तिई,  
 भावभक्तिई, आत्मभक्तिई, परमेश्वरहुई स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपिई  
 इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं । वत्रीस वत्रीस स्थाल सिंहासनादिक  
 वत्रीसकोटि सुवर्णरत्नतणी वृष्टि करी, स्वामीतणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी  
 अमृत संनारी, वज्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेलही इंद्र स्वस्थानकि पट्टु ।

दिव प्रभाति दासीमहिलीए रास बधाविउ, स्वामी तम्हारे पुत्र आविउ । राजा बधामणी दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पढति कीधी । अलंकरिउ शोभार, श्रृंगारियां प्रतोलीद्वार । मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी शोभा लई । ध्वजपताका लहकई, पुष्पपरिमल बहकई । नाचई पात्र, राजाम-  
यनि आवई अक्षतपात्र । सोमाई भणतां आवई छात्र, लोक अलंकरई आभर-  
णि गात्र, उत्सव करिवा एहइ ज बात । तीणि बेलां न ऊऊई कोरण, बांधी-  
पई तोरण; बांधीयई बंदरवाल, उत्सव विशाल; गुलघीउ लाहीयई, मन ऊमा-  
हीयई । ईणि युक्ति जन्ममहोत्सव हुआ । नामगरणतणइ अवसरि माताहुई  
बोहलई धर्म बुद्धि हुई । एहमणी धर्म इसिउं नाम दीधउ, परमेश्वरि रमलि  
नरतां बालपणुं लीयउं, यौवनवयि राजकन्यातणउ पाणिग्रहण कीधउं । अबई  
लाप वरस कुमारपणउं पाली पंचासवरस राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्ति-  
युक्त हुउ स्वामी । नवविधलोकांतिकदेवतणी चीनतीलगइ सांवत्सरिकदान  
दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं । वि वरस छत्रस्थ काल अति  
श्री, कैवललक्ष्मी पामी, विहारक्रम करई, भव्यलोक तारई ।

दिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरई साढावारलाय  
सुवर्णदान देई समस्तपरिवारसाथिई लेई परमेश्वर नमस्करिवा सांचरिया, स-  
कललोक ऊलडि धरिया । पृथ्वीरहई अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण ।  
किसिउं ते । समम देव आवई, समोसरण नीपजावई । तां पहिलुं वायुकुमारदे-  
वतानिमित्त संवर्त्तक वायु विस्तरई, ते तृण काष्ठ कचवर हरई, आकासि मेघ-  
पदल पसरई, गंधोदकि वृष्टि करई, फूलपगर भरई । गरुडउं रत्नमय पीठ  
वापी ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम वरसई, चिटुं दिसि दिव्य परिमल  
घिलसई । रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिभि प्रकार रुपि करी उदार, अनेक  
प्रकार, मणिरत्नसुवर्णमय कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार । तिलां  
त्रिहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तंभ, ऊपरि मणिमय कुंभ, इंद्रधनुपमानमूर्ण,  
रत्नमय तोरण, प्रत्यक्ष जिसी मांगलिक्यनी पालि, इसी बंदरवालि । अनेकि  
विचित्र, विशाल छत्र, उदारस्वरूप, कनकमय शूललीतणां रूप; जेहे लिपित  
सिंह शार्दूल गज, इत्यां निर्मल नोरज, पंचवर्ण ध्वज । इस्या समोसरणविचा-  
लि, मणिप्रदपीठि विशालि; सकलमांगलिक्यमुत्प, गरुड अशोकवृक्ष; जि-  
मिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष, इसिउं चारगुण चैत्यवृक्ष । तेजतणी छायां रत्नमय

सिंहासणं, जगन्नाथहुइं वइसण । तेजिइं जोई सकीयइ नीठ, इसिउं रत्नमय  
पादपीठ; जिस्पां विकसित सहस्रपत्र, तिस्यां पनर छत्रातिछत्र; अमर, देवहुइं  
ढालइं चमर; अधरीकृतआदित्यमंडल, तीर्थकरलक्ष्मीकर्णकुंडल; पृष्ठइं झलकइं  
भामंडल । जेहतणइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्मचक्र  
झलहलइं; दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोष गगनांगणि गाजइं, परतीर्थिक-  
तणउ भडवाउ भाजइ । सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रध्वज लहलहइं, धूपतणा परिमल  
महमइइं, धादित्रतणी कोडि हुइहुइइं । मनुष्यतणी कोडि आवइं, मनि रहरहइ ।  
ईणि इसिइ समोसरणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्णकमलि पाय स्थाप-  
तउ, पूछिया ऊतर आपतु; प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलोकहुइं  
पाप मूकावतउ, पूर्वदिसितणइ द्वारि पइसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि वइसइ  
चतुर्मुख होइ, भविकसंमुख जोई । संपूरी, वारपरिपदपूरी; मिथ्यात्वमातमूरी,  
पापपटलचूरी, सर्वसत्त्वसाधारिणी, अमृतानुकारिणी, मधुरवाणी; लाभ जाणी;  
खलाण करइ, धर्म मार्ग विस्तरइ ।

हिं बड नरेश्वर मनि गहगहना, समोसरणिमाहि पहुता । श्रीधर्मनाथ-  
हुइं प्रदक्षिणा देउ, आगलि वइठा नरेश्वर बेउ । तिवारं राजापृथ्वीचंद्रि आप-  
णइं विशेषवंतइं रूपि लावण्ये करी देवदानयइंद्रहुइं आश्चर्य कीयुं, श्रीधर्मनाथि  
तीर्थकरि उपदेश दीधउ । कियु ते ।

सदंशजन्म गृहिणी स्पृहणीयशीला लीलायितं वपुषि पौरुषभूषणा श्रीः ।

पुत्राः पवित्रचरिताः सुहृदोऽपदोपाः स्युर्धर्मतः खलु फलानि पचेलिमानि ॥ १ ॥

अहो भव्य जीव ए इस्पां धर्मेनां फल जाणिवां । कवण कवण । पहिलुं  
तां उत्तिमकुलि अवतार, ए धर्मतणां फल सार । जइ जीव नीचकुलि अवत-  
रइ, तु किसिउ पुण्य करइ । एह विश्वमाहि एक माछीतणां कुल, भीलतणां  
कुल, कोलीतणां कुल । ईणिपरि थोहरी आहेडी बागुरी पादकी मद्यप घांची  
चोर वेइया बावरी मेय डुंव पाणपेरणीघांनणां पापतणां कुल जाणिवां । जीव  
एहे कुले अवतरी पाप करी नरकि जाइ, लायु मनुष्यजन्म निरर्थक थाइ ।  
पुणि जीवहुइं उत्तिम कुल दुर्लभ । कुण तेउ उत्तम कुल ।

पंसाणं जिणवंसो सन्वकुलाणं च सावयकुलाइं ।

मिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सन्वसुक्खाणं ॥ २ ॥

वंश ते प्रशंसि जेहे जिपातणउ अवतार, वंशतणउ कवण विचार ।  
 इक्ष्वाकुवंश सूर्यवंश चंदिल चाहूआण सोलंकीवंश वालावंश वावेला वाघरो-  
 लावंश गुलवंश गुलवरवंश सोमदा भाटीया सीदा वांदा दाहिणमा कच्छवाह  
 कणवाहा हूणवंश हरीयड शकट सिलार धान्यपालवंश अनंगपाल राजपाल  
 दधिपाल कलाप परमार मोरीवंश यादव सैधव निकुंभ गुहिलउत्त डोडीवंश  
 डोडीपाणवंश मंकूआणा खड्गवंश सोलणवंश बोढाणवंश दहीयावंश प्रमुख  
 बहीयावंश प्रमुखवंश जाणिवा । अनइ ब्राह्मणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष  
 जाणिवा । जिम कलिकाल प्रवर्तमानि चउरासी ज्ञाति बोलीयई । किसी ते  
 ज्ञाति । श्रीश्रीमाली उत्तवाल वावेरवाल डोंडू पुष्करवाल डीसावाल मेडत-  
 वाल भाभू सूरणा छत्रवाल दोहिल सोनी पडवड पंडेरवाल पोरुआड गूजर  
 मोड नागर जालहरा पडाइता कपोल जांबू वायडा बाव दसउरा करहीया  
 नागव्रहा मेवाडा भटेउरा कथरा नरसिंहउरा हारल पंचमवंश सिरपंडला  
 कमोह रोटकी अमरवाल जिणाणी घांभ घांघ पाल्हाउत उचित वगडू अहिछ-  
 ब्रवाल श्रीगड्ड बाल्मीकि टाकी तेलटा तिसउरा अठवग्री लाडीसाखा बघन-  
 उरा सुहडवाल वीधू पद्मावती नीमा जेहराणा माथुर धाकड पल्लीवाल हरसउरा  
 चित्रडडा गोला गहिवरिया लोहाणा भाटीया नागउरा आणंदउरा सतला कड-  
 कोलापुरी रायकवाल पेसीया पेरुया गोमित्री नारायणा टींदू गजडडा गोपलआ  
 अजयमेरा कंडोलीया कायत्य सगडडा सीहउरा जेसवाल नादेशा जाइलवाल-  
 चावेल । एणि सविहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वपाणीइ सुश्रावककुल । जीणि  
 सुश्रावकतणइ कुल जीववधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ; मिथ्यात्व परिहरी,  
 यइ, सम्पत्त्व अंगीकरीयइ; पाणीं भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ;  
 अथाणूं न रापीइ, अणंतकाई न चापीइ; चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ-  
 सुतीर्थि वित्त वावी लाम लीजइ; आलोअण लेई पाप छोईइ, परिग्रहप्रमाणि  
 पुण्यवंत होईइ; उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार  
 भरीइ; वावीस अमल बचोस अणंत काय टालीयइ, आठमि चऊदसि पुनिम  
 अमावास चउमासी पजूसण पर्व पालीयइ, पुण्यमार्ग उज्जुआलीयइ । इमु आ-  
 यकतणउ कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल । उत्तिमकुलि लावइ  
 हुंतइ गृहत्परहइ जय हुइ । कुकलत्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग ।

किसी ते कुकलत्र । जे चालती फउयछि, साची अलछि; आत्मकुटुंबमं-  
 जकि, फरित्तरंजकि; कपटविपइ पटिष्ट, अतिहिंअनिष्ट; बोलति छउड ऊमार  
 इ, रीसइं छोरु मारइ; जीमइं जव छोलइ, अलबिइं असंयद बोलइं, वगाईं करती

गोददृ गिलइ, घरि विघोड करी बाहिरि मिलइ, बोलावी विसइ हाथ ऊठलइ;  
 कृकृती सापिणी, चालती चीत्रिणी; पुण्यद्वारतणी आगल, नगरतणी भागल ।  
 घणूं किसिउं करीयइ । जिसी मिरीतणी उगादि, जिसिउं चालतउं पलेवणउं;  
 जिसी दावन्वरतणी बहिन, इसी संतापकारि तु संपजइ नारी, जउ जीव पाप-  
 कर्मि भारी । अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पोतइ हुइ पुण्यपवित्र । किसी ते ।  
 सुशोल सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विनेकवंती पुत्रवंती बोलवती  
 सुजाणि मधुरवाणि देवगुननइ विपइ भक्त, पुण्यतणइ विपइ आसक्त; सहजि  
 सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोतइ पुण्य । अनइ जं शरीरि संपजइ  
 लीलावंनपणूं, तं पुण्यतणउं प्रमाण । जं मधुरगति चालइ, पापनुद्धि पालइ; सहजि  
 विचक्षण, शरीरि वघ्रीसलक्षण; अलिकुलकजलइयामल केशपाश, अष्टमीचंद्र-  
 समान भालस्थल, कामदेवकोदंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आद-  
 र्शनलसमान कपोलयुगल; भोक्तिकथेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल;  
 प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अगंड, तु संपजइ जइ पोतइ प्रचुरपुण्यपिंड ।  
 अनइ जे द्रव्य जगजिवातणइ कारणि एकि लोक देवदेवता आराधइ, मंत्र-  
 पिचा सधरपणइ साधइ; राजसभा युद्धिवन भणी बडसइ, रणक्षेत्रि पहिलां  
 पइसइ; व्यापारकला बेलवइ, धूर्तपणइं भलारइं भोलवइं; जलमार्ग हरलमार्ग  
 आदरि आक्रमइं, भूमंडलि भूजागलि भमइं; जोगोषुठिइं लोभि लुनधा लागइं,  
 एकि मोटा ठाकुर मागइं; एकि पाला पुलता पंथि चालइं, एकि हा देव  
 भणी घडरागरि घाउ घालइं; एकि हल पेटइं, उलग करइं लागा ठाकुरकेडइं;  
 रससारणि रसरूपिका पढइं, एकि कलकलतइं समुद्रि चउइं; एकि त्रिभिंसइं  
 माठि मियाण बटुरइं, पिरायां कवित्य धारइं; कष्ट सइं विपुल, पुणि लक्ष्मी  
 तु पामइं जइ पोतइ हुइ पुण्य परिघल; घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रचाल, प्रधान  
 सुक्ताफल, गजरथतुरंगमादिक जाणिवा लक्ष्मीनणा विलास सकल ।

जिय जं संपजइ सत्पुत्र, एक पुण्यतणउं चरित्र । एकउं तणइ एकि कु-  
 पुत्र हुइ जे बालपणि पालोइं लालोइं पणि जेनलइं यौवनभरि जाइं, तेनलइं  
 माशेननामग थाइं; कृत्य अकृत्य न गिणइं, बघांनणां बचन निहणइं; मायो-  
 प्रमाणां नीटुर बोल भणइं, अटंरारि हणणइं; लक्ष्मीमदि कुपात्रि घरमइं,  
 पुण्यतणि चिहमइं, पिराई भूमि ग्रमइं; चाहए बचनि उल्लमइं, रुटी घात  
 पटनां मानां घमइं; स्थाननी परि भमइं, अपरहुइं हमइं; पापकरी उम-  
 राइं, धर्मगर्वा लिपइ न पसइं; इत्यां जं पुत्र अभक्त अजाण, पापपणूं

प्रमाण । अनइ जं पुत्र विवेकीया विचारवंत, सहजिइ संत, सौभाग्यवंत, गुरु-  
आंप्रति भक्तिवंत गुणवंत; देवगुरुधर्मतणइ विपइ तत्पर, सुपुत्र पानीयइ जइ  
पोतइ पुण्यतणउ भर ।

हिव तु पानीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम । एक  
जीव सहजइ दुर्जनप्रवृत्ति, पापतणइ विपइ मोटी आकृति; मुहि मीठउ, चित्ति  
विणठउ; पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोई; उपगारि केतलइ न लीजइ,  
परप्रशंसा मनमाहि पीजइ; आपणपउं घणुं वेपइ, अवर नहीं किसिइ लेखइ;  
सजन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ; राउलइ वानइ, देवगुरु अपमानई; मूर्ति-  
वंत अधर्म, दोलइ पिराया मर्म । जिसिउं विषवृक्षनउं वन, इसिउ जाणिघउं  
दुर्जन । एकि जीव, सहजिइ उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव; उपगार करइ,  
परमर्म हीयइ धरइ; परदोष न प्रकासइ, असत्य न दोलइ हासइ; उन्मार्गि न  
चालइ, पापवात्तां टालइ, गुरुरूपदेश झालइ, धर्मतउ न झालइ; नवे क्षेत्रे वेवइ धन,  
जिसिउ वाचनुं चंदनु; इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहोयइ सज्जन । संपजइ  
सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउ प्रमाण । इस्यां धर्मफल देपी, प्रमाद ऊवेपी;  
आलस परिहरी, आदर करी; पुण्यतणइ विपइ भावनासहित लाभ लेवउ ।  
जेह कारणि इसिउं कहोइ । जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय  
शोभइ हारि; जिम गृह शोभइ उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ केशप्रा-  
ग्भारि; जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलभृंगारि;  
सरोवरि शोभइ कमलि, पुष्प शोभइ परिमलि; घुप शोभइ निर्मलि नेत्रयुगलि,  
रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ कूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी  
शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभायना, तिम धर्म शोभइ भावना ।  
एह कारणि भावनासहित पुण्यवंति लाभ लेवउ । जिसिइ पुण्यप्रभावि सक-  
लश्रेयफलयाण संपजइ ।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी रुठी, परमेश्वरप्रतिइ विहुं नरेश्वरि  
धीनती कीधी बली । हे जगन्नाथ । संदेह भांजिवानइ ऊभउ हाथ; तुझ टाली  
अपरि संदेह न भाजइ, संदेहभंजन विरुद तूरइ छजइ । जेहि कारणि  
इसिउं कहोइ । समुद्रि उलंघोयइ भारंइ न मसइ, गजेंद्र विडारीयइ सीहि न  
ससइ; विपघरतणां विप जोरविपइ गुरुइ न कूकइ, वृक्षसिहरतणां फल  
लीजइ तडवइ न टूकइ; संग्रामभूमिइ भिडोयइ रावति न दयामणइ, भंडा-  
रीतणा भार झालियइ अभीष्टि न अलपामणइ; पर्वततणां टोल ताणोयइ

नदीतण्डू पुरि न बाहलइं, रायतण्डू मनि रंगि रहावीयइं मधुस्वरि न पाहलइं;  
 समुद्रि सेतुबंध बांधीइं पर्वते न काकरइं; दृढगढतणी पोलि भांजियइं गजेंद्रि  
 न वाकरइं, याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि लक्ष्मीवंति न आजन्मदुस्थि;  
 सकलसंदेह भांजीइं कैवलीए न छद्मस्थि । तेह कारणि तउं हे स्वामित् अम्हारा  
 संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि; एक ऊपनउ अटवीठामि,  
 एक संग्रामि; एक स्वयंवरि, ए सवे संदेह अपहरि । इसी चीनती सांभली  
 जगन्नाथ कहइ छइ अहो नरेश्वर सांभलउ । हिय कहीइ छइ पूर्वभव, जिसिउ  
 हूउं अनुभव । ईणइ क्षेत्रि भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रवर;  
 प्रौढ धवलगृह, लोक पुण्यविषह सस्पृह; जीणि नगरि महाधर मंडलीक सेल-  
 हत्थ बरवीर राउत डवइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार छुरीकार नलीकार  
 कुंभकार सांगडीया सावलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारीप्रभृति राज-  
 लोक बसइ, सर्वज्ञभवन देपी मन उल्लसइ । जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर,  
 महानमोहर, जिहां राज्य पालइं द्रोणनामा नरेश्वर । तेहतणइ सागर अनइ  
 पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, वि पुत्र । ते वेउ नर्मदानदीमाहि बेडी चडी  
 मत्स्य विणासि याप्रवर्त्तिया । तिसिइ अवसरि मत्स्य एक साम्हउ जोई तीहप्र  
 तिहं बोलिउ । रे बुराचारउ म करउ पाप, नरकि इस्यां हुसिइ संताप, नहीं  
 छूटउ करताइ विलाप; जइ न मानउ तउ वृछउ आपणउ बाप । ए बात सांभली  
 वेउ कुमर भयभ्रांत हुआ । तिसिइ नदीनइ कंठि एक बीठउ मुनीश्वर । तेहे  
 वेडीतउ ऊतरी नमस्करिउ । वच्छउ तुम्हे श्वारा पाँत्र, हूं पालउं चारित्र; तुम्हे  
 करउ अक्षत्र । तीणइ सोनइं किसिउं कीजइं जीणइं ब्रूदइं कान, तीणइं  
 उपाध्यायि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान, तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं  
 जीणइं पामीइं पगि पगि अपमान; तीणइं घमिं किसिउं कीजइं जीणइं घाघइं  
 मिथ्यात्यवाद, तीणइं यथरइं किसिउं कीजइं जीणि पाछइं ऊपजइं विषवाद,  
 तीणि मित्रि किसिउं कीजइं जीणिइं थाइं प्रमाद; तीणिइं घरि किसिउं  
 कीजइं जेहमाहि फूफूइ साप, तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु नितु  
 संताप, तीणइं रामनिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप । वत्स मुअ  
 भक्त व्यंनरि, मत्स्यमुनि अवतरी; तुम्हे जगाडिया, पुण्यमामिं लगाडिया ।  
 हिय पाप परिहरउ, पुण्य करउ । तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यनणी परठ कही, तेहे  
 चिटुं ग्रही । आच्या आपणइं घरि, करइं पुण्य नवनवीपरि; दिहं दान, घरइं  
 अरिहंतनणउं ध्यान; करइं सुगुरुभक्ति, जाणइं विवेकयुक्ति; करावइं प्रासाद,



पञ्चपदं सञ्चूकारि साद; पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नवतत्त्व; करइ सामायक  
सार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, वे कुमार इसीपरि भरइ पुण्यभंडार ।  
अन्यदा प्रस्ताधि द्रोणि राजां तीह विहुंहुइ राज्य दीधउं, आपणपइ राजी-  
सरित चारित्र लीधउं । निर्मल चारित्र पाली भावविशेषि पातालि वलीन्द्र  
अवतरिउ, राणीइ इंद्राणि धईनइ तेह जि अणसरिउ । हिव पूरणनणइ पद्मश्री  
इसिइ नामि हुई कलत्र, जे महासचारित्र । ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी  
पहुता देवलोकि, सोख्य भोगवो अवतरिया मनुष्यलोकि । सगरतणउ जीव  
हउ तु सोमदेव नरेन्द्र, पूरणनउ जीव हउ पृथ्वीचंद्र । पद्मश्री ईहां रत्नमंजरी  
अवतरी । पूर्वतणउं धर्म फलिउ, सर्वसंपोग मिलिउ ।

विहुं नरेश्वरि ईणिपरि उपदेश सांभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थरुवि वली  
कहिउं । हिव सांभलउ जे पूछिया संदेह, तेरनु कीजइ छेह । जिसिइ समइ रत्न-  
मंजरी सरोवरतणी पालिइं पितातणइ उत्संगि वडठी, कुणरहइं देवातणी  
चिंता पइठी; तिसिइ अवसरि, बलीद्रदानवेश्वरि; जानिप्रमाणि, पूर्व जाणी,  
पुत्रपृथ्वीचंद्रनिमित्त राखिवा रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणउ कन्हइ  
आणी । छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी । राजा पृथ्वीचंद्र-  
हुइं स्वप्न दीधउं, अदबो अनइ संग्रामांगणि महासाक्षिध्व कीधउं । अनइ स्वप्न-  
वरि जेतलइ धूमकेतु राजां वेतालांधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रधि घाती,  
तेतलइं बलीद्रतणी इंद्राणी ते मेलिउ निपाती । छ प्रहर पातालि रापी, प्रभाति  
प्रकट करी दापी; उहे दिपाडिउ पूर्वभयस्नेह, एतलइं टलिपां सवे संदेह ।  
अहो पृथ्वीचंद्र ताहकं विशेषयंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य । जेह कारणि  
गृहस्थेपि त्रायिपइं चउतां ईणइ जि भवि ऊपजिसिइ वैरलजान, एह भणी  
ए भाग्य प्रधान । सोमदेवहुइं श्रीजइ भवि शुक्ति, इसी छइ पुक्ति । ए वार्ता  
मनि घरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; वे नरेश्वर सपरिचारि  
स्वस्मानकि आन्या, परमेश्वरि विहारप्रम नीपजाग्या ।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउराउ मोरुलावी रत्नमंजरीसहित आपणउ  
पुरिठाणपुरि पाटणि आप्या, प्रधानि प्रवेश मण्डोत्सव कराग्या । मरुत लोक  
हाट पाटण काज काम परिहरी आभरण टूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले  
फाटते, घाटइं विणसते; घसमसाटि जोड्या घाटउ राजा मण्डोत्सवसहित  
आपणर आवासि आइउ । रत्नमंजरी पट्टाणी स्थापी, कीर्तिइं जगन्नपी  
प्यापी । राज्यसौभाग्य भोगयतां अवसरि रत्नमंजरी महीवर इमिइं नामिइं

पुत्र जन्मिउ । ते सयौगसुंदर, रूपिहं पुरंदर विवेकवंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुष-  
 सिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ । राजापृथ्वीचंद्ररहइं राज्य करतां नव-  
 लाप नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां । तिसिइ अवसारि  
 कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहठाणपुरि पाटणि-  
 ऊपरि चडी आचिउ, लोकरहइं आतंक ऊपजाविउ । तत्काल चरपुरुषि पृथ्वी-  
 चंद्ररहइं जणाविउ । ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु  
 सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ; भंभा बाजी, गगनांगण रहिउ गाजी ।  
 राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं अनि विमासण पडिउ । रे आत्मन्  
 हुं बाध्यवइरी पृठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं । कुण ए बुद्धि, किसी  
 शुद्धि, जीतउ जोईयइ कोष, जेहतउ चालइ विरोध; जीतु जोईयइ मान, जेह—  
 हुइं पर्यतनउं उपमान; जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया;  
 जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समपक्षोभ; जीतु जोईयइ काम, जेहतु  
 फेडइं पुण्यतणउं ठाम । ईणिपरि नरेश्वरहुइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान,  
 तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान । आढ्या देव, करइं सेव; वइरी समिउ, आवी  
 नमिउ; बाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र । देवे वेप दीधउ, राजक्रपि लीधउ;  
 हंसजमलि, बइठउ सुवर्णकमलि; दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेश । एके  
 आदरिउं सम्पत्त्व, एके श्रावकत्व; एके संयम, एके नियम । ईणिपरि लोक-  
 हुइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य  
 लीवउं, तेहतणइ पुत्रि महीधरि पहुंठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं ।  
 पृथ्वीचंद्रनरेश्वरतणउं चरित्र सांभली, मनतणी रली, बली; बली, विवेकवंति  
 पुण्यवंत लाभ लेवउ । जिसिइ. पुण्यतणा प्रभावनउ सकल श्रीसंगहुइं श्रेय-  
 कल्याण ऋद्धिबुद्धिपरंपरा संपजइं । ॥१॥

श्रीमदञ्जलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसुरिणा ।

पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम् ॥

संवत् १४७८ वर्षे श्रावणसुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पवित्रं पुरुषपत्तने निर्मितं समर्थितम् ।

यावन्मेरुर्षई यावत् यावच्छन्द्रदिवाकरौ ।

वाच्यमानो जनैस्तावद्ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात् ॥

इति श्रीञ्जलगच्छे श्रीमाणिक्यमुन्दरसूरिभ्यो श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे बाधिलसे पञ्चम उद्घासः ।

# खरतरपट्टावलीषट्पदानि



जिण दिट्ठइ आनंदु चडइ अइरहसु चउगुण ।  
 जिण दिट्ठइ फडहडइ पाउ तणु निम्मलु हुइ पुणु ।  
 जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ट पुव्वुक्किउ नासइ ।  
 जिण दिट्ठइ हुइ रिद्धि दूरि दालिहु पणासइ ।  
 जिण दिट्ठइ सुइ धम्ममइ अबुहहु कांइ उइक्खहहु ।  
 पहु नवफणमंडिउ पासजिणु अजयमेरि कि न पिक्खहहु ॥ १ ॥  
 मयण म करि घरि धणुहु बाण पुणि पंचम पयडहि ।  
 रुयिण पिम्मपयाचि बंभहरिहरु मन विणइहि ।  
 रुउ पिम्मु ता बाण मयण लायरिसहि धणहरु ।  
 नवफणमंडिउसीस जाव न हु पिक्खिउ जिणवरु ।  
 जइ पडिहसि पासजिणिंदवसि नाणवंत निम्मलयरण ।  
 तसु धणुहरु बाण न रूप नहि न भुपप्पिम्मु हुइ हइमयण ॥ २ ॥  
 नवफणिपासजिणिंदु गढिउ अगल्लि जु दिट्ठउ ।  
 अजयमेरि संभरिनरिंदु ता नियमनि तुट्ठउ ।  
 कंचणामउ अह कलसु सिहरि साणउ रत्तावियउ ।  
 जणु सुतरणि तउ तवइ तिब्बु आयासिसउन्नउ ।  
 जा बुज्जुमिसिण ढक्कारविण कर उज्झवि फरहरइ धर ।  
 जिणदत्तसूरि धर धवलि जसि ता पसिद्धि सुरभयणि कय ॥ ३ ॥  
 देवसूरिपट्टु नेमिचंदु वट्टगुणिहि पसिद्धउ ।  
 उज्जोयणु तह चट्टमाणु खरतरघर लब्धउ ।  
 सुगुरु जिणेसरसूरि नियमि जिणचंदु सुसंजमि ।  
 अभयदेव सव्वंगु नाणि जिणवल्लह आगमि ।  
 जिणदत्तसूरि ठिउ पट्टि तहि जिण उजोइउ जिणचलणु ।  
 सावइहि परिक्खवि परिवरिउ मुल्लि महग्घउ जिम रयणु ॥ ४ ॥  
 धणुहर धयवड धरिय सार सिंगार सुसज्जिय ।  
 सोहनिगण गुडगुडिय पंच वर पडिम निमज्जिय ।  
 तियड अ तेअ अगलिय पिम्मपडिकारनिरुत्तिय ।  
 रहरणरहसुचलिय गरुयमाणिण मइ अन्निय ।  
 करि कडपड मुणिमहिवइहि रहिअ रुअ संपुन्नमय ।  
 निणदत्तसूरिसीह भयण मयणरुटिघड विहडि गय ॥ ५ ॥  
 तथनलप्फभोसणह धम्मधीरिमसुविसालह ।

संजमसिरभासुरह दुसहवयदाढकरालह ।  
 नाणनयणदारुणह नियमनिसनहरसमिद्धह ।  
 कम्मकोवणिदुरह विमलपुच्छपसिद्धह ।  
 उपसमणउपरधरदुच्चिसह गुणगुंजारचजीहह ।  
 जिणदत्तसुरि अणुसरह पय पापकरडिघडसीहह ॥ ६ ॥  
 जरजलवहलरउह लोहलहरिहिं गज्जंतउ ।  
 मोहमच्छउच्छल्लिउ कोवकल्लोल वहंतउ ।  
 मयमपरिहि परिवरिउ घंचवहुवेलदुसंचरु ।  
 गंधगरुपगंभीरु असुहजावत्तमयंकरु ।  
 संसारसमुहु जु एरिसउ जसु पुणु पिक्खिअवि सुदरियइ ।  
 जिणदत्तसुरिउवणसु सुणि त परतरंडइ सुतरियइ ॥ ७ ॥  
 सावय किवि कोयलिय केवि खरहरिय पसिद्धिय ।  
 ठाह ठाह लक्खियहि मूढ नियवित्तिविरुद्धिय ।  
 दरहि न किंपि परत्त वेवि सुपरुप्पर जुज्झहि ।  
 सुगुरु कुगुरु मणि मुणिवि न किवि पटंतरु वुज्झहि ।  
 जिणदत्तसुरि जिन नमहि पयपउम सच्चु नियमणि वहहि ।  
 संसारउयहि दुत्तरि पडिय जि न हु तरंडइ यडि तरहि ॥ ८ ॥  
 तवसंजमसयनियमि धम्मकम्मिण वावरियउ ।  
 लोहकोहमयमोह तह व सप्पिहि परिहरियउ ।  
 विसमछंदलक्खणिण सत्थअत्थत्थविसालह ।  
 जिणवल्लहगुरुभत्तिवंतु पयडउ कलिकालह ।  
 अग्निहिवि गुणिहि संपुन्नतणु दीणहुहियउद्धरणु धर ।  
 जिणदत्तसुरि पर पल्ह भणु तत्तवंत सलहियइ धर ॥ ९ ॥  
 वक्खवाणियइ परमतत्तु जिण पाउ पणासइ ।  
 आराहियइ त धीरनाह कइपल्हु पयासइ ।  
 धम्मु त दयसंजुत्तु जेण वरगइ पाविज्जइ ।  
 चाउ त अणखंडियउ जु बंदिण सलहिज्जइ ।  
 जइ ठाह त उत्तिममुणिवरह पवरवसहिहो चउर नर ।

तिम सुगुरुसिरोमणि सुरिघर खरतरसिरिजिणदत्त घर ॥ १० ॥

इति श्रीपद्मवलीपदपदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्वयुगाद्यपक्षे ११ तिथौ श्रीमद्वारानृगर्थ  
 श्रीसरतरगच्छे विविगार्थप्रकाशिवसतिनासिस्रीजिणदत्तसूरीणां  
 शिष्येण जिनरक्षितसाधुना लिखितानि ।

## APPENDIX 1

### श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रावर्णनम्

अयं ध्रुवक्षीरार्णवनवसुधासन्निभचिता-

नुपाकण्ठीकणानुपदमुपदेशानिति गुरोः ।

समस्तध्वस्तेना जनितजिनयात्रापरिकरो

ऽकरोत्सुखं प्रास्थानिकविधिमधीशो मतिमताम् ॥ १ ॥

श्लाघ्योऽतिसहस्रसहितः स हितः प्रजानां श्रीमानथ प्रथमतीर्थकृदेकचित्ताः ।

सम्भाषणाद्भुतसुधाभयचाश्चचार याचालवारिदपथो रथचक्रनादैः ॥ २ ॥

सान्द्रैरुपर्युपरिवाहपदाग्रजाग्रजूलीषटैर्क्षटिति कुट्टिमतामटङ्गिः ।

मार्गे निरुद्धस्त्रदीधितिधामसङ्घेः सहस्रस्तदा भवनगर्भे इवावभासे ॥ ३ ॥

नाभेयप्रभुभक्तिभासुरमनाः कीर्त्तिप्रभाशुन्निमा-

काशः काशहृदाभिधेऽथ विदधे तीर्थं निवासानसौ ।

यमे चारुमना जिनार्चनविधिं तद्गृह्यचर्यव्रता-

रम्भस्तम्भितविष्टपत्रयजयश्रीधामकामस्वयः ॥ ४ ॥

पुष्टिभक्तिभरतुष्टया रयादम्बया हततमःकदम्बया ।

एत्य दृक्पथमथ प्रतिश्रुतं सन्निधिं समधिगम्य सोऽचलत् ॥ ५ ॥

ग्रामे ग्रामे पुरि पुरि पुवरोत्तिभिर्मर्त्यमुखैः

वल्लसप्रावेशिकविधितता व्योम्नि पश्यन्पताकाः ।

मूर्त्ताः कीर्त्तिरयममनुत प्रौढवृत्तप्रपञ्च-

व्यापल्लीलाद्भुतमुजलतावर्णनीपाः स्वकीपाः ॥ ६ ॥

अध्यावात्य नमस्यकीर्त्तिविभवः श्रीसहस्रमहस्तमा-

स्तोमादित्यमुपलकापरिसरे श्रीमहद्देवानुजः ।

श्रीनाभेयजिनेशदर्शनसमुत्कण्ठोल्लसन्मानस-

त्रस्पन्मोहमधाम्रोह विमलक्षोणीधरं धीरर्थाः ॥ ७ ॥

तत्र स्नानमहोत्सवव्यसनिनं मार्त्तण्डचण्डशुति-

क्रान्तं सहजनं निरीक्ष्य निम्बिलं मान्द्रीभयन्मानसः ।

संयो माद्यदमन्दमेदुरतरश्रद्धानिधिः शुद्धयोः

मन्त्रीन्द्रः स्वयमिन्द्रमण्डपमयं प्रारम्भयामासिवान् ॥ ८ ॥

मन्त्री मौली किल जिनपतेश्चित्रचारित्रपात्रं  
 स्नानं कृत्वा कलशलुठितैः स्मेरकाश्मीरनीरैः ।  
 चक्रे चञ्चन्मृगमदमयालेपनस्वर्णभूषा-  
 वर्णैः पूजाकुसुमवसनैस्तं स कल्पद्रुकल्पम् ॥ ९ ॥  
 मन्त्रीशेन जिनेश्वरस्य पुरतः कर्पूरपूरागुरु-  
 श्लोपप्रेङ्खितभूपधूमपटलैः सा कापि तेने मुदा ।  
 पावहृद्धमहाघ्यजप्रणयिनी स्वर्लोककल्लोलिनी  
 मिश्रेयं रविकन्यकेति वियति प्रत्यक्षमुत्प्रेक्ष्यते ॥ १० ॥  
 इत्थं तत्र विधाय निर्मलमनाः सन्मानदानक्रियां  
 सानन्दप्रमदाकुलां कुलनभोमाणिन्यमष्टाहिकाम् ।  
 विघ्नोन्मर्दिकपरिदयक्षविहितप्रत्यक्षसाक्षिध्वतः  
 श्रद्धावर्द्धितसम्मदादुदतरन्मन्त्रीश्वरो भूधरात् ॥ ११ ॥  
 अजाहरालये नगरे च पार्श्वपादानजापालनृपालपूज्यान् ।  
 अभ्यर्चयन्नेष पुरे च कोडीनारे स्फुरत्कीर्त्तिकदम्बमन्त्राम् ॥ १२ ॥  
 देवपत्तनपुरे पुरन्दरस्तूयमानममृतांशुलाञ्छनम् ।  
 अर्चयन्नुचितचातुरीचितः कामनिर्मथननिर्मलद्युतिम् ॥ १३ ॥  
 प्रीतस्फोतरुचिश्चिराय नयनैर्वामभ्रुवां वामन-  
 स्थल्यामेव मनोविनोदजननं क्लृप्तप्रवेशं पुरि ।  
 धीमाक्षिर्मलधर्मनिर्मितिसमुल्लासेन विस्मापयन्  
 दैवं रैवतकाधिरोहमकरोत्सद्वेन सहेश्वरम् ॥ १४ ॥ ( विशेषकम् )  
 गजेन्द्रपदकुण्डस्य तत्र पीयूषहारिभिः ।  
 चकार मज्जनं मन्त्री वारिभिः पापहारिभिः ॥ १५ ॥  
 जिनमज्जनसञ्चसज्जनं कलशान्यस्ततदम्बुकुङ्कुमम् ।  
 अथ सङ्गमवेक्ष्य सङ्कटे विदधे वासवमण्डपोयमम् ॥ १६ ॥  
 संरम्भसङ्घटितसङ्घजनौघट्टामष्टाहिकामयमिहापि कृत्नी वितेने ।  
 सङ्घूतभावभरभासुरचित्तवृत्तिरुद्वृत्तकीर्त्तिचयचुम्बितदिक्कदम्बः ॥ १७ ॥  
 लुम्पन् रजो विजयसेनमुनीशपाणिवासप्रवासितकुचासनभासमानः ।  
 सम्यक्त्वरोपणकृते विततान नन्दिमानन्दमेदुरमयं रमयन्मनांसि ॥ १८ ॥  
 दानैरानन्य वन्दित्रजमसृजदनिर्वारमाहारदानं  
 मानी सम्मान्य साधूनपुपदपि मुखोद्धाटकर्मदिकानि ।

मन्त्री सत्कृत्य देवार्चनरचनपरानेर्चयित्वाधमुच्चै-

रम्वाग्रधुम्नशाम्बानिति कृतंसेकृतः पर्वतादुत्ततरं ॥ १९ ॥

असाधि साधर्मिकमानदानैरनेन नानाविधधर्मकर्म ।

अवाधि सा धिक्करणेन माया निर्माय निर्मायमनः सुपूजाम् ॥ २० ॥

पुरः पुरः पूरयता पयांसि घनेन सान्निध्यकृता कृतीन्दुः ।

स्वकीर्त्तिवन्नव्यनदीर्ददर्श ग्रीष्मेऽतिभीष्मेऽपि पदे पदेऽसौ ॥ २१ ॥

इति प्रतिज्ञामिव नव्यकीर्त्तिप्रियः प्रयाणैरतिवाह्य वीथीम् ।

आनन्दनित्यन्दविधिविधिज्ञः पुरं प्रपेदे घवलककं सः ॥ २२ ॥

समं तेजःपालान्वितपुरजनैर्वीरघवल-

प्रभुः प्रत्युच्चातस्तदनु सदर्न प्राप्य सुकृती ।

युतः सहैनासौ जिनपतिमथोत्तार्य रथत-

स्ततः सहस्यार्चामशनवसनाद्यैर्व्यरचयत् ॥ २३ ॥

अथ प्रसादाद्भक्त्युः प्राप्य वैभवमद्भुतम् ।

मन्त्रीशः सफलीचक्रे स्वमनोरथपादपम् ॥ २४ ॥

भक्त्याखण्डलमण्डपं नयनचश्रीकेलिपर्यङ्कि-

धर्यं कारयति स्म विस्मयमयं मन्त्री स शत्रुक्षये ।

यत्र स्तम्भनरैवतप्रभुजिनौ शाम्बाम्बिकालोकन-

प्रधुम्नप्रभृतीनि किञ्च शिखराण्यारोपयामासियान् ॥ २५ ॥

गुरुपूर्वजसम्बन्धिमित्रमूर्त्तिकदम्बकम् ।

तुरङ्गसङ्गतं मूर्त्तिद्वयं स्वस्यानुजस्य च ॥ २६ ॥

शातकुम्भमयान् कुम्भान्पञ्च तत्र न्यवेशयत् ।

पञ्चधा भोगसौख्यश्रीनिधानकलशानिव ॥ २७ ॥

सौवर्णं दण्डयुग्मं च प्रासादद्वितये न्यधात् ।

श्रीकीर्त्तिकन्दयोर्मयद्वृतनाडुरसोदरम् ॥ २८ ॥

कुन्देन्दुसुन्दरग्रावपावनं तोरणद्वयम् ।

इहैव श्रीसरस्वत्योः प्रवेशायैव निर्ममे ॥ २९ ॥

अर्कपालितकं ग्राममिह पूजाकृते कृती ।

श्रीवीरघवलक्ष्मापाहापयामास शासने ॥ ३० ॥

श्रीपालितारुये नगरे गरीयस्तरङ्गलीलादलितास्नापम् ।

तडागमागःक्षपहेतुरेतच्चकार मन्त्री ललिताभिधानम् ॥ ३१ ॥

हर्षोत्कर्षं न केपां मधुरयति सुधासाधुमाधुर्यगर्ज-

त्तोयः सोऽयं तडागः पथि मथितमिलत्पान्यसन्तापपापः ।

साक्षादम्भोजदम्भोदितमुदितमुखं लोलरोलम्बशब्दै-

रब्देभ्यो दुग्धमुग्धां त्रिजगति जगदुर्यत्र मन्त्रीशकीर्त्तिम् ॥ ३२ ॥

पृष्ठपत्रं च सौवर्णं श्रीयुगादिजिनेशितुः ।

स्वकीयतेजःसर्वस्वकोशन्यासमिवार्पयत् ॥ ३३ ॥

प्रासादे निदधे काम्यकाञ्चनं कलशत्रयम् ।

ज्ञानदर्शनचारित्रमहारत्ननिधानवत् ॥ ३४ ॥

किञ्चैतन्मन्दिरदारि तोरणं तत्र पोरणम् ।

शिलाभिर्विदधे ज्योत्स्नागर्वसर्वस्वदस्युभिः ॥ ३५ ॥

लोकैः पाञ्चालिकानृत्तसंरम्भस्तम्भितेक्षणैः ।

इहाभिनीयते दिव्यनाट्यप्रेक्षाक्षणः क्षणम् ॥ ३६ ॥

प्रासादः स्फुटमच्युतैकमहिमा श्रीनाभिसनुप्रभो-

स्तस्याग्रस्थितिरैककुण्डलकुलां घत्तेतरां तोरणः ।

श्रीमन्त्रीश्वर वस्तुपाल कलयन्नीलाम्बरालम्बिता-

मत्पुञ्जैर्जगतोऽपि कौतुकमसौ नन्दी तवास्तु भ्रिये ॥ ३७ ॥

अत्र यात्रिकलोकानां विदातां व्रजतामपि ।

सर्वथा सम्मुखैवास्ति लक्ष्मीरुपरिवर्त्तिनी ॥ ३८ ॥

यत्पूर्वैर्न निराकृतं सृकृतिभिः साम्मुख्यवैमुख्ययो-

र्देतं तन्मम वस्तुपालसचिवेनोन्मूलितं दुर्यशः ।

आशास्तेऽद्भुततोरणोभयमुखी लक्ष्मीस्तदस्मै मुदा

श्रीनाभेयविभुप्रसादयशतः साम्मुख्यमेवाऽधुना ॥ ३९ ॥

तस्यानुजश्च जगति प्रथितः शृथिन्यामध्याजपौरुषगुणप्रगुणीकृतश्रीः ।

श्रीतेजपाल इति पालयति क्षितीन्दुमुद्रां समुद्ररसनावधिगीतकीर्त्तिः ॥ ४० ॥

समुद्रत्वं श्लाघेमहि महिमधाम्नोऽस्य बहुधा

यतो भीष्मग्रीष्मोपमविषमकालेप्यजनि यः ।

क्षणेन क्षीणायामितरजनदानोदकततौ

दधावेलाहेलादिगुणितगुणत्यागलहरिः ॥ ४१ ॥

यस्त्रापथस्य पन्थास्तपस्विनां ग्रामशासनोद्वारात् ।

येनापनीय नवकरमनवकरः कारयाञ्चके ॥ ४२ ॥



पुण्योल्लासविलासलालसधिया येनात्र शत्रुञ्जये  
श्रीनन्दोश्वरतीर्थमर्पितजगत्पावित्र्यमासूत्रितम् ।

एतच्चानुपमासरः परिसरोद्देशे शिलासन्धय-  
व्यानद्धोद्धतबन्धमुद्धरपयःकल्लोललुप्तक्रमम् ॥ ४३ ॥

स्फुटस्फटिकदर्पणप्रतिमतामिदं गाहते  
मुधाकृतसुधाकरच्छविपवित्रनीरं सरः ।

विकस्वरसरोरुहप्रकरलक्ष्यतो लक्ष्यते  
यवत्र सरिदङ्गनायदनविम्बताडम्बरः ॥ ४४ ॥

शत्रुञ्जये यः सरसीं निवेद्य श्रीरेवताद्रीं च जडाधराणाम् ।  
ग्रामस्य दानेन करं निवार्य सङ्घस्य सन्तापमपाचकार ॥ ४५ ॥

क्षोणीपीठमियद्भजःकणमियत्पानीयविन्दुः पतिः  
सिन्धूनामियदङ्गुलं चियदियत्ताला च कालस्थितिः ।

इत्थं तथ्यमवैति यस्मिन्सुवने श्रीवस्तुपालस्य तां  
धर्मस्थानपरम्परां गणयितुं शङ्के न सोऽपि क्षमः ॥ ४६ ॥

एतत्सुवर्णरचितं विश्वालङ्करणमनणुगुणरत्नम् ।  
सङ्घाधीश्वरचरितं हतदुरितं कुरुत हृदि संतः ॥ ४७ ॥

श्रीनागेन्द्रसुनीन्द्रगच्छतरणिः श्रीमान्महेन्द्रप्रसु-  
जज्ञे क्षान्तिमुधानिधानकलशः पुण्यान्धचन्द्रोदयः ।

सम्मोहोपनिपातकातरतरे विश्वेऽत्र तीर्थेशितुः  
सिद्धान्तोऽप्यविमेयतर्कथिपमं यं दुर्गमाशिश्रिये ॥ ४८ ॥

तत्सिंहासनपूर्वपर्वतशिरःप्रान्तोदयः कोऽप्यभू-  
द्भास्वानस्तसमस्तदुस्तमतमाः श्रीशान्तिसूरिप्रसुः ।

प्रत्युज्जीवितदर्शनशुतिलसद्भयौघपद्माकरं  
तेजश्छद्मदिगम्बरं विजयते तयस्य लोकोत्तरम् ॥ ४९ ॥

आनन्दसूरिरिति तस्य यमूव शिष्यः  
पूर्वापरः शमथनोऽमरचन्द्रसूरिः ।

धर्मद्विपस्य दक्षनाविव पापवृक्ष-  
क्षोदक्षमौ जगति यौ विशदौ विमातः ॥ ५० ॥

अस्तावचाक्षपयोनिधिमन्दराद्रि-  
मुद्रापुपोः किमनयोः स्तुमहे महिम्नः ।

बाल्येऽपि निर्दलितवादिगजौ जगाद

यौ व्याघ्रसिंहशिशुकाविति सिद्धराजः ॥ ५१ ॥

सिद्धान्तोपनिषन्निपण्णहृदयो धीजन्मसस्तत्पदे

पूज्यः श्रीहरिभद्रसूरिरभवच्चारित्रिणामग्रणीः ।

भ्रान्त्वा शून्यमनाश्रयैरिव चिरायस्मिन्नवस्थानतः

सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ५२ ॥

श्रीविजयसेनसूरिस्तत्पदे जयति जलधरध्वानः ।

यस्य गिरो धारा इव भवदवभवदवयुविभवभिदः ॥ ५३ ॥

पञ्चासराह्वनराजविहारतीर्थे

प्रालेयभूमिधरभूतिधुरन्धरेऽस्मिन् ।

साक्षादघातकृतभवा तदिनीव यस्य

व्याख्येयमच्युतगुरुक्रमजा विभाति ॥ ५४ ॥

भवोद्भूतवनावनीविकटकर्मवंशावलि-

च्छिदोच्छलितमौक्तिकप्रतिमकीर्तिकर्णाम्बरम् ।

असिश्रियमशिश्रियद्विततभीव्रतं यद्व्रतं

क्षितौ विजयतामयं विजयसेनसूरिर्गुरुः ॥ ५५ ॥

शिष्यं तस्य प्रशस्यप्रशमगुणनिधिं रभ्यदारण्यदाव-

ज्वालाजिहालदीप्तिर्भविकजनविपद्बहिर्वादः कपर्दी ।

देवी धाम्वा निशीथे समसमयमुपागत्य हर्षाश्रुवर्षा-

मेयश्रेयःसुभिक्षाविति निजगदतुर्गद्गदोद्दामनादम् ॥ ५६ ॥

नाभूयन्कति नाम सन्ति कति नो नो वा भविष्यन्ति के

किं न कापि कदापि सद्गुरुरूपः श्रीवस्तुपालोपमः ।

पत्रेत्यं ग्रहरत्नहर्निशमहो सर्वाभिसारोद्गुरो

येनायं विजितः कलिर्विदधत्ता तीर्थेऽश्यात्रोत्सवम् ॥ ५७ ॥

तस्मादस्य यशस्विनः सुचरितं श्रीवस्तुपालस्य य-

थाचात्माकममोचया किल यथाध्यक्षीकृतं सर्वथा ।

त्यं श्रीमद्युदयप्रभ प्रथय तत् पीयूषसर्वङ्ग्यैः

श्लोकैर्यत्तव भारती सममव.....यते ॥ ५८ ॥

इत्युक्त्वा गतयोस्तयोरथ पथो दृष्टेः प्रभातक्षणे

विज्ञाप्य स्वगुरोः पुरः सविनयं नम्रीभवन्मौलिना ।

प्राप्यादेशमसुं प्रभोर्विरचयामासे समासेदुपा

प्रागलभीमुदयप्रभेण चरितं निस्यन्दरूपं गिराम् ॥ ५९ ॥

किञ्च श्रीमलयारिगच्छजलधिप्रोल्लासशीतद्युते-

स्तस्यश्रीनरचन्द्रसूरिसुगुरोर्माहात्म्यमाशास्महे ।

यत्पाणिस्मितपद्मवासविकसत्किञ्जल्कसंवासिताः

सन्तः सन्ततमाश्रिताः किल मया भृङ्गयेव भान्ति क्षितौ ॥ ६० ॥

श्रीधर्मान्मुदयाह्वयेऽत्र चरिते श्रीसङ्घभर्तुर्मया

दध्रे काव्यदलानि सहृदयितुं कर्मान्तिकत्वं परम् ।

किन्तु श्रीनरचन्द्रसूरिभिरिदं संशोध्य चक्रे जग-

त्पाविश्यक्षमपादपङ्कजः पुञ्जैः प्रतिष्ठास्पदम् ॥ ६१ ॥

नित्यं व्योमनि नीलनीरजरुधौ यावन्निपामीश्वरो

दिक्पालावलिबन्धुरे कुवलये यावच्च हेमाचलः ।

हृत्पद्मे विदुषामिदं सुचरितं तावन्नवाचिर्भव-

त्सौरभ्यप्रसरं चिरं कलयतात् किञ्जल्कलक्ष्मीपदम् ॥ ६२ ॥

इति श्रीविजयसेनसूरिशिष्यश्रीमुदयप्रभसूरिविरचिते श्रीधर्मान्मुदयनाम्नि श्रीसङ्घपविच-

रिते छन्दोऽङ्गे महाकाव्ये श्रीवस्तुपालतीर्थयात्रोत्सववर्णनौ नाम पञ्चदशः सर्गः ।

मुक्तेर्मोर्गे यदेतद्विरचितमुचितं सङ्घभर्तुश्चरित्रं

सत्रं पावित्र्यपात्रं पथिकजनमनःखेदविच्छेदहेतुः ।

अस्मिन्सौरभ्यगर्भासमरसवतीं सत्कर्था पान्थसार्थाः

प्राप्य श्रीवस्तुपाल प्रवरनवरसास्वादमास्वादयन्ति ॥ १ ॥

श्रीशारदैकसदनं हृदयालयः के नो सन्ति हन्त सकलामु कलामु निष्णाः ।

तादृक्परस्य ददद्मो सुकवित्वतत्त्वबोधाय बुद्धिविभवस्तु न वस्तुपालात् ॥ २ ॥

नैव व्यापारिणः के विदधति करणग्राममात्मैकवश्यं

लेभे सद्योगसिद्धेः फलममलमलं केवलं वस्तुपालः ।

आकल्पस्यायि धर्मान्मुदयनवमहाकाव्यनाम्ना यदीयं

विश्वस्यानन्दलक्ष्मीमिति दिशति यशोधर्मरूपं शरीरम् ॥ ३ ॥

## APPENDIX II.

### रेवयकप्पसंखेवो

सिरिनेमिजिणं सिरसा नमिडं रेवयगिरीसरुप्पमि ।

सिरिवहरसीसभणिअं जहा य पालित्ताएणं च ॥ १ ॥

इत्तसिलाइसमीवे सिलासणे दिक्कं पडिवन्नो नेमी, सहसंववणे केवल-  
माणं, लक्कारामे देसणा, अवलोअणं उद्धसिहरे निब्बाणं । रेवयमेह्लाए कण्हो  
तत्थ कल्लाणतिगं काऊण सुवन्नरयणपडिमालंकिअं चेइअतिगं जीवंतसा-  
मिणी अंबादेविं च कारेइ । इंदो वि वज्जेण गिरिं कोरेऊण सुवन्नवलाणयं  
रुप्पमयं चेईअं रयणमया पडिमा पमाणवन्नोववेया, सिहरे अंबा रंगमंडवे अव-  
लोअणसिहरे वलाणयमंडवे संवो एयाइं कारेइ । सिद्धविणायगो पडिहारो;  
तप्पडिरुवं श्रीनेमिमुखात् निर्वाणस्थानं ज्ञात्वा निर्वाणादनन्तरं कण्हेण ठा-  
यिअं । तहा सत्त जायवा दामोयराणुस्वा कालमेह १ मेहनाद २ गिरि-  
विदारण ३ कपाट ४ सिंहनाद ५ खोडिक ६ रेवया ७ तिब्बतवेणं कीडणेणं  
वित्तवाला उववत्ता । तत्थ य मेहनादो समदिट्ठो नेमिपयभसिजुत्तो चिट्ठइ ।  
गिरिविदारणेणं कंचणवलाणयंमि पंच उडारा चिडच्चिआ । तत्थेगं अंबापुरओ  
उत्तरदिसाए सत्तहिअसयकमेहिं गुहा । तत्थ ॥ उववासतिगेणं बलिविदाणेणं  
सिलं उप्पाडिऊण मज्जे गिरिविदारणपडिमा । तत्थ य कमपण्णासं गए  
बलदेवेणं कारिअं सासयजिणपडिमारुवं नमिऊण, उत्तरदिसाए पण्णासकमं  
यारोतिगं । पढमवारिआए कमसयतिगं गंतूण, गोदोहिआसणेणं पविसिऊण,  
उपवासपंचगं भमररुवं दाऊणं सत्तेणं उप्पाडिऊणं, कम्मसत्ताओ अहोमुहं  
पविसिऊण, वलाणयमंडवे इंदोदेसेण घणयजत्तकारियं अंबादेविं पृइऊण,  
सुवण्वजालीए ठायव्वं । तत्थट्ठिणं सिरिमूलनाहो नेमिजिणिंदो वंदिअच्चो ।  
घोअवारीए एगं पायं पृइत्ता, सयंवरवावीए अहो कमचालीसं गमित्ता, तत्थ णं  
मज्झवारीए कमसत्तसण्हिं क्वो । तत्थ वरहंसट्ठिअत्तेण इहावि मूलनायगो  
वंदेयच्चो । तइअवारीए मूलदुचारपवेसो अंबाएसेण न अन्नहा । एवं कंचण-  
वलाणयमग्गो । तत्थ ॥ अंबापुरओ हत्थवीसाए चिवरं । तत्थ य अंबाएसेण  
उववासतिगेण सिलुग्घाडणेण हत्थवीसाए संपुडसत्तगं समुग्गायपंचगं अहो  
रसहविआ अमावसाए अमावसाए उग्घट्ठइ । तत्थ य उववासतिगं काऊण

अंवाएसेण पूयणेण वलिबिहाणेणं गिण्हियब्बं । तद्वा य जुण्णकूडे उवयास-  
तिगं काऊण सरलमग्गेण वलिपूअणेणं सिद्धविणायगो उवलब्भइ । तत्थ य  
चित्तिअसिद्धी दिनमेगं ठाण्यब्बं । जइ तद्वा पच्चक्को हवइ तद्वा रायमईगुहाए  
कमसएणं गोदोहिआए रसकूविआ कसिणचित्तयवल्ली राइमईए पडिमा  
रयणमया अंवाया रूपमयाओ अणेगओसहीओ अ चिट्ठंति । तद्वा छत्तसिलाघं-  
टसिलाकोटिसिलातिगं पणत्तं । छत्तसिलं मज्झे मज्जेणं कणयवल्ली सहस्संव-  
वणमज्झे रययसुवण्णमयचउवीसं लक्कारामे वावत्तरीचउवीसजिणाण गुहा प-  
णत्ता । कालमेहस्स पुरओ सुवण्णवालुआए भईए सट्ठकमसयतिगेण उत्तरदि-  
साए गमित्ता गिरिगुहं पविसिऊण उदए ण्हवणं काऊण, विए उवयासपओएहिं  
दुवारमुग्घादेइ । मज्झे पढमदुवारं सुवण्णखाणी, दुइअदुवारं रयणखाणी,  
संघहेउं अंवाए विउब्बिआ । तत्थ पण कण्हभंडारो । अण्णो दामोदरसमीये ।  
अंजणसिलाए अहोभागे रययसुवण्णधूली पुरिसवीसेहिं पणत्ता ।

तस्सत्थमणे मंगलयदेवदालीय संतु रससिद्धी ।

सिरिवहरोवक्कायं संघसमुद्धरणकज्जंमि ॥

सत्सकडाहं मज्झे गिण्हत्ता कोटिबिंदुसंपोगे ।

घंटसिलाचुण्णयजोयणाओ अंजणसिद्धी ।

विज्जापाहुहुहेसाओ रेवयकप्पसंखेयो सम्मत्तो ॥

## APPENDIX III.

### श्रीउज्जयन्तस्तवः

नामभिः श्रीरैवतकोज्जयन्ताद्यैः प्रथामितम् ।  
 श्रीनेमिपावितं स्तौमि गिरिनारं गिरीश्वरम् ॥ १ ॥  
 स्थाने देशः सुराष्ट्राख्यां विभर्ति भुवनेष्वसौ ।  
 यद्भूमिकामिनीभाले गिरिरेष विशेषकः ॥ २ ॥  
 शृङ्गारयन्ति स्वङ्गारदुर्गं श्रीऋषभादयः ।  
 श्रीपार्श्वस्नेजलपुरं भूपितैतदुपलकम् ॥ ३ ॥  
 योजनद्वयतुङ्गेऽस्य शृङ्गे जिनगृहावलिः ।  
 पुण्यराशिरिवाभाति शरच्चन्द्रांशुनिर्मला ॥ ४ ॥  
 सौवर्णदण्डकलशमलसारकशोभितम् ।  
 चारु चैत्यं चकास्यस्योपरि श्रीनेमिनः प्रभोः ॥ ५ ॥  
 श्रीशिवासुनुदेवस्य पादुकाऽत्र निरीक्षिता ।  
 स्पृष्टाऽर्चिता च शिष्टानां पापव्यूहं व्यपोहति ॥ ६ ॥  
 प्राज्यं राज्यं परित्यज्य जरत्तृणमिव प्रभुः ।  
 घन्धून्विधूय च स्निग्धान् प्रपेदेऽत्र महाव्रतम् ॥ ७ ॥  
 जत्रैव केवलं देवः स एव प्रतिलब्धवान् ।  
 जगज्जनहितंपी स पर्यणैषीच्च निर्धृतिम् ॥ ८ ॥  
 अत एवात्र कल्याणत्रयमन्दिरमादधे ।  
 श्रीयस्तुपालो मन्त्रीशश्चमत्कारितभव्यहृत् ॥ ९ ॥  
 जिनेन्द्रविम्बपूर्णेंद्रमण्डपस्या जना इह ।  
 श्रीनेमेर्मज्जनं कर्तुमिन्द्रा इव चकासति ॥ १० ॥  
 गजेन्द्रपदनामास्य कुण्डं मण्डयते शिरः ।  
 सुधाविधैर्जलैः पूर्णं स्नानार्हत्स्नयनक्षमैः ॥ ११ ॥  
 शत्रुञ्जयावतारेऽत्र वस्तुपालेन कारिते ।  
 ऋषभः पुण्डरीकोऽष्टापदो नन्दाश्वरस्तथा ॥ १२ ॥  
 सिद्धयाना हेमवर्णा सिद्धबुद्धमुतान्विता ।  
 कम्पामलुम्बिभृत्पाणिरत्राम्बा सहविप्रहृत् ॥ १३ ॥

श्रीनेमिपत्न्यद्रुपुतमवलोकननामकम् ।  
 विलोकयन्तः शिखरं यान्ति भव्याः कृतार्थताम् ॥ १४ ॥  
 शाम्बो जाम्बवतीजातस्तुङ्गे शृङ्गेऽस्य कृष्णजः ।  
 प्रद्युम्नश्च महाद्युम्नस्तेपाते दुस्तपं तपः ॥ १५ ॥  
 नानाविधौषधिगणा जाज्वलन्त्यत्र रात्रिषु ।  
 किञ्च घण्टाक्षरच्छत्रशिलाः शालन्त उच्चैः ॥ १६ ॥  
 सहस्राभ्रवर्णं लक्षारामोऽन्येपि धनव्रजाः ।  
 मयूरकोकिलाभृङ्गीसङ्गीतिमुभगा इह ॥ १७ ॥  
 न स वृक्षो न सा वह्नी न तत्पुष्पं न तत्फलम् ।  
 नेक्ष्यतेऽत्राभियुक्तैर्यदित्यैतित्वविदो विदुः ॥ १८ ॥  
 राजीमती मुहागर्भे कैर्न नामात्र वन्द्यते ।  
 रथनेमिर्धपोन्मार्गात्सन्मार्गमवतारितः ॥ १९ ॥  
 पूजालपनदानानि तपश्चात्र कृतानि वै ।  
 सम्पद्यन्ते मोक्षसौख्यहेतवो भव्यजन्मिनाम् ॥ २० ॥  
 दिग्भ्रमावपि योऽघ्राद्रीं प्राप्यमार्गंऽपि सञ्चरन् ।  
 सोऽपि पश्यति चैलस्था जिनार्चाः स्तुतिार्चिताः ॥ २१ ॥  
 काश्मीरागतत्वेन कृष्णपट्यादेशतोऽत्र च ।  
 लेप्यविम्भास्पदे न्यस्ता श्रीनेमेर्मूर्तिराश्मनी ॥ २२ ॥  
 नदीनिर्झरकुण्डानां खनीनां वीरुधामपि ।  
 विदाहुरोत्वत्र सङ्ख्याः सङ्ख्यावानपि कः श्रुतः ॥ २३ ॥  
 आसेचनकरूपाय महातीर्थाय तापिने ।  
 चैल्यालङ्कृतशीर्षाय नमः श्रीरैयनाद्रये ॥ २४ ॥  
 स्तुतो मयेति मूरीन्द्रवर्णिनाष्टजिनप्रभः ।  
 गिरिनारस्तारहेमसिद्धिभूमिर्मुदेऽस्तु यः ॥ २५ ॥

इति श्रीउज्ज्वलस्तवः ॥

## APPENDIX VI.

### श्रीउज्जयन्तमहातीर्थकल्पः

अत्थि सुरट्टाविसण उज्जितो नाम पव्वओ रम्मो ।  
 तस्सिहरे आरुहिउं भत्तोण नमह नेमिजिणं ॥ १ ॥  
 अंवाइअं च देविं ण्हवणच्चणगंधधूवदीवेहिं ।  
 पूइयकयप्पणामा ता जोअह जेण अत्थत्थी ॥ २ ॥  
 गिरिसिहरं कुहरकंदरनिज्झरणकवाडविअडकूवेहिं ।  
 जोएह खत्तवायं जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ ३ ॥  
 कंदप्पदप्पकप्परणकुगइविइवणनेमिनाहस्स ।  
 निव्वाणसिला नामेण अत्थि भुवणंमि विक्काया ॥ ४ ॥  
 तस्स य उत्तरपासे दसघणुहेहिं अहोमुहं विवरं ।  
 दारंमि तस्स लिगं अवपाणे घणुह चत्तारि ॥ ५ ॥  
 तस्स पसुमुत्तागंधो अत्थि रसोपलसण्ण सयतंबं ।  
 विंधेहि कृणइ तारं ससिक्कुदसमुज्जलं सहसा ॥ ६ ॥  
 पुव्वदिसाण धणुहंतरेसु तस्सेव अत्थि जागवई ।  
 पाहाणमया दाहिणदिसागए वारसधणूहिं ॥ ७ ॥  
 दिस्सइ अ तत्थ पयडो हिंगुलवण्णो अ दिव्वपवररसो ।  
 विंधेइ सव्वलोहे फरिसेणं अग्गिसंगेणं ॥ ८ ॥  
 उज्जिते अत्थि नई विहला नामेण पव्वई पडिमा ।  
 दावेइ अंगुलीण फरिसरसो पव्वईदारं ॥ ९ ॥  
 सक्कावयार उज्जितगिरिवरे तस्स उत्तरे पासे ।  
 सोवाणपंतिआए पारेवयवणिण्या पुढवी ॥ १० ॥  
 पंचगव्वेण वज्जा पिंडीघमिआ करेइ वरतारं ।  
 फेडइ दरिदवाहिं उत्तारइ दुक्कंतारं ॥ ११ ॥  
 सिहरे विसालसिगे दीसंते पायकुट्ठिमा जत्थ ।  
 तस्सासन्ने सिहरे कव्वडहदपासहो तारं ॥ १२ ॥  
 उज्जितरंवेयवणे तत्थ य सुद्धारवानरो अत्थि ।  
 सो वामकण्णछित्तो उग्घाडइ विवरवरदारं ॥ १३ ॥  
 हत्थसण्ण पविट्ठो दिक्कइ सोवण्णवणिआ कक्का ।



नीलरसेण सवंता सहस्सवेही रसो नूनं ॥ १४ ॥  
 तं गहिऊण निअत्तो हणुवर्तं छिव्ह वामपाएण ।  
 सो दफ्ह वरदारं जेण न जाणह जणो को वि ॥ १५ ॥  
 उज्जितसिहरउवरिं कोहंदिहरं खु नाम विस्कायं ।  
 अवरेण तस्स य सिला तदुभयपासेसु ओसं तु ॥ १६ ॥  
 तं अयसितिल्लुमीसं थंभइ पडिवायवंगिअं वंगं ।  
 वेगचवाहिहरणं परितुट्ठा अंविआ जस्स ॥ १७ ॥  
 वेगवई नाम नई मणसिलवण्णाह तत्थ पाहाणा ।  
 तो पिंडि धमिअ संते समसुद्धे होइ वरतारं ॥ १८ ॥  
 उज्जंते नाणसिला तस्स अहो कणयवणिआ पुढवी ।  
 वोकइयमुत्तपिंडी स्वहरंगारे भवे हेमं ॥ १९ ॥  
 नाणसिलाकयपुढवी पिंडीवद्धा य पंचमव्वेण ।  
 हट्ठपाए वसइ रसो सहस्सवेही हवड हेमं ॥ २० ॥  
 गिरिवरमासन्नठिअं आणीयं तिलविसारणं नाम ।  
 सिलवद्धगाढपीडे वे लक्ख तत्थ दम्माणं ॥ २१ ॥  
 सेणा नामेण नई सुवण्णतित्थंमि लडुअपहाणा ।  
 पडिवाएण य सुचं करिति हेमं न संदेहो ॥ २२ ॥  
 विह्लक्खयंमि नयरे मउट्ठहरं अत्थि सेलगं दिव्वं ।  
 तस्स य मज्झंमि ठिओ गणयहरसकुंटओ उवरिं ॥ २३ ॥  
 उचयासी कयपूओ गणवइओ वड्ढिऊण पचररसो ।  
 पामापेवी अत्थि अ थंभइ वंगं न संदेहो ॥ २४ ॥  
 सहसासयं ति तित्थं करंजकक्केण मणहरं सम्मं ।  
 तत्थ य तुरपायारा पाहाणा तेमि दो भाया ॥ २५ ॥  
 इफो पारयभाओ पिट्ठो सुत्तेण अंयमूसाए ।  
 धमिओ करेइ तारं उत्तारइ दुरक्कंनारं ॥ २६ ॥  
 अवलोअणसिहरसिला अवरेणं तत्थ वररसो सवइ ।  
 सुअपक्खसरिसवण्णो करेइ सुयं यरं हेमं ॥ २७ ॥  
 गिरिपज्जुअवयारे अंविअआसमपयं थ नामेण ।  
 तत्थ वि पीआ पुढवी हिमवाए होइ वरहेमं ॥ २८ ॥  
 नाणसिला उज्जिते तस्स य मूलंमि मट्ठिआ पीआ ।

साहामिअलेवेणं छायामुक्कं कुणइ हेमं ॥ २९ ॥  
 उज्जितपढमसिहरे आरुहिउं दाहिणेण अवघरिउं ।  
 तिणिण घणूसयमित्ते पूईकरं जं विलं नाम ॥ ३० ॥  
 उग्घाडिउं विलं दिक्किऊण निउणेण तत्थ गंतव्वं ।  
 दंडंतराणि वारस दिव्वरसो जंउफलसरिसो ॥ ३१ ॥  
 जउ घोलिअंमि भंडे सहस्सभाणण विंघण तारं ।  
 हेमं करइ अवस्सं हटं तं सुंदरं सहसा ॥ ३२ ॥  
 कोहंडिअवणपुव्वेण उत्तरे जाव तावसा भूमी ।  
 दीसइअ तत्थ पडिमा सेलमया चासुदेवस्स ॥ ३३ ॥  
 तत्सुत्तरेण दीसइ हत्थेसु अ दससु पण्यई पडिमा ।  
 अवराहसुहरअंगुठिआइ सा दावण विवरं ॥ ३४ ॥  
 नवधणुहाइं पविट्ठो दिक्खइ कडाइं दाहिणुत्तरओ ।  
 हरिआललक्खवण्णो सहस्सवेही रसो नूणं ॥ ३५ ॥  
 उज्जिते नाणसिला विक्काया तत्थ अत्थि पाहाणं ।  
 ताणं उत्तरपासे दाहिणय अहोमुहो विवरो ॥ ३६ ॥  
 तत्स य दाहिणभाण दसधणुभूमीइ हिंउलुपवण्णो ।  
 अत्थि रसो सयवेही विंघइ सुचं न संदेहो ॥ ३७ ॥  
 उसहरिसहाइकूडे पाहाणा ताण संगमो अत्थि ।  
 गयवरलिंढाकिण्णा मउझे फरिसेण ते वेही ॥ ३८ ॥  
 जिणभवणदाहिणेणं नउई घणुहेहिं भूमिजलुअपरी ।  
 तिरिमणुअरत्तविन्हा पडियाण तंवण हेमं ॥ ३९ ॥  
 वेगयई नाम नई मणसिलवण्णा य तत्थ पाहाणा ।  
 सुचस्स पंचवेहं सवन्ति घमिआ तयं सिग्घं ॥ ४० ॥  
 इय उज्जयंतरुप्पं अविअप्पं जो करइ जिणभत्तो ।  
 कोहंठिरुपणामो सो पावइ इच्छिअं सुखं ॥ ४१ ॥

## APPENDIX V

### रैवतकल्पः

पच्छिमदिसाए सुरद्वाविसाए रेवयपञ्चयरायसिहरे सिरिनेमिनाहस्स भवणं उचुंगसिहरं अच्छइ । तत्थ किर पुर्व्वि भयवओ नेमिनाहस्स लिप्पमई पडिमा आसि । अन्नया उत्तरदिसाविभूसणकम्हीरदेसाओ अजियरयणना-  
माणो दुग्धि बंधवा संघाहिवई होऊण गिरिनारमागया । तेहिं रहस्सवसाओ  
यणवुसिणरससंपूरिअकलसेहिं ण्हवणं कयं । गलिआ लेवमई सिरिनेमिनाह-  
पडिमा । तओ अइय अप्पाणं सोअंतेहिं तेहिं आहारो पचकाओ । इफ-  
वीसडववासाणंतरं सयमागया भगवई अंबिआ देवी । उद्वाविओ संघवई ।  
तेण देविं दट्टण जयजयसदो कओ । तओ भणिअं वेवीए इमं विवं गिणिहसु  
परं पच्छा न पिच्छिअब्बं । तओ अजिअसंघाहिवइणा एगतंतुकड्डिअं रयणमयं  
सिरिनेमिबिबं कंचणवल्लाणए नीअं । पढमभवणस्स देहलीए आरोविता अइ-  
हरिसभरनिग्भरेणं संघवइणा पच्छाभागो दिट्ठो । ठिअं तत्थेव विवं निच्चलं ।  
देवीए कुसुमवुट्ठी कया जयजयसदो अ कओ । एअं च विवं वइसाहपुग्निमाए  
अहिणवकारिअभवणे पच्छिमदिसामुहे ठविअं संघवइणा । न्हवणाइमहसर्व  
काडं अजिओ सवंधवो निअदेसं पत्तो । कलिकाले कलुसचित्तं जणं जाणि-  
ऊण झलहलंतमणिमयविंवस्स कंती अंबिआदेवीए छाइआ । पुर्व्वि गुज्जरघ-  
राए जयसिंहदेवेणं खंगाररायं हणित्ता सज्जणो दंडाहिवो ठाविओ । तेण य  
अहिणवं नेमिजिणंदभवणं एगारससयपंचासीए विक्कमरायवच्छरे कारा-  
विअं । मालवदेसमुहमंडणेणं साहुभावडेणं सोवणं आमलसारं कारिअं ।  
थालुक्कचकिसिरिकुमारपालनरिंदसंठविअसोरद्वंदडाहिवेण सिरिसिरिमाल-  
कुलम्भवेण थारससयवीसे विक्कमसंवच्छरे पज्जा काराविआ । तन्भावुणा  
धवलेण अंतराले पचा भराविआ । पज्जाए चडंतेहिं जणेहिं दाहिणदिसाए  
लत्कारामो दीसइ । अणहिल्लवाडयपट्टणे य पोरवाडकुलमंडणा आसराय-  
कुमरदेवितणया गुज्जरधराहिवइसिरिवीरधवलरज्जधुरंधरा वस्तुपालतेजपाल-  
नामधज्जा दो मायरो मंतिवरा हुत्था । तत्थ तेजपालमंतिणा गिरिनारतले  
निअनामंकिअं तेजलपुरं पवरगढमदपवामंदिरआरामरम्मं निम्माविअं । तत्थ  
य जणंपनामंकिअं आसरायविहाक स्ति पासनाहभवणं काराविअं । जणणीना-  
मेणं च कुमरसरुत्ति सरोवरं निम्माविअं । तेजलपुरस्स पुव्वदिसाए उग्गसेणगढं

नाम दुग्गं जुगाइनाहणमुहजिणमंदिररेहिल्लं विज्झइ । तस्स य तिणिण नाम-  
धिज्जाइं पसिद्धाइं । तं जहा उग्गसेणगढं ति वा खंगारगढं ति वा उज्जुण्णदुग्गं  
ति वा । गढस्स बाहिं दाहिणदिसाए चउरिआवेईलदुअओवरिआपसुवाडया-  
इठाणाइं चिट्ठंति । उत्तरदिसाए विसालथंभसालासोहिओ दसदसारमंडवो ।  
गिरिदुवारे य पंचमो हरी दामोअरो सुवण्णरेहानईपारे वट्टइ । कालमेहसमीवे  
चिराणुवत्ता संघस्स बोलाविआ । तेजपालमंतिणा मिल्हाविआ । कमेण  
उज्जयंतसेले वत्थुपालमंतिणा सित्तुज्जावयारभवणं अट्ठावयसंमेअमंडवो कव-  
डिजत्तमरुदेविपासाया य काराविआ । तेजपालमंतिणा कल्लाणत्तयचेइअं,  
इंदमंडवो अ देपालमंतिणा उद्धाराविओ । गरावणगयपयमुहाअलंकिअं गइंद-  
पयकुंडं अण्णइ । तत्थ अंगं परकालित्ता दुक्काण जलंजलिं दिति जत्तागय-  
लोआ । छत्तसिलाकडणीए सहस्संववणारामो, जत्थ भगवओ जायवकुलपई-  
घस्स सिवासमुहविजयनंदणस्स दिक्कानाणनिब्बाणकल्लाणयाइं संजाआइं । गि-  
रिसिहरे चडित्ता अंविआदेवीण भवणं दीसइ । तत्तो अवलोअणं सिहरं । तत्थ-  
ट्टिएहिं किर दसदिसाओ नेमिसामी अवलोइज्जति । तओ पढमसिहरे संबकु-  
मारो वीअसिहरे पज्जुण्णो । इत्थ पण्ण ठाणे ठाणे चेइएसु रयणसुवण्णमय-  
जिणविवाइं निच्चन्हविअच्चिआइं दीसंति । सुवण्णमेयणी अ अणेगघाउरसमे-  
इणी दिप्पंती दीसइ । रत्तिं च दीवउव्व पज्जलंतीओ ओसहीओ अवलोइज्जंति ।  
नाणाविहतरुवरवल्लिदलपुप्फफलाइं पए पए उवलब्भंति । अणवरयपद्धारंतनि-  
ब्धरण्णाणं खलहलारावा य मत्तकोयलभमरसंकारा य सुखंति त्ति ।

उज्जयंतमहातित्थकप्पसेसलघो इमो ।

जिणप्पहमुणिदेहिं लिहिओत्थ जहासुअं ॥

श्रीरैवतकल्पः समाप्तः

## APPENDIX VI

### अधिकादेवीकल्पः

सिरिचञ्जयंतसिहरसेहरं पणमिऊण नेमिजिणं ।

कोहंडिदेविकप्पं लिहामि बुद्धोवएसाओ ॥

अत्थि सुरहाविसये घणक्कणयसंपयजणसमिद्धं कोडीनारं नाम नयरं ।  
तत्थ सोमो नाम रिद्धिसमिद्धो छक्कम्मपरायणो वेयागमपारगमो वंभणो  
हुत्था । तत्स वरिणी अंबिणी नाम महग्घसीलालंकारभूसियसरीरा आसि ।  
तेसि विसयसुहमणुह्वंताणं उप्पन्ना दुवे पुत्ता पढमो सिद्धो वीओ बुद्धु त्ति ।  
अन्नपा समागए पिअरपक्के भट्ठसोमेणं निर्ममिआ वंभणा सद्धदिणे । कत्थ  
वि ते वेयमुच्चारन्ति, कत्थ वि आठवन्ति पिण्डपयाणं, कत्थ वि होमं करिति  
वइसदेवं च । सम्पाडिआ सालिदालिवंजणपक्कम्मेअखीरखण्डपनुहा जेमणा ।  
अविणीए असासुआ प्हाणं काउं पयट्ठा । तम्मि अयसरं एगो साह मासोववास-  
पारणए भिक्खुहा संपत्तो । तं पलोइत्ता हरिसभरनिम्भरपुलहंगी उड्डिआ  
अंबिणी । पडिलाभिओ तीए मुणिवरो भत्तिवहुमाणुउवं अहापयित्तेहि भत्त-  
पाणेहि । जाव गहिअभिको साह पलिओ ताव सासुआ वि प्हाऊण रसयई-  
ठाणमागया । न पिच्छइ पढमसिहं । तओ तीए कुविआए पुट्ठा वहुआ ।  
तीए जहट्टिए बुत्ते अंबाडिआ सा अज्जूए । जहा पावे किमेयं तए करं,  
अज्ज वि देवया न पहुँआ अज्ज वि न भुञ्जाविआ यिप्पा अज्ज वि न भरिआहं  
पिडाहं अग्गसिहा तए किमत्थं साहुणो दिन्ना । तउ तीए भणिओ सच्चो वि  
वइअरो सोमभट्ठस्स । तेण संग्घेण अप्पच्छंदिअ त्ति निक्कालिआ गिहाओ ।  
सा पडिभवद्मिआ सिद्धं करंगुलीए धरित्ता बुद्धं च कडीए चटाविस्ता  
चलिआ नयराओ वारिं । पंथे तिसाभिभूएहिं दारएहिं जलं मग्गिआ । जाय  
सा अंसुजलपुन्नलोअणा संवुत्ता ताव पुरओ ठिअं सुक्खसरोवरं तित्सा अणग्गेणं  
सीलमाहप्पेणं तरुणं जलधूरिअं जायं । पाठ्ठा दोभि सीअलं नीरं । तओ  
हुदिएहिं भोअणं मग्गिआ वालएहिं । पुरओ सुक्खसहयारतरु तरुणं फलि-  
ओ । दिन्नाहं फलाइं । अविणीए तेसि जाया ते सुत्था । जाव सा चूअट्ठायाए  
वीसमठ ताव जं जायं तं निसामेठ जंतीए वालयाई पढमं जेमाविआ तेमि भुत्तु-  
तरं पत्तलीओ तीए वारिं उज्झिआओ आसि ताओ सोलमाहप्पाकंपिअमणाए  
सासणदेवयाए सोवन्नरुद्धोत्तरुवाओ कयाओ । जे अ उचिट्ठसित्थरुणा  
भूमोए पडिआ ते मुत्तिआहं मंपाईआई । अग्गमिहा य सिद्धरेसु तद्देव

दंसिआ । एअमचञ्चुअं सासुए ददृण निवेईअं सोमविप्पस्स सिद्धं च जहा  
 वच्छ सुलक्षणा पइव्वया य एसा वहुता पचाणोहिं एअं कुलहरं ति जणणीपे-  
 रिओ पच्छायावानलडज्झंतमाणसो गओ वहुयं वालेउं सोमभट्ठो । तीए पिट्ठओ  
 आगच्छन्ते दिअवरं निअवरं ददृण दिसाओ पलोईआओ । दिट्ठओ अग्गओ  
 मग्गकूवओ । तओ जिणवरं मणे अणुसरिऊण सुपत्तादाणं अणुमोअंतीए अप्पा  
 कूयंमि झंपाविओ । सुहज्जवसाणेण पाणे चइऊण ऊप्पन्ना कोहंडविमाणे  
 सोहम्मकप्पहिंहे चउहिं जोअणेहिं अंबीअदेवी नाम महद्धिआ देवी । विमाणना-  
 मेणं कोहंडी चि भत्तइ । सोमभट्ठेण वि तीसे महासईए कूये पडणं ददं अप्पा  
 तत्थेय झंपाविओ । सो अ मरिऊण तत्थेय जाओ देवो । आभिओगिअकम्मणा  
 सिद्धरूढं विउव्वित्ता तीए चेव वाहणं जाओ । अत्ते भणंति अंबिणी  
 रेवयसिहराओ अप्पाणं झंपावित्ता तप्पिट्ठओ सोमभट्ठो वि तद्देव मओ ।  
 सेसं तं चेव । सा य भगवई चउव्वुआ दाहिणहत्थेसु अंबलुंवि पासं च  
 धारेइ यामहत्थेसु पुण पुत्तं अंकुसं च धारेइ उत्तक्तकणपसवणं च वण-  
 मुव्वहइ सरीरे । सिरिनेमिनाहस्स सासणदेयत्ति नियसइ रेवइगिरिसिहरं ।  
 मउडकुंडलमुत्ताहलहाररयणकंकणनेउराइसव्यंगीणामरणरमणिज्जा पूरेइ सम्म-  
 दिट्ठीण मणोरहे निवारेइ विग्घसंधायं । तीए भंतमंडलाईणि आरोहित्ताणं  
 भविआणं दीसंति अणेगरूवाओ रिद्धिसिद्धिओ, न पइवंति भूअपिसायसा-  
 इणीविसमग्गहा, संपज्जंति पुत्तकलत्तमित्तघणवधरज्जसिरिओ त्ति ।

अंधिआमंता इमे ।

यययीअसकुलकुलजलहरिहयअकंनपेआइं ।

पणइणियापावसिओ अंबिअदेवीइ अह मंतो ॥ १ ॥

धुयभुवणदेवि संवुद्धिपासअंकुसतिलोअपंचसरा ।

णहसिद्धिकुलकलअज्झासिपमायापरपणामवयं ॥ २ ॥

यागुम्भयं तिलोअं पाससिणीहाउ तइअवघत्तस ।

कूहंडअंविआए नमु त्ति आराहणामंतो ॥ ३ ॥

एवं अत्ते वि अंबादेवीमंता अप्पपररक्ता वि सया सुरमणा जुग्गा मग्ग-  
 सेमाइओअरा य वइयो चिट्ठंति । तेअ तहा मंडलाणि अ इत्थ न भणिआणि  
 गंधवित्तरभएणं ति गुम्मुहाओ नायच्चाणि ।

एअं अंबिपदेवीकणं अविअप्पचित्तविस्तीणं ।

यापंतमुणंताणं पुज्जंति समीहिआ अत्था ॥ १ ॥

इति श्रीअंबिअदेवीकृतः ।

## APPENDIX VII.

### श्रीगिरिनास्कल्पः ।



चरधर्मकीर्तिविद्यानन्दमयो यत्र विनतदेवेन्द्रः ।  
 स्वस्तिश्रीनेमिरसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ १ ॥  
 नेमिजिनो यदुराजीमतीत्य राजीमतीत्यजनतो यम् ।  
 शिआप शिवायासौ गिरि० ॥ २ ॥  
 स्वामी छत्रशिलान्ते प्रव्रज्य यदुच्चशिरसि चक्राणः ।  
 ब्रह्मावलोकनमसौ गिरि० ॥ ३ ॥  
 यत्र सहस्राव्रवणे केवलमाप्यादिशक्तिर्धर्मम् ।  
 लक्षारामे सोऽयं गिरि० ॥ ४ ॥  
 निर्वृतिनितम्बिनीवरनितम्बसुखमाप यन्नितम्बस्थः ।  
 श्रीपदुकुलतिलकोऽयं गिरि० ॥ ५ ॥  
 बुद्धा कल्याणप्रथमिह कृष्णो रूप्यरूपमणिविम्बम् ।  
 चैत्यत्रयमकृताऽयं गिरि० ॥ ६ ॥  
 पविना हरिर्यदन्तर्विधाय विवरं व्यधाद्रजतचैत्यम् ।  
 काश्चनवलानकमयं गिरि० ॥ ७ ॥  
 तन्मध्ये रत्नमयीं प्रमाणवर्णान्वितां वकार हरिः ।  
 श्रीनेमेर्मूर्त्तिमसौ गिरि० ॥ ८ ॥  
 स्वकूनैतद्विम्बयुतं हरिद्विविम्बं सुराः समवसरणे ।  
 न्यदधन्त यदन्तरसौ गिरि० ॥ ९ ॥  
 शिखरोपरि यन्नाम्बाऽवलोकनशिरसि रङ्गमण्डपके ।  
 शम्भो बलानकेऽसौ गिरि० ॥ १० ॥  
 यत्र प्रद्युम्नपुरः सिद्धिविनायकसुरः प्रतीदारः ।  
 चिन्तितसिद्धिकरोऽसौ गिरि० ॥ ११ ॥  
 तत्प्रतिरूपं चैत्यं पूर्वाभिमुखं तु निर्वृतिस्थाने ।  
 यत्र हरिश्चमेऽसौ गिरि० ॥ १२ ॥  
 तीर्थेतिस्मरणाद् यत्र यादवाः सप्त कालमेवाद्याः ।  
 क्षेत्रपतामापुरसौ गिरि० ॥ १३ ॥

विभुमर्चति मेघरवो धलानकं गिरिविदारणश्चक्रे ।  
 यत्र चतुर्द्वारमसौ गिरि० ॥ १४ ॥  
 यत्र सहस्राग्रवणांतरस्ति रम्या सुवर्णचैल्यानाम् ।  
 चतुरधिकविंशतिरयं गिरि० ॥ १५ ॥  
 द्वाप्तसतिर्जिनानां लक्षारामेऽस्ति यत्र तु गुहायाम् ।  
 सचतुर्विंशतिक्रासौ गिरि० ॥ १६ ॥  
 वर्षसहस्रद्वितयं प्रावर्त्तत यत्र किल शिवास्तनोः ।  
 लेप्यमयी प्रतिमासौ गिरि० ॥ १७ ॥  
 लेपगमेऽन्वादेशात्प्रभुचैत्यं यत्र पश्चिमाभिमुखम् ।  
 रत्नोऽस्थापयतासौ गिरि० ॥ १८ ॥  
 काञ्चनवलानकान्तः समवसृतेस्तन्तुनेह विम्बमिदम् ।  
 रत्नेनानीतमसौ गिरि० ॥ १९ ॥  
 बाण्डनिपिडः सङ्गो नेमिनतौ यत्र मन्त्रगगनगतिम् ।  
 जयचन्द्रमादिशदसौ गिरि० ॥ २० ॥  
 तारां विजित्य बाण्डाग्निहृत्य देवानवन्द्यत्संघम् ।  
 जयचन्द्रो यत्रायं गिरि० ॥ २१ ॥  
 नृपपुरतः क्षपणेभ्यः कुमार्युदितगाथयाम्बयार्प्यत यः ।  
 श्रीसङ्घाय सदायं गिरि० ॥ २२ ॥  
 नित्यानुष्ठानान्तस्ततोऽनुसमयं समस्तसङ्गेन ।  
 यः पठ्यतेऽनिशमसौ गिरि० ॥ २३ ॥  
 दीक्षाज्ञानध्यानव्याख्यानशिवावलोकनस्थाने ।  
 प्रभुचैत्यपावितोऽसौ गिरि० ॥ २४ ॥  
 राजीमतीचन्द्रदरीगजेन्द्रपदकूण्डनागझर्यादौ ।  
 यः प्रभुमूर्त्तियुतोऽयं गिरि० ॥ २५ ॥  
 छत्राक्षरघण्टाञ्जनविन्दुशिवशिलादि यत्रहार्थस्ति ।  
 कल्याणकारणमयं गिरि० ॥ २६ ॥  
 याकुड्वमात्यसञ्जनदण्डेशाद्या अपि व्यधुर्यत्र ।  
 नेमिभवनोद्धृतिमसौ गिरि० ॥ २७ ॥  
 कल्याणत्रयचैत्यं तेजःपालो न्यवीविशन्मन्त्री ।  
 यन्मेखलागतमसौ गिरि० ॥ २८ ॥



शशुञ्जयसम्मैताष्टापदतीर्थानि वस्तुपालस्तु ।  
 यत्र न्यवेशयदसौ गिरि० ॥ २९ ॥  
 यः पट्विंशतिविंशतिषोडशदशकद्वियोजनाञ्चशतम् ।  
 अरपट्क उच्छिन्नोऽयं गिरि० ॥ ३० ॥  
 अद्यापि सावधाना विदधाना यत्र गीतनृत्यादि ।  
 देवाः श्रूयन्तेऽसौ गिरि० ॥ ३१ ॥  
 विद्याप्राप्तकोद्धृतपादलिप्तकृतोज्ज्वलपद्मपादेः ।  
 इति वर्णितो मयाऽसौ गिरिनारगिरीश्वरो जयति ॥ ३२ ॥  
 इति श्रीकर्मपोस्तुरिकृत श्रीगिरिनारकृत्य ।

## APPENDIX VIII

Inscription of the reign of Alapkhan in the temple of Sthambhans Pārsvanātha at Cambay.

ॐ अहं संवत् १३६६ वर्षे प्रतापाक्रान्तमृतलश्रीअलावदीनसुरत्राण-  
प्रतिशरीरश्रीअल्पखानविजयराज्ये श्रीस्तंभतीर्थे श्रीसुधर्मास्वामिसंताननभो-  
नभोमणिसुविहितचूडामणिप्रभुश्रीजिनेश्वरसरिपट्टालंकारप्रभुश्रीजिनप्रबोधसु-  
रिशिष्यचूडामणियुगप्रधानप्रभुश्रीजिनचंद्रसरिसुगुरूपदेशेन ऊकेशवंशीयसा-  
हजिनदेवसाहसहदेवकुलमंडनस्य श्रीजेसलमेरौ श्रीपार्श्वनाथविधिचैत्यकारित-  
श्रीसम्मेतशिखरप्रासादस्य साहजेसवस्य पुत्ररत्नेन श्रीस्तंभतीर्थे निर्मापितस-  
कलस्वपक्षपरपक्षस्वमत्कारिनानाविधमार्गणलोकदारिद्र्यमुद्रापहारिगुणरत्नाकर-  
स्य गुरुगुक्तरपुरप्रवेशकमहोत्सवेन संपादितश्रीशङ्खजयोज्जयंतमहातीर्थयात्रा-  
समुपाजितपुण्यप्राग्भारेण श्रीपत्तनसंस्थापितकोदण्डिकालंकारश्रीशांतिनाथवि-  
धिचैत्यालयश्रीआवकपौषधशालाकारापणोपचितप्रसूमरयशःसंभारेण भ्रातृ-  
साहराजुदेवसाहबोलियसाहजेहडसाहलपपतिसाहगुणघरपुत्ररत्नसाहजयसिं-  
हसाहजगधरसाहसलपणसाहरत्नसिंहप्रमुखपरिवारसारेण श्रीजिनशासनप्र-  
भावकेण सकलसाधर्मिकवत्सलेन साहजेसलसुआवकेण कोदण्डिकास्थापनपूर्वं  
श्रीआवकपौषधशालासहितः सकलविधिलक्ष्मीविलासालयः श्रीअजितस्वामि-  
देवविधिचैत्यालयः कारित आचन्द्रार्क यावन्नंदतात् ॥ शुभमस्तु । श्रीभूयात्  
श्रमणसंगस्य । श्रीः ।

## APPENDIX IX

Inscriptions on the Satrunjaya Hill pertaining Samarā's installation of the image of Ādiśvara.

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि सोमे श्रीमद्वैश्वंशे वेसटगोत्रीयसा०  
सलपणपुत्रसा०आजडनयसा०गोसलभार्यागुणमतीकुक्षिसंभवेन संघपति-  
आशाधरानुजेन सा०लुणसीहायजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन पुत्रसा०सहज-  
पालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसा०सांगणप्रमुखकुटुम्बसमुदायोपेतेन  
निजकुलदेवी ( सच्चि ) कामूर्तिः करिता । यावद्गोमनि चंद्राकौ यावन्मेरुर्न-  
हीतले । तावत् श्री ( सच्च ) का मूर्तिः”

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे”जातीयराणकश्रीमहीपाल-  
देवमूर्तिः”संघपतिश्रीदेसलेन कारिता श्रीयुगादिदेवचैत्यालये ।

संवत् १३७१ वर्षे माहसुदि १४ सोमे श्रीमद्वैश्वंशे वेसटगोत्रे सा०  
सलपणपुत्रसा०आजडनयसा०गोसलभार्यासा०गुणमतीकुक्षिसम्भूतेन संघ-  
पतिसा०आशाधरानुजेन सा०लुणसीहायजेन संघपतिसाधुश्रीदेसलेन सा०-  
सहजपालसा०साहणपालसा०सामंतसा०समरसीहसा०सांगणसा०सोमप्रभृ-  
तिकुटुम्बसमुदायोपेतेन वृद्धभ्रातृसंघपतिआशाधरमूर्तिः श्रेष्ठिमाढलपुत्रीसं-  
घ०रत्नश्रीमूर्तिसमन्विता कारिता । आशाधरः कल्पतरुब्रह्महोयमाशात्रिकं  
पूरित”..... । .... लंकृतबाहुयुगो युगादिदेवं प्रपतः प्रणौति ॥ चिरं नंदतात् ॥  
॥ शुभं भवतु ॥

संवत् १४१४ वर्षे वैशाखसु १० शुक्रा संघपतिदेसलसुतसा०समरस-  
मरश्रीयुग्मं सा०सालिगसा०सज्जनसिंहाभ्यां कारितं । प्रतिष्ठितं श्रीकृष्णसूरि-  
शिष्यैः श्रीदेवगुप्तसूरिभिः । शुभं भवतु ॥

## APPENDIX X

### पेथडरासः

यिणयवयणि धीनवडं देवि सामिणि वागेसरि  
हंसगमणि आकाशभमणि तिहूयणि परमेसरि ।  
घोरजिणिंदह नमीय चलण चउविहुश्रीसंधिहिं  
कवडजरु जकाधिराज समरीय मनरंगिहिं ॥ १ ॥  
कोडीयनपरनिवासिणी य वंदडं अंविकदेवि ।  
शासनदेवति मनि धरीय गुरुचलण नमेवि ॥ २ ॥  
रास रमेवउ जिणभुवणि तालमेल ठवि पाउ ।  
संघतलायन रोपीउ ए सभगिरि विभगिरि वेवि ॥ ३ ॥  
निसुणउ धामी एकमनि महीयलिमज्झि पहाण ।  
जास बोध निरचमतिलउ पेथ अगंजीयमाण ॥ ४ ॥  
पिण एक तस गुण संभलउ संघपति साहसधीर ।  
अकलीअ कलि जिम छेत्तरीअ गरूड गुरिहिर गंभीर ॥ ५ ॥  
पोरुआडकुलिमंडणउ वर्द्धमाणकुलिलीह ।  
चांडसीहकुलि अवतरीया पेथपमुह सुतसीह ॥ ६ ॥  
जिम कंचण कसवटीयए पामिउ बहुगुणरेह ।  
बंधवि पेथपरीपीयइ बहूअ कालि धरि एह ॥ ७ ॥  
बहूसीय पेथड पाटे बंधव बोलावइ  
नरसीहरतनह कारे मनि मंत्र चलावइ ।  
मणूयजन्म अतिदुलह अनइ श्रावयजम्म  
जीव लहइ बहुपुण्य जगि जिणवरधम्म ॥ ८ ॥  
घणकणरयणभंडार ते सवि अच्छइ ए असार ।  
संचइ मोहनबंध ते सच्चि जाणे गमार ॥ ९ ॥  
लाछितणउ जउ गरव करेई लीजइ राउल छल ह धरेई ।  
मणूयजनम हवं सफल करीजइ जीविपयौवनलाहउ लीजइ ॥ १० ॥  
अधिरलाछि किम धिर ह करीजइ जिणह धंम तस ऊपम दीजइ ।  
सेतुजि रिसहसामि बंदीजइ विविहप्रकारिइं प्रभु पूजीजइ ॥ ११ ॥

मिलि बंधवि कीधउ वयण प्रमाण एकचित्ति सवि समाण जाण ।  
साते बंधवि कीधउ विचार सविहुं काजि लिउ नरसीअ भार ॥ १२ ॥  
धम्मीय निमुणउ लोपमज्झि संघतणउ समाहउ भवीअणउ

आणुंअ दीजह भत्तिजत्ति भवीया लहइ लाहउ धणकणउ ।

पेलसि क्लीयइ रंगि रास हवं नवरस नवरंग नवीयपरे

सुणि सामहणी संघतणी जो करइ निरंतर घरेहिं घरे ॥ १३ ॥

जोइन देवालउं सामुहिउं तीहं माहि सुरेसर जिण ठवीय ।

देसदेसाउर वरनयर तिहिं लेवि कंकोत्री पाठवीय ॥ १४ ॥

पादणि पइसीय सामति तहिं कर्णनरेसर भेटीय वीनवीउ ।

तीरथजात्र जायवउं देव तहिं देसवटउ सपसाउ कीउ ॥ १५ ॥

तहिं वेणि लेउ पण आवीउ ए सयलसंघ तहिं हरसीय नीयमणि

नयर पसाइरउ कीधउ तक्खणि तहिं नाचइ कुतिगकुतिगीयां ।

घरि घरि बइसीय लोप मनावीय साजणसाहसरिस संम्हावी गामागर-

पुरपाटणह ॥ १६ ॥

दूसमसमइ अहि जिम तिरीयु तारणतरंड रिसह मनि घरीय फल

लीजइ जनमहतणउं ।

एकभावि नर जिणह धम्म परिरिहवरकलीय रमाउलीय ॥ १७ ॥

केवि कुतिग नर जोइं निरंतर भलां भलेरां अतिहिं बहिला ऋपभवर ।

फामिणि धामिणि धवल दिपंती गायंती गुण जिणवरह ।

अतिऊमाहु जात्र समाहउ करीयल कंनि सुणंतीहं य ॥ १८ ॥

ते णउरा रुडा तडथां ताडी नवानवेरां दीसइं मेहणमण सघण ।

ते घणाघणेरा समविसमेरा संखि न दीसइं असंखि पुण ॥ १९ ॥

देवालइ वालीय नयणि विसालीय दितीय ताली रंगि फिरंती हरिसभरे ।

तहिं नाचइं खेला बहुयत वेला बाला भोला लउडा रसि रमइं ॥ २० ॥

अतिरंगि पूरी दिता भमरी नवपरि नवरंगइ तिथसपरे ।

परममहोच्छय कीउ देवालइ फागुणपंचमि वीतसोयालइ प्रस्थानं कीयं

पवरदिणि ॥ २१ ॥

संघपति सोहउदेउ वीनवीई तीरथजात्र जाइवउं गोसामीय ।

सेलहुत सीपामणह बहुय परणउ पणवि रहावीय ।

बहथमल्ल लेउ पत्तनि आवीय संघ देवालइन रोपीउ ए ॥ २२ ॥

संघपूज तिहां कीधउं अवारी भोयण सयल लोय सविं पूरीय  
महोच्छव कारवीय ॥ २३ ॥

लढण ॥ कागुणदसमि दिणंद चलीय संघ दहदिसितणउ ।

हसमस धसमस जोइ मिलीय लोक पण अतिघणउ ए ॥ २४ ॥

वहतमल्ल अगेवाण तुरीय ठाठ जोइ पापरीय ।

पुलेहिं पलाण जोइ इकि देवालइ फिरीय ॥ २५ ॥

पहिलउं दीधी लागि जोइन देवालां संचरइ ए ।

असंड पीयाणे जाइ पहिलउं पीळूयाणइ रहीष ॥ २६ ॥

चलीय संघसंजुत्त पहुतउ वेगि डाभलनयरे ।

तींह दीन्हा घास भास रास क्लीयामणां ए ।

देवालइ ऊछाहु चैत्रप्रवाडि सोहामणी ए ॥ २७ ॥

वडराउन वपाणि करणराउ मनि सलहीइ ए ।

देद दयापरजाम वील्हणवंस वपाणीइ ए ॥ २८ ॥

पहुतउ देवालइ तोइ हरसीय संघ प्रसंसीइ ए ।

पेथडसमउ न कोइ मारगि मन तुम्हि वीहिसिउ ए ॥ २९ ॥

दीन्ह पीयाणउं तोइ मयगलपरि तुम्हि संचरीय ।

वेगि पट्टता तोइ नयरमाहि ते तरवरीय ॥ ३० ॥

आंगणि दीन्हा घास देवालां पापलि फिरीय ।

भरिया पणमउ पास जिणह भूयण क्लीयामणउं ।

कीधीय चैत्रप्रवाडि देवदेवांगणि पेयणउं ए ॥ ३१ ॥

संघह कीउं यत्सल्ल धम्मी नागलपुरतणे ए ।

चलीय पीयाणइ जाम मारगि माग न जाणीइ ए ॥ ३२ ॥

सहू गालइ गीयं ताम संघपति पेथ वपाणीइ ए ।

मयणि निहालइ लोक पृण्धवंत धनवंत तहिं ॥ ३३ ॥

पूजीया जिणभूयणाइं भविषा मणोरह चित्ति घरे ।

कीउं पीयाणउं भावि अग्वलीयछीतीयहारि तहिं ॥ ३४ ॥

पेथावाडइ जाइ मेटीय मंडणदेव तहिं ।

लाधउं मानप्रमाण सीकिरि आवइं गुणपचरो ॥ ३५ ॥

भयु मनि करिवउ तुम्हि मारगि जाउ तम्हि ।

गिया ते जंवू जाम संघह पार न पामीय ए ।

भेदीय झलु ताम पणवि पीयाणउं धामीयहं ॥ ३६ ॥  
 भडकूण आवास गोहिलसंडउ धरीय मनि ।  
 बहुगुणवंत सुजाण राण पहतउ तेण खणि ॥ ३७ ॥  
 संघह दीन्ही धीर वलीय संघपति एकमनि ।  
 राणपुरे संपत्त संघ कनालइन रहइ ए ॥ ३८ ॥  
 चलीय सरीस उपराण वसहसंड संघपति भणइ ए ।  
 मइं मन मेलिह निरास प्राण राणहूं मन हरेसो ॥ ३९ ॥  
 चढउ संघपतिपासि रंजीय क्लीयायत हरिसे ।  
 गुणगुण्ड मुवराउ लोलीयाणपुरसइं घणीय ॥ ४० ॥  
 धरउ धर्मनउ ठाउ भवीय भाविं तीणइ वह भणीय ।  
 दीन्ह पीयाणनीयाण उपरिं पीपलाइभणीय ।  
 चउरा दीन्ह विहाण हूंगरा देपीय मनि क्लीय ॥ ४१ ॥

दीठउ हूंगर हरिथियां चडीय सरोवरपाले ।  
 संघपति दई वधामणी हरिपीऊ ए हरिपीऊ ए हरिपीउ नयणि निहाले ॥ ४२ ॥  
 कुंकुमि च्छडउ दिवारीउ ए तहिं पाथरीया पाट ।  
 पाउलि चउक पूरावीउ ए सपरिपरे सपरिपरे सपरि पढइ बहुभट ॥ ४३ ॥  
 पढइं भाट संघपति निसुणि पेथड पुण्यपवित्त  
 चंडसीहधरि अचतरीउ गुरुदेवे गुरुदेवे गुरुदेवे सुय सत्त ।  
 धापीउ हूंगर पण तिलउ फूलपगर ते चंग  
 पाउल नाचइ रंगभर गायंती ए गायंती ए गायंती मनह सरंग ॥ ४४ ॥  
 कापड कंचण दिन्ह तहिं बहुगुण पूरी आस ।  
 संघपति करइ वधामणउं चलीऊ ए चलीऊ ए चलीउ पालीयताणइ वास ॥ ४५ ॥  
 गंगाजल जिम निर्मलउं ललतासर सुपवित्त ।  
 सीधपेव तीरथतिलउ तिससपरं तिससपरं तिससपरं संपत्त ॥ ४६ ॥  
 मरुदेवि सामिणि पय नमीय संतिनाह सुरराउ ।  
 पालितसूरिमतिष्ठिउ ए सोलमू ए सोलमू ए सोलमउ जिणराउ ॥ ४७ ॥  
 हूंगरसिरि जे पाहरीय कवडिजक्खपडिहारो ।  
 संघ जि सांनिध सो करइ पहिलं ए पहिलं ए पहिलं पास जुहारे ॥ ४८ ॥  
 अणुपेम सर देपेवि तहिं पट्टा पालिदुयारि ।  
 सरगारोहण दिठ तहिं अहिणय ए अहिणय ए अहिणय ईणं संसारे ॥ ४९ ॥

अष्टापद अवलोइई ए इंद्रमंडप अतिचंग ।

नंदीसर अहिणव तहिं देपीऊ ए देपीऊ ए देपीउ मनिहिं सुरंग ॥ ५० ॥

मंडपि पहुतउ पवित्र तहिं लोदींगणां करेउ ।

पणमीय सामीय रिसहजिण तिन्नि प्रदक्षिण तिन्निप्रदक्षिण तिन्नि प्रदक्षिण  
देउ ॥ ५१ ॥

दीठल्ला पदमहकमल निम्मल युगादि जिण पयठला सामी पदमजिण विम-  
लगिरे ।

भवीयच्छुणंत सामी लागल्ला तम्ह वइं नांमिं नमो य नमो नमो सेवुजसिहरो ५२

वायवडामणउं अतिहिं सोहामणुं रिसहभूअणि क्लीआम्णं ए

भवीयजन कलस कंचणमय मंडियले ए दुक्ख जलंजलि देयंति कुसुमंजले ॥

धुणंति दीणरीण जीण उत्तरंति जललवणनम्हण करंति सामी सुगंधजले ॥

कपूरिपूरि पूरीय तिणि कीय लि मृगनाभिमंडण त्रिजगगुरु

शुणानिलउ देवाधिदेव जोउ वेलचउ सेवत्रीपाडल पहल कुसुम परमल विपुल  
पूजहे । वायवडामणं ॥

भवीयमणि बहआणंदि आरती उत्तारइ जिणिंद पढइं भट्ट मंगलिक रिसह-  
सामि ।

तिलक भलउ लि कीय ले कंठि वरमाला ठविय ले चाउलि सिरि बद्धावीय लि ।  
धन धामी चडामणउं ॥

भवीयजण रंजिय मनि दियंति ते दीण दुधीय जण मगगण दाणु

नचंति नवनवी रमणि वीणवंसमृदंगमणि तिवल्लि तालनिनाद सुणि पूरीय  
भवण । वाइवडामणुं ॥

आय कि रिसहेसर तम्ह परमेसर सामीसाल चिरकालि सुखिवर ।

तम्हची पाय ए कमलममर भविक जन जपउ जगनाथ तुं जगतपुरो ॥ वाय-  
वडाम ॥

अग्वंडकोडाकोडि सिद्धि ले तीथयर गोत्र बंधीय ले पूजीयु हरिसह मनि मन  
मिलीउ ।

आयस मगीय जब चलीय पूरीय संघ मल्लीय मनि निचंतीय पेथटकंठि टो-  
डर ढलीउ । वायवडामणं ॥

आयस मगीय पेथ ज चलीउ ढलीय टोडर संघपति मोकलावए

सयलसंधो पहत पालीताणए धरि धरि साहमीवच्छल कारए ।



वावीय विस तिहि सयलसिद्धिक्षेत्रे जन्मफल लेउ जो बहुधणवंतइं ह्वाचटी  
चलीय पीयाणए ।

वहउ संघातिपति लोक वखाणए सेलटीया संघ पहत तहि चलयउ अखंड  
पीआणए ।

जाइ अमरेलीयपीयाणए पहतउ वेगि तहि पण विक्रीयाणए विसमगिरि लं-  
वीयउ पूरि मनि आसह ॥

तेजलपुरि अंगणि दीन्हा वास उग्रसेनमंदिरु दीठ पगार अयनरकचि भणइं  
गढवि खइंगार ।

गरुअउ दीसए पोःपगार नरपम नरसीअ नरआधार ॥

मंडलकि मंडिउ वास तहि विसमए सुरठ वडदेस भोल लोक तहि निवसयए ।  
गिरि गुरुउ गिरनार स पसिद्धउ ता लहि दमोदरो देय प्रसिद्धउ वहि सोवन-  
रेख नदी जलपूरीय ।

फालमेघो क्षेत्रपाल गिरिपाहरी मंज्रियाहड वेचि पाज करावीय धवलीय घर  
परय तीण करावीय ।

विसम इंगर गुरुउ गिरनारो चटीय नेमिकुमरि लीयउ संजमभारो  
दिनि चउपनि घरनाण ऊपजइए जगतिगुरु जिणिह चर तसु सिहरे सिज्जण ॥  
सीधु सामी सामलउ तसु सिहरि संघ पहतउ ऊलठ आंगिहिं अतिघणउ देवीउ  
राजलकन ! तहि नाचिनए ए सहिलडो ए लला गीय गिरिनारे  
राजलिवर कलिआमणउ सामलडउ संसारो । तहि नाचिनए०॥

अंग पत्तालि सुगयंदमइ ए जल पहरीय धोति प्रवीत ।

इंद्रमहोत्सव आपरंभी तहि वपठ लि बहुधणवंत । तहि नाचिनए सहि० ॥

इंद्रमालउच्छाह करी जो वेचीय विभव नीयाणि ।

सफलमणोरह पूरीय संघपति चटीयलि इन्द्रयिमानि ॥ तहि नाचिनए० ॥

चमरधारि सरतारसवंगी गावंती बहु आसीस ।

सामलसापि किरि संघपति नंदउ वहत घरीस ॥ तहि नाचिनए० ॥

गयंदमइ ए नीरि कलस जलभरीय लि कपूरिहिं भंगी महापूज अहिभीम ।

नय कलीय लि आरती उतारउ मंगलिक संघपति ईय ॥ तहि ना० ॥

अंकिणि आस मणोरह पूरी अवलोईय जगन्नाथ

सांवपजन जुहारीय बलीयउ पेथ जन्म सुकीपाथ ॥ तहि नासहलडो ए ग्लो-  
या गइ गिरिनारि ॥

सोमनाथचंदपह वंदीप देखीउ बलीउ जाम

दिउ पीयाणं हिय मन रहिसउ मंडलिक भणइ ईम ॥ तहि ना० ॥

दिउ पीयाणं वेगि तहिं हरीयाला सूटा रे सुरवाहे संपत्त मनीला सूटारे ॥

इति श्रीभागवतवंशमौक्तिकव्या० पेशवगस्तः समाप्तः ॥

---